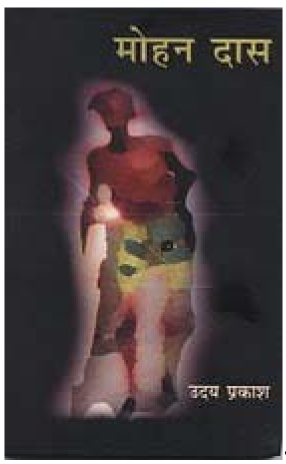
मोहनदास (दीर्घकथा):*लेखक: उदय प्रकाश_(मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद विनीत उत्पल)*

**उदय प्रकाश** (1952-) ‘‘मोहनदास’’- हिन्दी दीर्घ कथाक लेखक उदय प्रकाशक जन्म 1 जनवरी 1952 ई. कैं भारतक मध्य प्रदेश राज्यक शहडोल संभागक अनूपपुर जिलाक गाम सीतापुरमे भेलन्हि। हुनकर हिन्दी पद्य-संग्रह सभ छन्हि: सुनो कारीगर, अबूतर कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा हुआ करती है। हिनकर हिन्दी गद्य-कथा सभ छन्हि: तिरिछ, और अन्त में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरी वाली लडकी, दत्तात्रेय के दुख, अरेबा परेबा, मैंगोसिल, मोहनदास। मोहनदास- दीर्घकथा लेल हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०१० (हिन्दी लेल) देल गेल अछि।

अनुवादक:

**विनीत उत्पल (1978-)**

आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगांव आ तारापुरमे। तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालयसँ गणितमे बीएससी (आनर्स)। गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भS सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच कोर्सक छात्र। आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्ली मे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडा मे वरिष्ट उपसंपादक। **"हम पुछैत छी" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित**।



मोहनदास पोथीक आवरण चित्र मार्कूस फोरनेलक चित्रक उदय प्रकाश द्वारा रूपान्तरण।

(उदय प्रकाश जीकेँ "विदेह" विनीत उत्पलकेँ "मोहनदास"क मैथिली अनुवादक अनुमति देबाक लेल धन्यवाद दैत अछि। मोहनदासक मैथिली अनुवाद पहिल बेर विदेह पाक्षिक ई-पत्रिकाक 74म (15 जनवरी 2०11) अंकसँ शुरु भऽ 78म अंक (15 मार्च 2०11) धरि धारावाहिक रूपमे पाँच खेपमे पूर्ण रूपसँ ई-प्रकाशित भेल आ आब ओतए http://www.videha.co.in/ पर आर्काइवमे देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेलमे मुफ्त पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। - गजेन्द्र ठाकुर- सम्पादक: विदेह।)

मोहनदास : ***उदय प्रकाश***

(मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद विनीत उत्पल द्वारा)

डरक रंग केहन होइत अछि? भटरंग, खकस्याह, खुनाहनि सन , कारी-स्याह आकि फेर छाउर सन? एहन छाउर जकरामे आगि एखन धरि मिझाएल नै गेल अछि!... आ फेर कोनो एहन रंग, जकरा पाछाँसँ एकबैग कियो सून-मसान सन ताकए लागैत अछि आ ओकर फाटल ठाममे सँ कनेके दूरीपर कोनो कानैक गधमिसान थकमकाएल सन लखा दैत अछि।

समुद्र आ धारक कोनो धारसँ अनचोक्के बालुपर तरपि कऽ पटकल माछक आँखि कहियो अहाँ देखने छिऐ? दम तोड़ैत, खुजल-फाटल आँखि...?...ओहिनो तरहक रंग...!

फिल्मक नीकसँ नीक हीरो सेहो अप्पन आँखिक डिम्हा, तकर चारू कातक उजरका स्थल आ मुँहपर कतबैयो कोशिश केलाक बादो ओ रंग नै आनि सकैत अछि जे असल जिनगीमे कोनो बड़ डराएल जिबैत मनुखक आँखि आ मुँहपर देखा पड़ैत अछि। एहन मनुखक, जे कत्तौ बेरिया काल धरि काज कऽ थाकि-हारि कऽ घर घुरि रहल अछि। ओकर हाथमे एकटा झोरा अछि, ओइमे नेनाक लेल कम्मे दामबला टॉफी आ खिलौना छै आ कनियाँक खोंखीक गोली सेहो , मुदा एक्के कोनक आगू ओ दंगा करऽबला सभक बीचमे कोनो सुन-मसान ठामपर अनचोक्के लसकि जाइत अछि आ दुर्भाग्यसँ ओ ओइ संप्रदाय, नस्ल आ संगोरक नै अछि जे भीड़ ओकरा घेरने छै। तखने ओइ काल अप्पन हत्याक एकाध क्षण पहिने ओइ मरैबलाक आँखि, मुँह आ समूच्चे देहमे वएह रंग देखाइ पडैत छै, जेकर चर्चा हम केने छी आ जकरा ओइ दिन हम मोहनदासमे देखने रही।

"शिंडलर्स लिस्ट' आ फेर ओहने कतेक सिलेमामे अहाँ ओइ जर्मन रेलगाड़ीक दृश्य देखने होएब, जकरा कतौ दूर ठाम पठाएल जा रहल छै। ओइ रेलगाड़ीक डिब्बाक खिड़कीसँ बाहर ताकैत नेना, मौगी आ बुढबाक मुँह अहाँक मोनमे होएत! आ एखन किछु दिन पहिने गुजरातक कतेक शहर-मोहल्लाक घरक छत, खिड़की आ छातमे सँ बाहर ताकैत मुँह।

डरक रंग किछु-किछु ओहने रंगक होइत अछि। मोहनदास आगू ठाढ़ अछि आ अप्पन थरथराइत, दुब्बर अबाजमे कहैत अछि,-"कका, कोनो तरहेँ हमरा बचा लिअ! हम अहाँक आगू हाथ जोड़ैत छी!...नेना-बेदरा सभ अछि हमरा! बूढ़ बाप मरि रहल अछि टी.बी.सँ!... अहाँ कही तँ हम अहाँक संग चलि कऽ कोर्टमे हलफनामा दै लेल तैयार छी जे हम मोहनदास नै छी। हम ऐ नामक कोनो

मनुखकेँ नै चिन्हैत छी! कियो आर होएत मोहनदास! खाली कोनो तरहेँ हमरा बचा लिअ!'

मोहनदाससँ जखन अहाँक भेंट होएत तँ पहिने तँ अहाँकेँ ओकरापर दया आएत मुदा अहाँ डरा जाएब। किएक तँ ई काल डरैएबला काल अछि आ ई आर डरैबला भेल जा रहल अछि।

मोहनदास आ हुनकर परिवारक कएकटा पीढ़ीकेँ हम जानैत छी। गाम-घरमे तँ एहने होइत अछि। हुनका देखि कऽ अहाँ सोचियो ने सकैत छी जे ओ ऐ जिलाक सरकारी एम.जी. डिग्री कालेजसँ ग्रेजुएट छथि। फर्स्ट डिवीजनक संग! ...आ विश्वविद्यालयक टॉपर सूचीमे, आइसँ दस बरख पहिने हुनकर नाम दोसर नंबर पर छल। हुनकर आजुक देह-दशा हुनकर ओइ कालकेँ लऽ कऽ कोनो गप नै करैत अछि। एकटा फाटल, बेदरंग भेल, ठामे-ठाम चिप्पी लागल, कोनो काल नील रंगक डेनिमक फुलपैंट, सस्ता टेरिकाटक आधा बाँहिक, दहिना कन्हा लग उघड़ल अंगा। एकरामे कोनो काल चौखाना बनल रहैत, जेकरासँ ओ डरीड मेटा रहल अछि, जेकर रंग कहियो हल्लुक रहल होएत। आ एकटा रबड़क सस्ता-बरसाती पनही, जकरा माटि, धूरा, दुख, पानि, काल आ रौद एत्ते चाटि गेल अछि जे आब ओ कखनो चमड़ा तँ कखनो माटिक बनल देखा पड़ैत अछि।

मोहनदासक उमेर अखन पैंतीस-सैंतीस बर्खक होएत, मुदा देखबामे ओ हमरे बराबर आकि हमरासँ बेसी लागैत अछि। एक तरहेँ हकासल आ दौड़-भाग करैत ओकरा हम सदिखन देखलहुँ। गाममे कत्तौ बैसि कऽ गप करैत, ताश खेलाइत, हँसी-ठहक्का दैत आ टीवी देखैत नै देखलहुँ। कियो कतबो लचार आ

डराएल वा जल्दीमे अछि; ई ओकरा कत्तौ ठाढ नै हुअए दैत अछि। मोहनदासकेँ लऽ कऽ लोक-बेद कहैत अछि जे ओ सदिखन कोनो-नै-कोनो काज पकडिये कऽ राखैत अछि, किएक तँ ओकरा पानि पीबाक लेल सभ दिन एकटा नबका इनार कोडऽ पड़ैत छै आ सोहारी खेबाक लेल नित्तः नवका फसिल जनमाबऽ पड़ैत छै। ओकरा परिवारमे रोटी-पानिक लेल ओकर बाट जोहैबला एक गोटा नै पाँच गोटा छै। पाँचटा पेट आ पाँचटा मुँह।

मोहनदासक बाप काबा दास, जकरा पछिला आठ बरखसँ टी.बी. छै। ओकर माए पुतलीबाइ, जकर आँखि कोनो मंगनीक नेत्र शिविरमे मोतियाबिंद आपरेशन भेलाक बाद आन्हर भऽ गेल छै आ चारू दिस अन्हारे-अन्हार लखा दै छै। ओकर कनियाँ कस्तूरी बाइ, जे किछु नै, अप्पन वरक छाह छिऐ। कस्तूरी बाइ मोहनदासक काजमे संग दैत छथिन आ घरक चूल्हा-चौका ओरियाबैत छथिन। गामक लोक कहैत अछि जे आइ धरि कहियो दुनूकेँ लड़ैत- झगड़ा करैत नै देखने छी। लागैत अछि ओ विपैत आ आफैत होइत अछि, जे स्त्री-पुरुखक संबंधक नीवकेँ कमजोर करैत अछि।

बचल दूटा प्राणीमे एकटा अछि देवदास आ दोसर अछि शारदा। मोहनदास आ कस्तूरीक दुइटा संतान। उमेर आठ आ छह बरख। देवदास गामक प्राथमिक पाठशालामे पढैत अछि आ स्कूलक बाद गामसँ जाइबला सड़कपर खुजल "दुर्गा ऑटो वर्क्स' मे गाड़ीमे हवा भरैए, पंचर साटैए आ स्कूटर-मोटर साइकिलक छोट-मोट भङठी करबामे हेल्परक काज करैए। ऐ काजक लेल ओकरा मासमे सए टका भेटैत छै। तइमे सँ कहि सकैत छी जे मोहनदासक बेटा अप्पन पढ़बाक संग अप्पन दालि-भातक इंतजाम अप्पन मेहनतिसँ कऽ रहल अछि। तइपर सँ ओ अप्पन पएरपर ठाढ़ अछि। पाठशालाक मास्टर साहेबक कहब

अछि जे चारिम क्लासमे देवदास पढबामे सभसँ नीक रहए। मुदा जखन ई गप ओकर पिता मोहनदासकँ बतौलन्हि तँ ओकर आँखि कत्तौ टंगि गेलै। ओकरा जेना अकाशी लागि गेलै। ओकरा मुँह परक डरीड थरथराइत छै। आँखिक तेजी मिझाए लागैत छै। जेना कोनो गह्वरसँ ओकर कंठक अवाज बहराइत अछि, "हमहूँ तँ बी.ए. फर्स्ट क्लास छी। दिन-राति घोटैंत रही...! की भेल?"

एकर बाद मोहनदासक आँखि चमकि जाइत अछि आ ओ पपडी पडल ठोरसँ हँसैत कहैत अछि, "आइ काल्हि हम कमप्यूटर सिखैत छी। बस स्टैंडपर जे "स्टार कमप्यूटर सेंटर' अछि, ओतए हम जाइत छी। इमारती समान आ हार्डवेयरक दोकान चलबैबला मोहम्मद इमरानक बेटा शकील ऐ कमप्यूटर सेंटरक मालिक अछि आ ओ कहैत अछि, "कका, टाइपिंग, कंपोजिंग आ प्रिंट निकालैबला काज बुझि गेलहुँ तँ छह सए टकासँ बेसी देब।' मोहनदास कहैत अछि जे, "टाइपिंगमे ऐ मास हम तीसक स्पीड निकालि लेलहुँ। छोट-मोट काज भेट जाइत अछि मुदा एखन बहुत रास गलतियो भऽ जाइत अछि आ बहुत रास काल ओइ गलतीकेँ ठीक करैमे लागि जाइत अछि।'

मुदा ई सभटा गप बहुत काल पहिलुके अछि। मोहनदासकेँ भारी विपैत पड़ल छै आ ओ बेर-बेर कहैत अछि-

"हमर नाम मोहनदास नै अछि।... हम अदालतमे हलफनामा दै लेल तैयार छी। जेकरा बनैक छै ओ बनि जाए मोहनदास। कोनो तरहेँ अहाँ सभ हमरा बचा लिअ!... हम अहाँ सभक कऽल जोड़ैत छी!'

मोहनदासक दिक की अछि? ई बताबैक पहिने ओकर परिवारक पाँचम प्राणी माने मोहनदासक घरक छह बरखक शारदाक गप कऽ लेल जाए। छह बरखक शारदा गामक सरकारी प्राथमिक पाठशालामे दोसर कक्षामे पढ़ैत अछि आ

स्कूलक बाद ओ अढाइ किलोमीटर दूर, दू पोखरि पार बसल गाम बिछिया टोला चलि जाइत अछि, जतएसँ ओ माँझ रातिकेँ करीब नौ-दस बजे घर घुसैत अछि। बिछिया टोलामे ओ बिसनाथ प्रसादक एक बरखक बेटाकेँ सम्हारैत अछि आ ओकर घरक काज-धाज हाथे-पाथे करैत अछि।

बिछिया गामक पैघ किसान आ जीवन बीमा निगममे बाबूगिरी करैबला नगेंद्रनाथक कलेक्टरीसँ लऽ कऽ मंत्री धरि पहुँच आ धाख छै। दूइ बेर ग्राम पंचायतक सरपंच आ एक बेर जिला जनपदक उपाध्यक्ष रहल अछि। बिसनाथ प्रसाद, जिनकर एक बरखक बेटाकेँ शारदा सम्हारैत छन्हि, ऐ नगेन्द्रनाथक पाँच मे सँ एक बेटा छथिन्ह। हुनकर असली नाम विश्वनाथ प्रसाद अछि मुदा गामक लोक हुनका बिसनाथ कहि कऽ बजाबैत अछि आ पीठ पाछाँ कहैत अछि, "असूल करैत अछि बिसनाथ। गजबक बिखधारी। ककरो फूकि मारि दिअए तँ बूझू जे टें...। बाप नागनाथ तँ बेटा सांपनाथ...। ओ अहाँकेँ देखि कऽ मुस्किया रहल अछि आ गुडक रसमे लपेटि कऽ कहि रहल अछि तँ अहाँ साकांक्ष भऽ जाऊ। डसबाक पूरा तैयारी अछि।' बिसनाथक लग एकटा चीज नै अछि, ओ अछि ईमान। कखनो शराब पी लेलाक बाद ओ अपने मुँहसँ कहैत अछि, "एकक टोपी दोसराक मुँहमे टांगैबला हेराफेरीमे जे आनंद छै भइया, तकर सोझाँ अनकर कनियाँकेँ जांघक नीचाँ दाबैबला मजा बड़ड छोट चीज छै...! हा...हा...हा...!' ओकर उठब-बैसब सेहो गामक आ एम्हर-ओम्हरक तेहन लोक सभक संग अछि, जेकरा लऽ कऽ कहियो कोनो नीक गप नै सुनल गेल।

बिसनाथ ऊँच जातिक अछि मुदा मोहनदास नीच जातिक कबीरपंथी अछि। ओकर बिरादरीक कतेक लोक सभ आइयो सूप-चटाइ, दरी-कंबल बुनैत अछि। मोहनदास हमरे गाम नै, आसपासक कतेको गाममे अप्पन बिरादरीक पहिलुक

लड़का हएत जे बी.ए. पास केने छल। आ ओहो फर्स्ट डिवीजनसँ आ मेरिटमे दोसर नंबरक संग।

(एतए थम्हि जाऊ। सत्त बताऊ जे कतौ अहाँकेँ ई तँ नै लागैए जे हम अहाँकेँ कोनो प्रतीकवादी कूटकथा सुनाबै लेल बैसि गेलहुँ? एहि कथाक मुख्यपात्रक नाम मोहनदास, ओकर कनियाँक नाम कस्तूरीबाइ, माएक नाम पुतलीबाइ आ बेटाक नाम देवदास...?

कस्तूरी बाइ नामसँ कस्तूरबाक मोन पडैत अछि, मोहनदास तँ साफे अछि। मुदा अहाँ महात्मा गांधीक "आत्मकथा' माने "दि स्टोरी ऑफ माइ एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ' पढबै तँ पता लागत जे हुनकर पिता करमचंदक दोसर नाम काबा सेहो रहन्हि। आ माएक नाम सेहो पुतली बाइ... फेर हुनकर बेटा देवदासक खिस्सा केकरा नै बुझल छै? जे अहाँ मोहनदासक बगे-बानी आ देह-दशा देखबै तँ अहाँकेँ फेर ओ इतिहास घेर लेत। अंतर बस एतबे जे ओ एहन मोहनदास सन अछि जेकरा पोरबंदर, काठियावाड़, राजकोट, विलायत, दक्खिन अफ्रीका आ बजाज-बिड़ला भवनमे नै छत्तीसगढ़ आ विंध्यप्रदेशक बोन-झाँकुड, खोह-तरहरि, खेत-पथारमे रौद-भूख, रोग-घाम आ अन्याय-अपमानक आँचमे पालल-पोसल गेल छै।... आरो सभ सभटा ओहने...

...मुदा ऐठाम हम, कथाक बीचेमे ठाढ भऽ ई कहि दैत छी, जे बगे-बानीक मिलान एकटा संजोगे अछि। जखन हम अहाँक लेल ई कथा लिखैले बैसलहुँ, ओइ काल हमरा अपने नै बुझल छल जे हमर गामक मोहनदास आ ओकर परिवारक लोकक लिस्टमे इतिहासक कोनो एहन अनुगूंज सेहो नुकाएल छै।

विश्वास करू, एहन किछु नै अछि। ई कोनो प्रतीक कथा, रूपक आकि कूटाख्यान नै अछि। ई तँ एकटा साफे सरल खिस्सा छी। मुदा सत कही तँ ई कोनो खिस्सा नै अछि। किएक तँ हम सदिखन काल जना खिस्साक आडिमे, अहाँकेँ फेरसँ अप्पन काल आ समाजक एकटा असल जिनगीक ब्यौरा दै लेल बैसल छी। मोहनदास वास्तवमे एकटा जीवैत असल मनुख अछि आ ओकर जिनगी एखन बड़ संकटमे छै। हँ, ई गप अवश्य अछि जे हम सत गपमे सदिखन जना ऐबेर फेरसँ कम-बेस हेरफेर केने छी। मुदा ई हेरफेर तेहने अछि, जेना कियो हाथीकेँ नुकेबा लेल ओकर बड़का देहक ऊपर डेढ़ हाथक गमछा ओछा दैत अछि।

अहाँकेँ मानऽ पडत जे सत गप एकटा हाथी होइत अछि आ जखन कोनो कवि आ कहानीकार ओकर ऊपर गमछा ओछा कऽ ओकरा नुका कऽ रोमि कऽ सभक आगू ठाढ़ करैत अछि, तँ तखन ओकर अपनक जिनगीक सभटा पुल टूटि जाइत छै आ ओकर सभटा नाह जरि कऽ छाउर भऽ जाइत छै।

...तँ... मोहनदास एकटा असल लोक अछि। एकर पुष्टि अहाँ चाही तँ हमर गामेक लोकसँ नै ऐ देशक कोनो गामक कोनो लोकसँ पूछि कऽ कऽ सकैत छी।)

मोहनदास जखन बी.ए. पास केलक तँ बाप काबा आ माय पुतलीबाइकेँ आशा रहै जे आब ओकरा तुरत्ते नोकरी भेट जएतै। मोहनदासक बियाह चौदह-पंद्रह बरखमे कटकोना गामक विरंजुक सुन्नर सन बेटी कस्तूरी बाइक संग भऽ गेल छल। कस्तूरी बड काज करैवाली छल। सासुर आबैक संग ओ घरक सभटा काजे टा नै सम्हारलक मुदा एम्हर-ओम्हर छोट-मोट मजूरी कऽ किछु पाइयो

कमाबै लागल, जइसँ मोहनदासक पढबाक खर्चा निकलि जाए। सभक आँखि मोहनदासेपर लागल रहै। बी.ए. करैबला ओ जाइत-समाजक पहिल बच्चा रहए। सेहो फस्ट डिवीजन। परीक्षाक रिजल्ट जखैन बहराएल तखन ओकर कएकटा फोटो सेहो अखबारमे छपल। कोचिंग चलाबैबला कंपनी सेहो ओकर फोटो छापलक।

मोहनदास रोजगार कार्यालयमे अप्पन नाम लिखौलक आ "रोजगार समाचार' मे छपैबला विज्ञापनकँ देख कऽ जत्तऽ तत्तऽ दर्खास्त पठाबए लागल। लिखित परीक्षामे सभसँ ऊपर रहै छल मुदा जखन इंटरव्यू होइत रहै तँ ओकरा अनुत्तीर्ण कऽ देल जाइत छल। ओ देखैत छल जे ओकर ठाम आठम-दसम पास, थर्ड-सेकेंड डिवीजनसँ बी.ए. करैबला लड़काकँ नोकरी भऽ जाइत अछि। ओइमे सभक लग कोनो-ने-कोनो पैरवी रहैत छलै। सभ कोनो-ने-कोनो अफसरक, नेताक आ पैघ लोकक जमाय, बेटा, भातिज, भागिन आ लल्लो-चप्पो करैबला आकि कर्मचारी रहैत छल। मोहनदास सभ बेर असफल भऽ कऽ घुरैत छल मुदा ओ अप्पन आस नै छोड़लक। ओ बुझैत छल जे हिन्दुस्तानमे भ्रष्टाचार बड़ड रास छै मुदा तखनो सैकड़ामे दस-बीसटा लोककँ अप्पन मेरिट आ योग्यताक दमपर नोकरी भेट जाइत छै। आस्ते-आस्ते मोहनदासकँ ईहो बुझऽमे आबि गेलै जे कतेक रास नौकरी लेल बोली लागै छै। ओकर बाप काबा दास लग जे लाख-पचास हजार रहितियै तँ दू-तीनटा एहन नौकरी हाथ जे ओकर हाथसँ छुटलै तइमे ओ घूस दऽ बहाल भऽ सकै छल।

काल बितैत गेलै। ओकर उमेर सरकारी नोकरीक आयुरेखा पार करऽ लगलै। घरक लोक सभ असोथकित हुअए लागल। तैयो कस्तूरी बोल-भरोस दैत छल। कोनो गप नै, सरकारी नौकरी नै भेटत तँ प्राइवेटमे देखि ले। नै तँ कोनो धंधा कऽ ले। आइ-काल्हि पढ़ब-लिखब बेरोजगारक लेल सरकारक कएकटा योजना अछि। कुक्कट पालन कऽ ले। अंडाक धंधामे कतेक रास फाएदा अछि। मोमबत्ती, अगरबत्ती आ आटा-दलिया बनाबैक कारखाना खोलि ले। सरकार बैंकसँ लोन दैत छै। एक बेर साक्षरताक काज आएल छल। शिक्षाकर्मीक अस्थायी काज ओकरा भेट सकै छलै। मुदा बादमे पता चललै जे जाइ

अफसरक नीचाँ ई काज छल ओ अप्पन जाति आकि एक-दू राजनीतिक पार्टीक लोककेँ ओइमे भरि रहल अछि। मोहनदास नीचाँक जातिक छल आ कोनो पार्टीक सदस्यो नै छल।

मोहनदास बड सोझ, संकोची आ स्वाभिमानी छल। ऐ काजक लेल जतेक दौग-भाग करऽ पडितै, जतेक अफसर-हाकिमक हाथ-पएर जोड़ै पडितै , एतए-ओतए जे खुआबऽ पियाबऽ पडितै ओ ओकरा सक्कमे नै रहै। ओइ संगे नौकरीक जकाँ एतए सेहो लड़ाइ-झगड़ा सेहो छलै। एहन नै छल जे मोहनदास प्रतिस्पर्धासँ डराइ छल, एहन रहितै तँ ओ बी.ए. क परीक्षाक मेरिटमे कोना अबितै? मुदा ओ जल्दीये बुझि गेल जे स्कूल-कालेजक बाहरक असल जिनगीक खेल एकटा एहन मैदान अछि, जतए ओ गोल बना सकैत अछि जकरा लग दोसराकेँ लंगड़ी मारबाक तागति छै। आ ई तागति पैरवी-पैगाम, जोड़-तोड़, घूस, चिन्हल-जानल, धुरफंदी एहन कतेक अवैध आ अनैतिक बौस्तुसँ बनैत अछि, जकरामे सँ एक्कोटा मोहनदासक बूताक गप नै छल।

मोहनदासे टा नै, ओकर कनियाँ कस्तूरी, बाप काबा आ माय पुतलीबाइ सभक भीतर ओकर सरकारी-अफसर-हाकिम बनैक आस मिझा गेल, आब तँ लऽ दऽ कऽ सएह लागैत छल जे एहन किछु भेट जाए, जकरासँ बेरोजगारी आ असगर रहनाइसँ मोहनदासक पिंड छुटि जाए आ घरक दालि-रोटी कोनो तरहेँ चलए लागै। अही बीच काबा दासकेँ टी.बी. भऽ गेलै। ओ खाँसै लागल आ कफक संग खून बोकरऽ लागल। ठीक एकर बाद एकटा खैराती नेत्र चिकित्सा शिविरमे पुतलीबाइक आँखिक इजोत चलि गेलै। कस्तूरीपर घरक काज-धाज आ बाहरक मजूरीक संग सास-ससुरक सेवा-सुश्रुषाक भार सेहो आबि गेलै। सेहो एहन

कालमे जखन ओकरा सुस्ताइक जरूरी छलै, किएकि ओ गद्धआरि छल। गर्भमे देवदास आबि गेल छलै।

मोहनदासकेँ देखिये कऽ लागैत छल जे ओ कतेक दिनसँ बेमार अछि। गाममे ओ कम्मे लोकसँ भेंट करैत छल। गाम-घरक लोकक आगू आबैसँ ओ नुकायल रहैत छल। सभटा लोक लग एक्केटा प्रश्न होइ छलै- , "की कऽ रहल छी? कोनो जोगाड़ भेल?'

गामक लग कठिना नामक एकटा धार बहैत छल। मोहनदास गर्मीमे गामक दोसर लोक जकाँ धारक बालूमे खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज रोपैक काज केलक। कनियाँ कस्तूरी टा नै, ओकर बाप-माय काबा आ पुतलीबाइ सेहो ओतए जाइत छल आ पलिया बना कऽ धारक पानिसँ छोट लत्तीकेँ पानि पटा कऽ खेती करैत छल। दुपहरिया आ रातिमे बेरा-बेरी पहरा दैत छल। बरख भरिमे आठ-दस हजार टाका अही तरहे भऽ जाइत छलै। मुदा कतेक रास बिन कालक पानि पड़ैसँ धारक पानि बढ़ि जाइत छल। मोहनदास संगे एहन दू बेर भेल छलै। कनी-कनी कऽ बड़का अवसाद आ निराशा ओकरा भीतर बैसए लगलै। जइ दिन कस्तूरी देवदासकेँ जन्म देलक, ओइ राति मोहनदास अप्पन घर नै घुरल। ओ कठिना धारक बालुपर निचाट पड़ल आकाशक सून-सपाटकेँ ताकि रहल छल। संजोगेसँ ओइ राति सेहो अमावशक राति छल, जै राति देवदासक जन्म भेल। प्रसवक काल एक बेर तँ एहन भऽ गेलै जे कस्तूरी मरत की जीत। नालक गड़मे फँसि गेलासँ बच्चा अधबीचेमे रहि गेल छल आ प्रसव करबै लेल आएल बिलसपुरहिन घबरा कऽ कष्टमे बेहोश कस्तूरीकेँ मुइल घोषित कऽ देलक।

आन्हर भऽ गेल माय पुतलीबाइ आ टीबीसँ खोँखी करैत बाप काबा दास, दुनू अप्पन बेटा मोहनदासकेँ ताकैत रहल, मुदा ओ कतए भेटतियै? ओ तँ ओइ राति कठिना धारक रेतमे, अमावशक आकाशकेँ कोनो मुर्दा जना घूरि रहल छल, अप्पन भीतर जीवनक कोनो चिह्न ताकि रहल छल। हुनकर देहक नसमे ओइ राति खून नै, अमावशक कारि अन्हार बहि रहल छल। आ हुनकर सुन्न भेल

मगजमे नीन नै, ओ डराएल सपना उमड़ि-घुमड़ि रहल छल, जे कोनो भ्रष्ट आ पतित भऽ गेल व्यवस्थाक कोखिसँ जन्म लैत अछि।

मोहनदास ओइ राति धारक कातमे बेहोश छल, तइसँ ओकरा अप्पन बाप काबा आ माय पुतलीबाइक टेर सुना नै पडलै आ नै कस्तूरीक कानब; आ नहिये भिनसरे चारि बजेक आसपास अप्पन नवजात बेटा देवदासक कानब।

भोरक सुरुज ऊपर आबि गेल छल, जखैन रौदक आँच गामसँ एक किलोमीटर दूर कठिना धारक रेतमे सुतल मोहनदासक नीन आ मूर्च्छा तोड़लक।

मोहनदास कतेक काल धरि धीपल रेतपर ओहिना पड़ल रहल। ओकर देह पाटल छलै आ स्मृति मिज्झड छलै। ओकरा ई बुझबामे कनेक काल लगलै जे ओ अप्पन घरक ओसार आ आंगनमे नै, कठिनाक ओइ रेतपर पड़ल अछि, जतए किछु दिवस पहिने ओ मतीरा, ककड़ी, खरबूज आ कुम्हर-टमाटर रोपने छल आ कालक पानिसँ उगडुम धारक पानि सभटा गीरि गेल छलै।

मोहनदास जखन घर घुरल तँ ओतए गामक कतेक रास लोक ठाढ़ छल। स्त्रीगण सेहो छलै। लागैत छल जे सभ कियो ओकरे लऽ कऽ गप करैत छल।

किएकि ओकरा देखिये कऽ सभ चुप भऽ गेल आ एकाएकी सभ कियो ओतएसँ चलि गेल।

"पूत खाली दयऊक किरपासँ बचल। गामक लोक तँ तुलसी-गंगाजल लऽ कऽ आबि गेल छल।'' माय पुतलीबाइ आँचरसँ नोर पोछैत कहलखिन। "जा कऽ देखि लियौ। देउता सन झलकैए।'

मोहनदास ओइ सोइरी घर गेल, जाइमे कस्तूरी एखने किछु काल पहिने मृत्युक मुँहसँ बहार भऽ अप्पन नेनाक संग खाटपर सुतल छल। बोरसीमे गोइठाक संग नीम-अजवाइन जड़ैत छल आ कोठरीमे तकर धुआँ भड़ल छल। कस्तूरी थाकल आँखिसँ मोहनदासकेँ देखलक। ओकरा देखबेमे एतेक असहायता आ ग्लानि छलै जे मोहनदासक करेज धकसँ रहि गेलै। एकटा आर पेट आजुक दिन घरमे जन्म लऽ लेलक। आब कमसँ कम छह-आठ मास धरि सभ दिन आध सेर गायक दूधक इंतजाम करैए पड़त। कस्तूरीक लेल मास भरि देसी सोंठ, गुड आ घी आ हरदिक संग भात। छठ्ठी, बरहों आ पसनी (अन्नप्राशन) मे लोकक खुआबैक खर्चा सेहो। मुदा तखने मोहनदासक नजरि कस्तूरीक बगलमे सुतल बच्चापर पड़ल। मोट-सोंट, गोल-मटोल बच्चा निश्चिन्त भऽ माएसँ सटि कऽ सुतल छल। बड सुन्नर आ अबोध। सतमे कोनो देवताक बच्चा लागैत छल। मोहनदासक भीतर पहिलुक बेर एक बापक संवेदना जन्म लेलक। हुनकर आँखि बच्चापर सँ नै हटैत रहए। तखने बाहर ओसारेसँ काबाक चिकरैक अबाज सुनाइ पड़ल। "सीताराम डाकिया आएल छल। कोनो कारड देने छल।'

मोहनदास देखलक, एहि जिलाक सभसँ पैघ कोलियरीसँ नोकरीक लेल इंटरव्यू लेटर आएल अछि। मोहनदास लग पछिला कतेक माससँ एहन तरहक कार्ड नै

अबैत छल। तँ की रातिमे कठिना धारक रेतमे जे किछु ओ सोचैत छल, ओकरे कोनो भनक आकाशक कोनो ग्रह-नक्षत्रकेँ लागि गेल छलै? कोनो देवता हुनकर दुख आ आफत जानि गेल? की कस्तूरी तँ नै जे आइ भिनसरे बेटा जन्म देलक, वएह सतमे कोनो देवदूत अछि जे अप्पन जन्मक संग अप्पन परिवारक लेल एकटा नबका जीवनक केवाड़ खोलि रहल अछि।

ओरियंटल कोल माइंसकेँ पठाओल गेल आ रोजगार कार्यालयक मार्फत ओकरा भेटल इंटरव्यू कार्डमे मोहनदासकेँ एकटा नबका भविष्यक भोर झिलमिलाइत लखा दैत छल। कतेक काल बाद ओकर हृदएमे फेरसँ आशाक एकटा हरियरका नरम दूबि उगै लागल। ओइ राति मोहनदास नीक जना नै सुति सकल। अप्पन जीवनक जै गाछकेँ ओ एकटा ठुठ्ठ बुझऽ लागल छल, ओइमे कतौसँ फेर नबका पात बहरा रहल छल।

ओरियंटल कोल माइंसमे ओइ दिन ओ साक्षात्कारक कालसँ एक घंटा पहिने पहुँचि गेल छल। अप्पन कुलदेवी मलइहा माय आ सतगुरु कबीरदासजीक नाम जपैत ओकर भीतर एहि बेर एकटा अलगे आत्मविश्वास छल। कोनो तरहेँ नोकरी भेटैक जोश। एक घंटाक लिखित परीक्षा छल, फेर एक घंटाक अंतरालक बाद शारीरिक परीक्षा। मोहनदास भरि मोनसँ आ जान लगा कऽ जुमि गेल। एक घंटाबला लिखित परीक्षा ओ आध घंटासँ कम्मे कालमे पूरा कऽ लेलक। प्रश्न बड़ आसान छलै आ ओकर जवाब तँ ओतए नीचामे लिखल छलै। बस सही उत्तरपर सहीक चेन्ह लगाबैक छलै। एकर बाद 1500 मीटरक दौड़, भागि कऽ चलब, मैदानक पाँच चक्कर लगाबैक, आँखिक परीक्षण, रंगकेँ चिन्हबाक आदिक शारीरिक परीक्षामे दू घंटा लगलै। मोहनदास एतए ककरोसँ उन्नैस नै छल।

साँझ चारि बजे कोलियरीक भरतीक दफ्तर दरवाजासँ डेढ़ सए प्रतियोगीमे सँ चुनल गेल पाँचटा नाम पुकारल गेल, ओइमे पहिलुक नाम मोहनदासक छल।

मोहनदासक हृदए धरधड़ कऽ रहल छलै। एकटा एहन गप भऽ रहल छल। आब कतेक जल्दी ओकर जीवनक अनिश्चितताक अंत होइबला छलै। सभ मास ओकरा दरमाहा भेटतै। घरमे सभ दिन चूल्हि जरतै। आ तरकारी बनतै। बाप आ मायक इलाज हेतै। देवदासक लालन-पालन आ पढ़ाइ नीकसँ हेतै। कस्तूरीकेँ मजूरीमे दोसरा जकाँ नै खटऽ पड़तै।

कोलियरीक बाबू मोहनदाससँ हुनकर सभटा सर्टिफिकेट आ मार्कशीट जमा करेलक मुदा बी.ए. मार्कशीट देखैत ओ कहलक, "आंय हो, एखन धरि कोना नै अहाँ नोकरीक जोगाड़ कऽ सकलिऐ? एकरामे तँ अहाँकेँ थोड़-बेस लमरा-पहुँच कैलासँ कोनो नीक सन नोकरी भेट जैतियै।''

"ज्वाइनिंग कहियासँ होएत?'' जखन मोहनदास पुछलक तँ जवाबमे बाबू कहलखिन, "ज्वाइनिंगे बुझू। ऐ हफ्तामे भीतरे-भीतर कागजी काज पूरा भऽ जाएत आ अगिला हफ्ता धरि नियुक्ति पत्र अहाँक पतापर पठा देल जाएत।...बेसीसँ बेसी पंद्रह दिन लगा कऽ चलू।''

मोहनदासक घरमे एकटा नब युग आबि गेलै। पोस्ट आफिसक खातामे जे दू हजार टका छल तइसँ मोहनदास नबका मसहरी, एक सेर देशी घी, चित्री, सोंठ, किछु नब बरतन आ कस्तूरी आ देवदासक लेल किछु कपड़ा किनलक। अपना लेल सेहो ओ नील रंगक जींसक पैंट, टेरिकाटक चौखाना बनल अंगा, तीस

टकाक पर्स आ पाँच-पाँच टकाक दू टा रूमाल किनलक। परसूकेँ कहि कऽ ओ रोज भिनसरे आध सेर दूधक सेहो व्यवस्था कऽ देलक। गाममे ई गप हुअए लागल जे मोहनदासकेँ आखिरीमे ओरियंटल कोल माइंसमे नीक सन नोकरी भेट गेल अछि। गाममे जे सभ ओकरासँ सोझ मुँह गप नै करैत छल, सेहो ओकरासँ मेल-जोल बढ़ाएब शुरू कऽ देलक। जे सभ ओकर मेहनति आ पढ़ैक हँसी करैत छल, सेहो नीकसँ बाजब शुरू कऽ देलक, "ई तँ हेबाके छलै। एहन डिग्री आ पढ़ाइक बाद मोहनदास कहिया धरि खाली बैसितियै।'' किछु लोक सभ ईहो टिप्पणी केलक, "असलमे मोहनदास जै बंसहर-पलिहा जातिक अछि, ओकरा आब रिजर्वेशनमे राखि देल गेल छै। नौकरी ओकरा कोटासँ भेटल छै किएकि ऐ जातिक कोनो दोसर लड़का बी.ए. छेबे नै करै।''

ओइ हफ्ता मोहनदासक घरमे एक बेर खीर सेहो बनल आ एक बेर आलू-मटरक मसल्हा सेहो। माय पुतलीबाइ अप्पन आँखिक अन्हारकेँ बिसरि गेली आ आंगुरसँ छूबि-हथोडिया दऽ सूपमे पसरल दालि आ चाउरसँ कांकोड़ बिछै लागल। तोड़ीक तेल आ नून-अमचुरसँ लाल मिरचाइक चटनी सेहो बनौलक। बाप काबादास गणेश छाप मंगलूरी बीड़ीक पूरा कट्टा आ नबका जहाज छाप सलाइक डिबिया किनलक, जकर काठीकेँ रगड़पट्टीमे आस्तेसँ घिसलासँ फर्रसँ आगि जरि जाइत छल। घरक बाहर ओसारपर बैसल, सुट्टा मारैत काबा कतेक राति भोकारि पारि कऽ कबीरदासक भजन गओलक आ ओकरा नै तँ एक्को बेर खोँखी भेलै आ नहिये खूनक संग कफ बाहर निकललै।

एक दिन भोरे-भोर आन्हर पुतलीबाइ आंगनमे खुशीसँ घूमि-घूमि कऽ नाचैत जोर-जोरसँ गाबऽ लागल, "टोरबा-पुतऊ की कोठरिया माझे अलोपी मइना खोंथा डारिस हबै। भाग आइस, कलेस गइस...!!! किसमत जागिस...'

जै हो मलइहा माइ...! तोराले गोर लागी सतगुरू महराज...!!! जै हो...जै हो!'

सभ कियो देखलक जे मोहनदासक आन्हर मायक आँखि अलोपी मैनाक जे खोता कस्तूरी-देवदासक कोठरीमे देखने छल, ओ सत छल।

मोहनदास दोसर हफ्तासँ कोलियरीक चिट्ठीक बाट जोहै लागल। मुदा ओइ हफ्ता डाकिया नै आएल। एकर बादक हफ्ता सेहो बीति गेल। बीस-बाइस दिन भऽ गेल छलै। पता चललै जे कांसाकोड़ाक कंचलमल शर्माक बेटा संतोष कुमार शर्माकेँ चिट्ठी पहिने भेट गेलै आ ओ नोकरी सेहो ज्वाइन कऽ लेलक। मोहनदास बेचैन भऽ गेल। ओ राज्य परिवहनक बस पकड़लक आ कोलियरी पहुँचल। भर्ती दफ्तरमे ओ बाबू कहलक जे एखन लेटर पठाओल जा रहल अछि। पोस्ट तीन टा छल, चुनल गेल छल पाँच टा लोक। मुदा जगह नै बढ़ाओल गेल तँ दू कैंडिडेट कटत। मोहनदास डरि गेल। ओकर झाइ पडल चेहरा देखि कऽ बाबू भरोस देलकै, उम्मीद अछि जे दू टा पोस्ट बढ़ि जाएत आ नै बढ़त तँ मोहनदासक नाम नै कटत किएकि लिस्टमे हुनकर नाम पहिल अछि।

मोहनदास घुरि गेल। बाबू ओकरा एकाध मास इंतजार करै लेल कहलक आ पूरा भरोसा देलक। मुदा मोहनदासक भीतर किछु मिझा गेलै। ओकरा चिन्ता हुअए लगलै जे परसू मास बितैत दिनक आधा सेरक दूधक पूरा हिसाब देबऽ पडतै। जोशमे एतए-ओतए किछु उधारी सेहो भऽ गेल छलै। आब सभटा कोना चुकाओल जाएत? कस्तूरी ओकरा ढाढस राखऽ लेल कहलक। माय पुतलीबाइ मलइहा माइसँ गछलक। हँ, काबा दास किछु दिनसँ चुप रहऽ लागल। रातिमे भजन गाओल ओ छोड़ि देलक आ ओकरा खाँखी आबऽ लगलै।

डेढ़ मासक बाद मोहनदास फेर ओरियंटल कोल माइंस गेल। कतेक प्रतीक्षा केलाक बाद बाबू ओकरा भरती दफ्तरक भीतर आबऽ देलक। ओ ओकरा आर इंतजार करैले कहलक। मुदा ऐ बेर ओ इंतजार लेल कोनो अंतिम समए नै बतेलक। ऐ बेर ओकर आवाजमे पहिने सन अपनापा सेहो नै छलै।

मोहनदास चलैसँ पहिने जखन जोर दऽ कऽ पुछलक तँ अमनसँ ओ कहलक, "ओना पता करबाक जरूरत की अछि? चिट्ठी भेटत तँ अपने आप पता भऽ जाएत।' फेर ओ कहलक, "असलमे ओइ दिन कैंडीडेटकेँ सलेक्ट करै लेल बिहारसँ कोल इंडियाक जे अफसर आएल छल, ओ एकटा पोस्टपर अप्पन जमायकेँ फिट कऽ देलक। सभटा ऊपर बलाक खेल छी।' मोहनदासक आंखिक आगू अन्हार पसरऽ लगलै।

अगिला मास मोहनदास फेर पता करै लेल गेल। कतौसँ किछु भऽ जाए। भोर दस बजेसँ लऽ कऽ दुपहरियाक साढ़े तीन बजे धरि ओकरा दफ्तरक बाहर बैसल रहऽ पड़लै। चपरासीक चिरौती-बिनतीक बाद जखन ओकरा भीतर आबऽ देल गेलै तँ पता चललै जे पहिलुक बाबू छुट्टीपर गेल अछि आ ओकरा ठाम जे दोसर मोट-सन बाबू ओकर काज देखि रहल अछि, ओकरा ओइ फाइलक कोनो जानकारी नै छै। मोहनदासकेँ अप्पन मार्कशीट आ सभटा ओरिजनल प्रमाणपत्र केँ लऽ कऽ चिन्ता हुअए लगलै। जखन ओ एकरा दिया पुछलक तँ नबका मोटका बाबू कहलकै जे अहाँक सर्टिफिकेटक हम की करब? नौकरी नै देल जाइत तँ रजिस्ट्रीसँ आपस घुरा देब, नै तँ अगिला बेर आबि कऽ अप्पन संगे लऽ जाएब।

मोहनदास फेर घुरि गेल। ओकरा मोनक सभसँ भीतरी कोन सेहो नीकसँ बुझि गेल छल जे ओकर जिनगीक ठूठ गिरहसँ जै नबका कोंपरक कल्लै आश्चर्यसँ बहराइबला छलै, आकाशक देवता ओकर बिपतिकेँ जानि, ओकरा लेल दयाक जे बून खसेने छल, तकरा दुर्भाग्य आ भ्रष्टाचारक लू झरका देलक।

आब कोनो आस कतौसँ नै बाँचल अछि। जौँ ओकरा संग कोनो नकदी जमा-पूँजी होइत तँ कोनो दलालसँ भेट कऽ टका ऊपर धरि पहुँचा कऽ ओ ऐ नोकरी केँ लऽ लितए। मोहनदासक हालत गामक धनीक लोक सभसँ पहिने बुझि गेल आ पहिने जकाँ ओ फेर ओकर पढ़ाइ आ प्रतिभाक हँसी करऽ लागै गेल। ओइ दिन मोहनदास अपमानक कड़ू घूँट पीब कऽ रहि गेल, जाइ दिन पंडित छत्रधारी तिवारीक बेटा विजय तिवारी, जे ओकरा संगे कालेजमे पढ़ैत छल आ थर्ड डिवीजनसँ बड़ मुश्किलसँ बी.ए. पास भऽ सकल छल मुदा अप्पन ससुरक तिकड़म आ पैरवीसँ पुलिसमे सब-इंस्पेक्टर भऽ गेल छल, ओकरापर गरैज कऽ बाजल आ कहलक, "मोहना, परसुए हम सरकारी योजनामे दस टा महीस किनने छी। डेयरी खोलि रहल छी। जौं ठीक बुझी तँ महीससक सानी-भुस्सा, गोठुल्लाक काज कस्तूरी भऊजीक संग सम्हारि लिअ। सभ मास पहिलुक तारीखकेँ दरमाहा तँ भेटबे करत, इंदिरा आवास योजनामे हम अहाँकेँ मकान पक्का सेहो करबा देब। भऊजीक मोन लागि जाएत हम्मर गोसारेमे।'

"सोचि कऽ बताबैत छी।' मोहनदास जबाव देलक आ अप्पन भीतर उठैत अपमानक आगिकेँ मुँह घुमा कऽ नुका लेलक। विजय तिवारीक मुँहसँ कस्तूरीक नाम सुनि कऽ ओकरा भीतर कतौ अप्पन असहायता आ निर्बलताक अहसास गहींर भऽ गेलै आ एकटा डर सेहो दिमागक कोनो-कोनामे आबि गेलै। जल्दिये किछु करए पडतै, नै तँ ओकर परिवार टूटि कऽ छिड़िया जाएत। कोनो एहन काज, जे ओकरा वशमे छै। जकरा लेल ककरो मदति आ तिकड़मक जरूरत नै

छै। कस्तूरीक सुन्नर चेहरा आ विजय तिवारीक शातिर आँखि बेर-बेर ओकरा आगू घुमि जाइत छल।

ओइ काल ओ सोचि लेलखिन जे ओ अप्पन प्रमाणपत्र, अंक-सूची आ दोसर कागचक पता करबा लेल ओरियंटल कोल माइंस नै जाएत, किएकि ओइ कागचक टुकड़ाक मूल्य कतौ किछु नै रहि गेल छलै। जइ आधारपर नोकरी भेटैत छल आ सरकारी योजनाक लाभ उठाओल जाइत छल, ओ आधार ओकरा सन लोक लग नै छलै।

मोहनदास ओइ राति खेनाइ खेलाक बाद घरमे नै सुतल। कस्तूरीसँ भोरमे घुरैक गप कहि कऽ कन्हापर कोदारि राखि आ रोपा टांगि कऽ ओ कठिना धार दिस चलि गेल आ भरि राति कोनो बताह प्रेत सन मतीरा, खरबूज, कुम्हर, तरबूज, टमाटर, भट्टा, ककड़ी लगाबैक लेल पलिया बनाबैमे लागल रहल। भोर साढ़े चारि बजेक आसपास, जखन उत्तरबरिया कात ध्रुवतारा अप्पन पूर्ण आभामे दोसर ताराक एक्का-एक्की मिझैलाक बाद चमकि रहल छल, मोहनदास अप्पन माथ आ छातीक पसेनाकेँ पोछि आ कनी-कनी बुलैत कठिनाक धारमे ठाढ़ भऽ गेल।

अंजुलिमे पानि भरि ओ अप्पन माथपर छींटा मारलक आ दुनू हाथ जोड़ि कऽ बाझल गड़सँ कहलक, "बस अहाँ टा आँखि नै मोरब कठिना माय। तोहरा मलइहा मायक किरिया। हमर बेटा देवदासक किरिया। हमर पसेनाक उपजिसँ अप्पन पेटक जठर आगि नहि बुझाएब कठिना माय...! नै तँ...दयऊ कसम, बीच असाढ़ तोहर धारमे बाल-बच्चा संग कूदि कऽ तोहर पेट हम भरि देब...।'

मोहनदास जखन सतगुरु कबीरक नाम जपैत कठिना धारसँ बाहर आबि रहल छल, तखैन ओकर आँखिसँ बहैत नोर कठिना धारक पानिमे ढबकि कऽ बहि रहल छल, जतए छोट-छोट कोतरी माँछ ओकर नूनकेँ चीखै लेल एक-दोसरासँ उपरौंझ कऽ रहल छल।

जखन मोहनदास घर पहुँचल तँ ओ देखलक जे कस्तूरी पूरा आंगैनकेँ गोबरसँ नीपि कऽ राखने छल, माय पुतलीबाइ सूपपर मतीरा, कद्दू, खरबूजक बिया पसारि कऽ अप्पन आंगुरसँ लजबिज्जीकेँ बीछ रहल छै, बाप काबादास परछीक कोनमे बाँसक कमची निकालैमे लागल छै आ मांझ आंगनमे ओकर डेढ़ बरखक बेटा देवदास खुरपीसँ घासकेँ छिलैक बुतरूबला खेल खेलाइमे मगन छै।

ओकर बुलबाक आहट सुनि कऽ पुतलीबाइ अप्पन मूडीकेँ ऊपर केलक आ किछु नै लखा दैबला आँखिसँ अप्पन बेटाक आँखि मिला कऽ मुस्काइत कहलक, "जानैत छीहीं मोहना, आइ अलोपी मैनाक खोतामे मादा मैना दुइ टा बच्चाकेँ जन्म देलक।'

पुतली बाइ बेसी खुश हेतियै जौं लखा दैतियै जे ओकर गप सुनि ओकर बेटा मोहनदासक चेहरापर खुशी कोन तरहेँ दिपदिपा रहल छै।

ओइ दिन-रातिमे बियारीक बाद मोहनदास कस्तूरी आ देवदासकेँ सेहो अपना संग कठिना धार लऽ गेल। कस्तूरी अप्पन डाँड़क खोंइछ-ओटनीमे कतेक रास बीया राखने छल आ कान्हपर देवदासकेँ बैसैने छल। मोहनदासक कान्हपर रांपी, कोदारि आ बगइक डोरी छल।

देवदास कनी कालमे धारक कातक ठाढ़ हवाक झोंकसँ भेटैबला सुखमे डूमि कऽ गहींर नीनमे सूति गेल छल। कस्तूरी आ मोहनदास बीया उगाबैक पलियामे गोबरक खाद दऽ कऽ अलगे-अलग फल आ तरकारीक पलहा बनाबैमे लागल रहल। दुइ घंटामे काज भऽ गेल। कस्तूरी जखन बासन-घैलासँ कठिनासँ पानि आनि कऽ बीयाकेँ पलियामे पटा रहल छल तँ आकाशमे टिमटिमाइत रहल ताराक इजोतमे मोहनदास ओकर सुंदरताकेँ देखि रहल छल। आकाशक नक्षत्रसँ झरैत सलेटी चानीक मद्धिम आभामे कस्तूरीक पिरसाम देह मलइहा मायक मढ़ियाक बाहर राखल ओइ पुरनका पाथरक मूर्ति जेहन देखा दऽ रहल छल, जे बन्हेरू पोखरिकेँ कोडै काल निकलल छल आ जेकरा आनि कऽ लोक सभ ओतए राखि देने छल। देह, डांड़, बांहि, छाती, जांघक ठीक ओहिने कटाव आ ओहने सुंदरता, जना कोनो कारीगर छेनी-हथौरी लऽ कऽ मन लगा कऽ बरखमे हुनका रकम-रकम गढ़ने छल।

अधासँ बेसी राति बीत गेल छल। टिटहरी आ पनकुकरीक शोर कखनो-काल सुना जाइत छल। कठिना धारक भारी हवाक भारीपनमे कस्तूरीक देहसँ उठएबला पसेनाक गंध मोहनदासकेँ चारू दिससँ घेर लेलक। ई स्त्री ओकरासँ ब्याह करै काल कोन सपना देखने हेती आ ओकरा की भेटल? भोरसँ लऽ कऽ राति धरि, सभ दिन बिना नागाक, सभ सुख-दुख, हारी-बेमारी, भूख-प्यासमे ओ ओकरा संग ठाढ़ छल। मोहनदासक मनमे कस्तूरीक लेल बड़ सहानुभूति आ आत्मीयता आएल। ओ ओकरा एकटकसँ ताकि रहल छल। कस्तूरी बासनकेँ बालुपर टिकौलक आ ठाढ़ भऽ कऽ अप्पन जूड़ा बान्हऽ लागल। मोहनदास उठि कऽ ओकरा लग आएल। कस्तूरी चुप छल। "ऐ कस्तूरी, कबड्डी खेलब?' मोहनदास मुस्काइत कहलक, "हू...तू...तू...!'

ओ कस्तूरीक बाँहिकेँ पकड़ि लेने छल आ ओकर बगली आ पेटमे गुदगुदी करऽ लागल छल। कस्तूरी ओकरासँ छूटऽ लेल छटपटा रहल छल, "ईह...ईह...! देवदास जागि गेल...! की करैत छी? छोड़ि... दिअ...हमरा छोड़ू ने!...छोड़ू...! ' कस्तूरी देखलक जे मोहनदास ओकरा छोडैबला नै अछि तँ ओ ओकरा धक्का दऽ देलक आ घुरि कऽ कठिना धार दिस भागि गेल। ओ कोनो उल्लसित स्वतंत्र हिरण जना तरपान मारि नक्षत्रक धुँआइत सिलेटीक फरीच्छमे नीचाँ दूर धरि पसरल धारक रेतपर दौगि रहल छल।

"आ...आ...आ...! हमरा छुबौ....तँ जानियह....! आ...आ....!' ओकर आवाज सभ पल दूर भेल जाइत छल आ ओ प्रति पल छाह बनैत अन्हारमे बिलायल जा रहल छल।

"हू...तु...तू...तू...तू...तु...तू...तू...! ' कहैत मोहनदास खूब जोरसँ ओकरा दिस दौगल।

कस्तूरी आओर दम लगौलक। मोहनदास सभ पल ओकरा लग आबि रहल छल। ओ आर जोर लगेलक आ कठिना धारक काते-कात, पानिमे छप-छप करैत पूरा जी जानसँ भागैत चलि गेल। "आ...आ...! छूबौ हमरा...तँ हम मानब!' ओकर दम फुलऽ लगलै। ओ हाँफै लागल छल। मोहनदासक "हू...तु...तू...तू...' सभ क्षण ओकर कान लग आबि रहल छलै। कस्तूरी बुझै छल जे ओ आब मोहनदासकेँ आर छका नै सकत, तकर बादो ओ आखिरी जोर लगौलक। मुदा तखैन धरि एक्के तरपानमे मोहनदास ओकरा पकड़ि लेलक। दुनू कठिनाक धारमे छपाकसँ खसि गेल। "छोड़ू...! ऐ...छोड़ू!' ओ झगड़ा कऽ रहल छल आ मोहनदासक ऊपर पानि उपछि रहल छल मुदा मोहनदास ओकरा छोड़बाक बदला ओकरासँ आर सटल जा रहल छल।

धारक भारी हवामे दुनूक साँस एक-दोसरामे पैसि रहल छल। ओ जेहन तरहे ओकर देहमे अप्पन आंगुरसँ गुदगुदी कऽ रहल छल, ओइसँ कस्तूरीक गरसँ निर्बन्ध किलकारी आ हँसी बहरा रहल छलै। ओकर छद्म प्रतिरोध शिथिल भऽ रहल छलै आ ओ सेहो मोहनदासकेँ दूर धकेलैबला दिखावाक संगे ओकर देहसँ सटल जा रहल छल। तहिना जना लोहाक कोनो टुकड़ा कोनो चुंबकसँ सटै छै।

मोहनदास कठिनाक पानिमे ओकरा खसा देलक आ ऊपर ससरि कऽ कहलक, "अहाँ बड़ नीक छी आ कतेक सुंदर छी कस्तूरी...! देखू हमरा...!' आ ओकर चुम्मा लेलक। वैशाख ओ गरम रातिमे दूर आकाशमे टिमटिमाइत ताराक मद्धिम सलेटी इजोतमे, कठिना धारक शीतल पानिमे दूइटा जवान गोंछ वा पाढ़िन मांछ सन ओ दुनू उद्दाम आ निर्बंध छपाछप कऽ रहल छल।

बीच-बीचमे कस्तूरीक कंठसँ उठैत हँसी आ किलकारीक संग मोहनदासक भारी साँससँ निकलैत "हू...तु...तू...तू' रातिक निस्तब्धताकेँ चिरैत जाइत छल।

थाकल कस्तूरी धारसँ घुरि कऽ भीजल नुआमे देवदासक बगलमे सुति गेल छल मुदा मोहनदास नै जानि कतेक राति धरि कठिनाक कातक उथली धारमे पड़ल रहल, आकाशक देवताकेँ तकैत गाबि रहल छल,

"पंछी-परौना बाजैत अछि,

कतऽ गेल हे संगवारी, करउंदा फरत हे...

करउंदा फरत हे...

मोर बाली हे उमरिया करउंदा बता तोला के...'

ओकर गरमे आइ एकटा एहन सुर उतरि गेल छल जे दूर धरि सुना दैत पुनकुकरी आओर टिटहरीक बोल सेहो ओकरा लग आबि कऽ संगत करऽ लागल।

बादमे शारदा ओइ रातिक स्मृति बनल।

ओइ बरख तँ ककड़ी-तरबूज आओर तरकारीक फसिल नीक भेल मुदा बाजारक भाव मंदा भऽ गेलासँ कमाइ कोनो खास नै भेलै। कस्तूरी गढ्ढआरि छल, तकर बादो ओकरा दोसरक मजूरी करहि पड़ैत छलै। मोहनदास सेहो जी-तोड़ मेहनति करैत छल। कठिना एक बेर तँ ओकर प्रार्थना सुनि नेने छल मुदा बादमे बेसी काल ओइमे पानि झझा जाइत छलै। काबा दासक खोँखी बढ़ऽ लागल छलै। मुदा छह किलोमीटर दूरक कस्बाक सरकारी अस्पतालमे एकटा खूब नीक डाक्टर आबि गेल छलै, डाक्टर वाकणकर, आ मोहनदासकँ बुझेलै जे टी.बी.क लेल अस्पतालमे मुफ्त दबाइ भेटैत छै आ ओकर बापकँ एकर पूरा कोर्स करबाक चाही।

ओ हुनका एकटा पॉलिथिनक थैलीमे दू मासक दवाइक खुराक भरि कऽ देलक मुदा काबादास नै तँ समएपर खुराक लैत रहथिन आ नै परहेजे राखि सकैत छल। खाइ-पीबैक कोनो ठेकान नै छलै। माय पुतलीबाइ आँखिक लेल डाक्टर

वाकणकरकँ कहलखिन जे आपरेशनसँ चालीस पैसा इजोत घुरि जाएत मुदा एकरामे आठ-दस हजार टकासँ कम खर्चा नै होएत। ओ मोहनदासकँ भरोस देलक जे जौं जिलामे कोनो नीक आ ईमानदार कलेक्टर आओत तँ ओ ओकर ई काज करबा देत। मुदा बरखपर बरख बीतल गेल, एहन कलेक्टर नै आएल। बीचमे एक बेर एकटा स्वयंसेवी संस्था दिससँ एकटा लड़का आ एकटा लड़की बंसहर-कबीरपंथीक बस्तीमे आबऽ लागल छल। ओ कस्तूरी आ मोहनाकँ कतेक रास आश्वासन देलक जे जल्दिये ओ एहन कोनो व्यवस्था कऽ देत जे ओकर परिवार अप्पन गुजर-बसर आरामसँ करऽ लगताह। ओ कतेक रास अर्जी सेहो लिखलक आ ओकरापर मोहनदाससँ दस्तखत सेहो करौलक। मुदा फेर ओकर आएब-जाएब बंद भऽ गेल। पता लागल जे दुनू लड़का-लड़की ब्याह कऽ लेलक आ ओ दिल्ली चलि गेल। ओ लड़की आब कोनो टी.बी. चैनलमे काज करैत अछि आ लड़का दिल्लीमे अप्पन आइ.ए.एस. फूफाक सहायतासँ झुग्गीमे रहैबला लोक लेल काज करैए बला संस्था खोलि लेल छल आ देश-विदेशक जत्रापर रहैत अछि।

समए बितैत गेल। मोहनदास आ कस्तूरी अप्पन मेहनत-मजूरी आ मलइहा मायक कृपासँ कोनो तरहेँ दिन गुजरि रहल छल। शारदा दू बरखक भऽ गेल छल आ देवदास चारि बरखक। काबा आब बेसी-खाटेपर पडल रहैत छल। बगइक डोरी कखनो काल बना दैत छल वा बाँसक कमची निकालि दैत छल। मुदा ओकर खोँखी बढिते जा रहल छल। ओकर छातीक एक-एकटा पसली गानल जा सकैत छल। कतेक बेर ओ खांसैत छल तँ कफक संग खूने टा नहि, लागैत छल जना मौसक थक्का बाहर निकलि रहल छै। ओम्हर डाक्टर वाकणकरक बदली नेता-अफसर कोनो दोसर जिलामे करा देलक। आब मोहनदासकँ अस्पतालसँ टी.वी.क मुफ्त गोली दैबला कियो नै छल। जखन कखनो ओ जाइत छल, ओ अगिला हफ्ता आबैक लेल कहि देल जाइत छल। ओकर बाप काबा एतेक

कमजोर भऽ गेल छल जे खोँखीकेँ थूकलाक बाद, खाटपर पटायल-पटायल चुपचाप धरतीकेँ देखैत रहैत छल।

चिट्टा आ माँछी धरि ओकर खोँखीक आवाज चिन्है छल, पता नै कतएसँ मटा आ चिट्टा ओकर कफ दिस झुंड बना कऽ दौगि पड़ैत छल। एक दिन तँ काबा हदसि गेल, जखन ओ देखलक जे ओकर खोंखी करैत देरी गिद्धा माछी भिनभिन करैत ओकर चारू दिस मँडराबऽ लागल। काबाकेँ अप्पन अंत लग आएल बुझाए लागल छल। ओ पुतलीबाइकेँ शोर करऽ चाहलक मुदा जखैन धरि ओकर आवाज निकलितियै, तकर पहिने खोँखीक तेज दौरा ओकर गरकेँ फेरसँ अप्पन कब्जामे कऽ लेलकै आ आखिरमे ओतएसँ आँजुर भरि खून आ मांसक थक्का बाहर निकलल। मोहनदास आ कस्तूरी कठिनाक पलिया संभारै लेल जा चुकल छल, घरमे आन्हर पुतलीबाइ टा छल। ओ दौगि गेल, गिरैत-पडैत आएल आओर अप्पन वर काबाकेँ छुबि-छुबि कऽ कानऽ लागल। पौरुकासँ ओकर ठेहुनमे गठिया धऽ लेने छल। काबा बेहाल रहै। कनी देरीमे ओकर साँस स्थिर भेल आ पुतलीबाइकेँ बिगडि कऽ कहलक, "कानै किए छी अंधरी? हम एखन नै मरब। देवदासक बियाह आ शारदाक दुरागमन करा कऽ मरब। ...नै कानू।'

काबा अप्पन कनियाँक माथपर हाथ फेरलक आ कहलक, "दिअ हमरा बाँस आ कुरहडि। हम बाँसक कमची छील दैत छी।'

(एतए ठाढ भऽ जाउ एक मिनट। अहाँकेँ लागि रहल हएत जे हम हिन्दीक कथा सम्राट प्रेमचंदक सवा-सएम जयंतीक अवसरपर समकालीन कथाक बहन्ने अहाँकेँ कोनो सवा सए बरख पुरनका खिस्सा सुना रहल छी। मुदा सत तँ ई अछि जे एहन पुरनका आ पिछड़ल शैली, शिल्प आ भाषामे जे ब्यौरा अहाँक सोझाँ अछि ओ ओइ कालक अछि जखन 9/11 सितम्बर भऽ गेल छै आ न्यूयार्कक दूटा गगनचुंबी व्यापारिक इमारतकेँ खसबाक प्रतिक्रियामे एशियाक दूटा सार्वभौमिक,

संप्रभुता-संपन्न राष्ट्रकेँ गर्दा आ कदबामे बदलल जा चुकल छै। जखन अमेरिका आ योरोपक भगवानक अलावा बाकी सभटा भगवानक आगू प्रार्थनामे ओ लिबल फासिस्ट, आतंकवादी आ सांप्रदायिक मानि लेल गेल। तेल, गैस, पानि, बजार, नफा आ लूटैक लेल सभ दिन कंपनी, सरकार आ सेना समुच्चा धरतीपर दिन-राति निर्दोषक हत्या कऽ रहल छै।

एहन काल, जकरा नीक जना देखू तँ जे कोनो सत्तामे छै, ओइमे सभ कियो एक-दोसराक क्लोन अछि। सभ कियो एक सन ब्रांडक उपभोक्ता अछि। ओ एक्के जेहेन चीज पाबि रहल अछि, एक्के सन चीज खा रहल अछि। एक्के सन कंपनीक कारमे घुमि रहल अछि। सभक एकाउंट एक्के सन बैंकमे अछि। सभक जेबीमे एक्के सन ए.टी.एम. वा क्रेडिट कार्ड आ हाथमे एक्के सन मोबाइल अछि। एक्के सन ब्रांडक शराबक नशामे अखबारक पेज एकसँ लऽ कऽ पेज थ्री धरि वा टीवी क एकटासँ लऽ कऽ सत्तर चैनल धरि ओ एक्के जेहन धूर्त, निर्लज्ज आ नांगट अछि। नीकसँ देखू, हुनकर चमड़ीक रंग आ हुनकर भाषा एक्के अछि।)

मोहनदासक नील रंगक जींसक पेंट आ चरिखाना बुश्शर्टक रंग उडि गेल छल आ ठामे-ठाम कस्तूरीक लगाएल चिप्पीसँ भरि गेल छल। काबा दास दिशा-मैदान करबे टा लेल खाटसँ उठैत छल मुदा जखन ओकर नैत-नातिन देवदास आ शारदा ओकरा लग रहतिऐ, ओकरा लागैत रहै जे ओकर देहक मरबठट्ठीमे प्राणे टा नै वरन ममता आ वात्सलताक रस लबालब भरल छै। देवदास अप्पन बब्बा काबाक खाटपर कूद-फान मचाबैत छल आ शारदा अप्पन आजी पुतलीक कोरामे छिडियाइत खेलाइत रहैत छल।

ओइ दिन आंगनमे मोहनदास आ कस्तूरी बांस आ छींदीक पटिया, खोंभरी आ पथिया-पकउथी बनाबैमे लागल छल। बजारक मोहनलाल मारवाडीक दुकान "विंध्याचल हैंडीक्राफ्ट्स' सँ एतेक बडका आर्डर भेटल छलै जे दू-तीन मास धरि मोहनदास आ कस्तूरीकैँ दम मारबाको फुरसति नै छलै। काबा आ पुतली बच्चा सभकैँ संम्हारने रहै। पचासटा पटिया, पचास टा खोंभरी आ तीसटा पकउथी बनाबैक रहै। काबा बीच-बीचमे अप्पन खाटसँ उतरि जाइत छल आ जखन धरि खोंखी ओकरा बेहाल नै कऽ दैत छलै, बाँस-कमची छीलहिमे ओ लागल रहैत छल। पुरान ईलम आ तर्जुबा छलै। कस्तूरी पटिया ओहिना बुनैत छल जेना ओकर आंगुरकैँ कोनो मशीन चला रहल होइ। साढ़े चारि बरखक देवदास खोंभरीकैँ माथपर लगा कऽ हाथमे बाँसक लाठी लऽ कऽ अढ़ाइ बरखक शारदाकैँ बकरी सन "अर्र अर्र...' करैत जा रहल छल आ छोट सन शारदा तरहत्थी आ ठेहुन भरे गुड़कैत बकरी बनल छल, आंगनक एक कोनसँ दोसर कोन धरि, खसैत-पडैत गुडकि रहल छल। तखने दरवाजापर आहटि भेल। मोहनदासक साढ़ू गोपाल दास अप्पन साइकिलकैँ देवालसँ अडका कऽ भीतर आएल। ओ बजारक "नर्मदा टिंबर एंड फर्नीचर' मे आरा मशीन चलबैत छल आ मालिकक कहलापर ओसूली लेल साइकिलसँ एतए-ओतए जाइत रहैत छल।

गोपालक आबैसँ कस्तूरी बड खुश भेल। कतेक दिन बाद ओकर नैहर लगक गामसँ कोनो पाहुन ओकर सासुर आएल छल। पानि-तमाखूक बाद गोपाल मोहनदासकैँ बतौलक जे एखन तीन दिन पहिने ओ ओरियंटल कोल माइंस कोनो काजसँ गेल छल। ओतए गेलापर ओकरा मालूम भेलै जे बिछिया टोलक बिसनाथ ओतए मोहनदासक नामसँ पछिला चारि बरखसँ डिपो सुपरवाइजरक नौकरी कऽ रहल अछि आ दस हजारसँ बेसी सभ मास दरमाहा लऽ रहल अछि। गोपालदास कहलक जे ओकरा पता लगलै जे बिसनाथक बाप नागेंद्रनाथ भर्ती दफ्तरक बाबूकैँ पटिया कऽ मोहनदासबला नोकरीक चिट्ठी अप्पन अवारा बेटा बिसनाथकैँ दऽ देलक। मोहनदास साक्षात्कारक दिन जे प्रमाणपत्र आ अंक-सूची जमा केने छल ओइमे मोहनदासक फोटो नै लागल छलै, एकर फाएदा उठा कऽ

बिसनाथ अपनाकेँ मोहनदासक रूपमे प्रस्तुत कऽ देलक आ सभ ठाम अप्पन फोटो लगा कऽ अदालती हलफनामासँ लऽ कऽ गजेटेड अफसर धरि सँ ओकरा प्रमाणित करा लेलक। ऐ तरहे बिसनाथ ओरियंटल कोल माइंसमे मोहनदास बल्द काबा दास, जात कबीरपंथी विश्वकर्मा बनि कऽ निचेनसँ डिपो सुपरवाइजरक नोकरी करऽ लागल आ दस हजार मास दरमाहा लिअ लागल।

गोपालदास कहलक जे ओ बिसनाथकेँ कोलियरी लग एकटा होटलमे चाह पिबैत देखने रहए, ओकर गरमे जे प्लास्टिकक आइ. कार्ड टांगल छलै ओइमे नाम तँ मोहनदासक छल मुदा फोटो बिसनाथक छल। एतबेटा नै ओकरा संग ओइ काल जतेक लोक छल ओ सभ ओकरा मोहनदासे कहि रहल छल।

ओतए इहो पता लागल जे बिसनाथ अप्पन गाम बिछिया टोलामे रहब चारि सालसँ छोडि देने अछि आ आब ओरियंटल कोल माइंसक वर्कर्स कालोनी "लेनिन नगर' मे बाल-बच्चा संग रहि रहल अछि, जतए ओकर कनिया ब्याजपर टका देबाक धंधा करैत छै आ चिटफंड चलाबैत छै। मजाबला गप ई रहै जे लेनिन नगरमे रहैबला सभ गोटे बिसनाथकेँ मोहनदास आ ओकर कनिया अमिताकेँ कस्तूरी मैडम नामसँ जनैत छै। बिसनाथ मोहनदासे जना बी.ए. तँ छै नै, दसमा फेल छै, ताइसँ कोलियरीमे काज करबाक बदला अफसरक चापलूसी, कोयलाक तस्करी आ यूनियनबाजीमे लागल रहैत छै।

अप्पन साढ़ू गोपालदासक गप सुनि मोहनदासक माथ घुमि गेलै। एना कोना भऽ सकैत छै? कोनो लोक ओना कोना दोसर लोक बनि सकैत अछि? आ सेहो दिने-देखारे, सोझाँ-सोझी एना भऽ कऽ? एकाध दिनक लेल नै, पूरे चारि सालसँ?

मुदा मोहनदास अप्पन गरीबी आ लचारीमे जेहन दिन देखले छल आ अप्पन बाप काबासँ ओ ओकर जिनगीक जे पुरान खिस्सा सुनने छल, ओइसँ ओकरा लागलै जे अफसर-हाकिम, धनीक-मनीक आ पार्टीबला लोक एतेक तागतिबला होइत अछि जे किछु नहि कऽ सकैत छी। ओ कुकुरकँ बडद, सुग्गरकँ बाघ, खधाइकँ पहाड, चोरकँ साहु- ककरो किछु बना सकैत अछि। मोहनदासँके अप्पन साँस रूकैत सन बुझाएल। हे सत् गुरु, केहन काल अछि जे चारि बरखमे एतए एक्को टा लोक एहन नै भेल जे कहि सकैत छल जे ओरियंटल कोल माइंसमे जे लोक मोहनदासक नामसँ सभ मास दस हजार दरमाहा लऽ रहल अछि ओ मोहनदास नै बिसनाथ अछि, जकर बापक नाम काबा नै नगेंद्रनाथ छिऐ, जकर कनियाँक नाम कस्तूरीबाइ नै अमिता भारद्वाज छिऐ आ जकर माए पुतलीबाइ नै, रेनुका देवी छिऐ?...जे पुरबनरा गामक नै बिछिया टोलक बसिन्दा अछि? जे बी.ए. पास नै दसमा फेल अछि...? ओइ दिन पटिया बुनैत-बुनैत मोहनदास बेर-बेर ठमकि जाइत छल। ओकर आँखि कतौ बिसरा जाइत छलै आ ओ किछु-किछु सोचैत गुम भऽ जाइत छल। बाँसक कमची बनबैत-बनबैत ओकर हाथ भसिया जाइत छल। एक बेर तँ कचियासँ ओकर हाथ कटैत-कटैत बचल। कस्तूरी सभ किछु देखि रहल छल आ अप्पन वरक भीतर चलि रहल उथल-पुथल आ बेचैनीकँ नीकसँ बुझि रहल छल। ओ मोहनदासक हाथसँ कचिया लऽ लेलक आ कहलक, "आइ रौद किछु बेसिये छै। जाउ, अहाँ हाथ-मुँह धो कऽ कनी काल पटाय रहू।''

अगिला भोर सात बजेबला बस पकडि मोहनदास ओरियंटल कोल माइंसक लेल बिदा भेल। राति भरि ओकरा नीकसँ नीन नै एलै। ठीक साढ़े दस बजे ओ कोलियरी पहुँचि गेल।

दिक्कत ई छल जे ओ ओतए ककरासँ गप करितिऐय? केकरो तँ ओ जनैत नै छल? ऊपरसँ ओकर बगेबानी एहन छलै जे केकरो ई मानबामे दिक्कत होइतै जे

असली मोहनदास वएह छी जे एम.जी. कालेजसँ बी.ए. फस्ट डिवीजन अछि आ आइसँ किछु बरख पहिने जकर फोटो अखबारमे छपल छल। दिक्कत ईहो छलै जे ओकरा लग ओ अखबार नै बचल छलै जइमे छपल अप्पन फोटो देखा कऽ ओ बता सकैत छल, "देखू, हमहीं छी मोहनदास, वल्द काबा दास, साकिन पुरबनरा, जिला अनूपपुर, मध्यप्रदेश जे एम.जी. शासकीय डिग्री कालेजसँ बी.ए.क परीक्षामे मात्र किछु बरख पहिने, फस्ट डिवीजनक संग मेरिटमे दोसर स्थान हासिल केने छल। चेहराक मिलान कऽ देखि लियौ। हमहीं छी असली मोहनदास।'

बड मोश्किलसँ मोहनदासकँ फाटकक भीतर आबऽ देल गेल। ओकर नील रंगक पैंट ठेहुन धरि फाटि गेल छल। पाछाँसँ घसा कऽ ओ जाफरी बनि गेल छल जतए कस्तूरी ओही रंगक चिप्पी साटि देने छलै, जे या तँ ओकर पुरना ब्लाउजमे सँ निकालल गेल छल या पुरना चद्दरिमे सँ। रौद, गुमार, ठंढी, कड़ाचूर मेहननि आ एतेक दिनुका भूख-पियास मोहनदासक चेहरा आ चामक रंगकँ स्याह-पकिया बना देने छलै। दुख आ बिपति ओकर चेहरापर एतेक डडीर खेंचि देने छलै जे लागैत नै छल जे ओकर उमेर एखन चालीसकँ पार नै केने अछि। जतेक बेर अप्पन अभावक बोझसँ ओ कुहरैत छल आकि अपमानक आगिमे चुपचाप लहकैत रहल, ओकर भौं आ हाथ-छातीक रोइयां उज्जर भेल गेल। तीस-पैंतीसक उमेरमे ओ पचास-पचपन सन लगैत छल।

मोहनदास ओइ दफ्तरक आगू ठाढ छल जतए चारि बरख पहिने ओ अप्पन सभटा सर्टिफिकेट आ कागज जमा करै लेल गेल छल आ जतए काज करैबला बाबू भरोस देने रहैक जे अहाँक नाम तँ कहियो कटि नै सकैत अछि, किएकि लिखित आ शारीरिक परीक्षामे अहाँ सूचीमे सभसँ ऊपर छी।

मोहनदास देखलक जे वएह बाबू ओइ कोठलीमे बैसल अछि, जकरासँ ओ पहिने भेँट करैत छल। ओकर कुर्सी पैघ भऽ गेल छलै आ आगूक टेबुल सेहो। ओकर पीठक पाछाँ ठाढ हवा फेकैबला ए.सी. लागल छलै। मोहनदास दरबज्जा लग ठाढ भऽ कऽ देखि रहल छल जे बाबू बिस्कुट खा आ चाह पीब रहल अछि आ ओकर आगूक कुर्सीपर दू गोटे बैसि कऽ आस्ते-आस्ते रकम-रकम गप कऽ रहल अछि। एकाएक बाबू ओकरा दिस देखलक तँ मोहनदास कल जोडि कऽ नमस्कार केलक आ पुरनका यादकेँ जगाबैक लेल ओकरा दिस देखि कऽ मुस्कुरायल। बाबूक माथपर जोर पडि गेलै। किंसाइत ओ ओकरा चीन्हि नै सकल। मोहनदास ओकरा दोबारा कल जोडि कऽ नमस्कार केलक आ बाजल, "साहब, हम मोहनदास...!' मुदा तखन धरि बाबू अप्पन मेजक नीचाँ लागल घंटीक स्विच दबा देलक। बड जोर कटाह सन खरखरायल अवाज भेल आ एकटा चपरासी दौगैत भीतर गेल। बाबू ओकरापर कनी बिगडल जे मोहनदास नै सुनि सकल। चपरासी आबि कऽ कोठलीक पर्दा खेंचि देलक आ मोहनदासकेँ माथसँ पएर धरि निङहारि कऽ कहलक, "की काज अछि? जाउ ओम्हर बैसू, ओसाराक ओइ ब्रेंचपर...! एम्हर कोना आएल छी?'

मोहनदास ओकरा कहऽ चाहलक जे ओकर नाम मोहनदास छिऐ आ आइसँ चारि बरख पहिने ओ कोलियरीमे नोकरी लेल सलेक्ट भेल छल आ अप्पन सभटा कागज ओइ आफिसमे जमा केने छल मुदा ओकर ठाम कियो आर लोक ओकर नामसँ नोकरीपर लागि गेलै....। ओकर अवाज ततेक कमजोर छलै, ऊपरसँ चपरासी ओकरा जेना धकलैत ओसाराक कोनामे राखल बेंच दिस लऽ जा रहल छल, ओइसँ धरफडीमे बाजल गेल ओकर गपक लाइनमे कोनो तारतम्य नै रहि गेल छलै। गरमे किछु फँसि रहल छलै आ ओ तोतरा रहल छल। मोहनदासकेँ बकौर लागि गेलै मुदा ओ चपरासीसँ अप्पन बाँहि छोड़ाबैत बाजए लागल, "भाइ, एक बेर ओइ बाबूसँ भेँट करा दिअ। हमरा अप्पन प्रमाणपत्र आ मार्कशीट वापस लेबाक अछि।'

चपरासी हुनका धकियाबैत देवालसँ सटल लकडीक बेंचपर बैसा देलक आ जाए लागल। मोहनदास बुझि गेल जे आब ओकरा दोबारा एतए धरि आएब मुश्किल हेतै। ई आखिरी बेर छै। ओ जोरसँ चपरासीपर गरजल जे भर्ती कार्यालयक दरवाजासँ भीतर पैसि कऽ नपत्ता होए बला छल।

" हे...हे..! जा कऽ ओइ बाबूसँ कहियौ जे मोहनदास बी.ए. आएल अछि आ 18 अगस्त, 1997 कँ जमा कराएल अप्पन सभटा कागज आपस मांगैत अछि...। तमाशा बना कऽ राखि देने छै। कोठली आ कुर्सीमे बैसि गेल छै तँ कि अंधेर मचेतै? ...दिअ, पर्ची दिअ, हम अप्पन नाम लिख दैत छी...! बाबूकँ दऽ देबै!'

चपरासी एक बेर तँ सन्न रहि गेल। कोनो बूढ भिखमंगा सन चेथरीमे घोंसिलाएल एहि लोकक गरसँ बड नीक फरिछायल भाषा निकलि रहल छै। एहन भाषा आ लहजा जे पढल-लिखल बाबू आ अफसरक होइत अछि। चपरासी दरवाजापर किछु काल ठमकल आ मोहनदासकँ निङहारैत रहल। फाटल बेरंग भेल, ठामे-ठाम चिप्पी लागल पेंट, फाटल घिनायल चौखुटा बुश्शर्ट। चनेल भेल माथपर सुखल बिखरल खिच्चडि सन अधपक्कू केस। झुर्री आ भङतराह सन, टेढ-टूढ झुर्रीसँ भरल पकिया रंगक अस्कताइत चेहरा। गहींर, धँसल, कनी-कनी मिझाइत सन अपनाकँ देखैत, हताश कमजोर आँखि। नीचा पएरक आंगुरमे कोनो तरहे ओझराएल रबडक कतेक पुरान, सस्त चप्पल, जकरा बेरोजगारी, अभाव, दुख आ हताश रबडक रहैये नै देलक, माटि, काठ आ कागचक बना देल छल।

"बुरबलेल...! सार बताह...! बहानचो... कोन पार्टी आ अफसर अहि ससुर भुक्खलक संग देत?' यएह ई फदरैत रहै जइसँ चपरासीक ठोढ तामसे हिलि रहल छलै। मोहनदासकँ लागलै जे चपरासीकँ ओकर गपपर विश्वास नै भऽ रहल छै मुदा भगवान जानै छल जे ओ सत बाजि रहल छल, ताइसँ ओ बेंचसँ उठि

कऽ आत्मविश्वाससँ भरि सधल चालिसँ ओकरा दिस बढल। ओकरा मनमे छल जे ओ जा कऽ ओकरा बुझाबैक प्रयत्न करत जे विसनाथ ओकरे संग टा नै वरन ओरियंटल कोल माइंसक संग जालसाजी आ धोखाधडी कऽ रहल अछि।

मोहनदास जेहन व्यग्रता आ जल्दीसँ चपरासी दिस बढि रहल रहै आ ओकर चेहरापर दिमागमे चलि रहल उठा-पटकक कारण टेढ-टूढ डडीर बनि रहल छल, गहींर धसल आँखिमे जे एकटा खास कछमछीक चमक आबि गेल छलै आ अप्पन सभटा गप एक्के संग कहि दै लेल उग्र व्याकुलतामे ओकर सुखायल पपडी पडल ठोढ जेना थरथरा रहल छलै, ओइसँ चपरासी सत्ते डरा गेल छल। ओ मोहनदास दिस देखैत जोरसँ चिकरल:

"हे...हे...! एक्को डेग आगू नै बढ़ाउ, बुझलिऐ! ठाढ भऽ जाउ ओइ ठाम बरगाही भाइ...! हम कहै छी, ठाढ भऽ जाउ...ओही ठाम...!'

"हे...हे... भाय! ...हमर गप तँ सुनू...!' मोहनदास बिगडि गेल। गपकेँ सम्हारबा लेल किछु जोरसँ बाजल। मुदा ओकर गपमे विनम्रता कम आ किंसाइत बेचैनी बेसी छलै, जाइसँ गप आर बिगडि गेल। चपरासी तति कऽ ठाढ भऽ गेल आ जोरसँ चिकरल; "बहीर छी की? थम्हि जाउ ओइ ठाम, नै तँ खुइन कऽ गारि देब बरगाही भाइ! एक्को डेग आगू बढ़ेलियै तँ!'

दरवाजा पर हो हल्ला सुनि कऽ दफ्तरक भीतरसँ चारि-पाँच गोटे बाहर बहरा कऽ आएल। ओ अफसर नीक कपड़ामे छल आ घुरि कऽ मोहनदासकेँ माथसँ पएर धरि देखि रहल छल।

"के छी?...एतए भीतर धरि कोना आबि गेल?'

"सिक्योरिटी ऑफिसर पांडेकेँ बजाबियौ?...ई गार्ड खैनी रगडि कऽ कुर्सीपर सुतल रहैए।'

"आइ मेन गेटपर ड्यूटी केकर-केकर रहै? ड्यूटी रजिस्टर आनू?'

"हे, भगाउ एकरा।'

"ई तँ अकडहर कऽ देलक...! कियो ऐ तरहे अंदर पैसि जाइत अछि, ककरो ठांय-ठांय गोली मारि देत...! हे, किछु नै तँ बमे फोडि दितियै...!'

"पुलिसमे दऽ दियौ। शर्माजी, मिलाबू अप्पन मोबाइल...वएह सए नम्बर!'

मोहनदासक गप कियो नै सुनि रहल छल। ओकरा धकियायल जा रहल छल। माथ, पीठ, कनहा आ मुँहपर थापर, मुक्का, आ कोहनी बरसि रहल छल। मोहनदास दुनू हाथसँ अप्पन चेहरा झांपि कऽ अप्पन आँखि बचा रहल छल। "हम्मर गप तँ सुनि लियौ!...हे...मारू नै! हे...हे...!'

एतबैयेमे तीन-चारिटा गार्ड दौगैत आएल। ओइमे एकटा कऽ हाथमे बारह बोरक दुनाली छलै, जेहन बैंकक चौकीदार लग रहैत छै। आ सभक हाथमे डंटा छलै। मोहनदासक पीठ खलोदार भऽ गेलै। ओकर आँखिक आगू कठिना धारमे अमावशक रातिमे देखल सभटा नक्षत्र हहारो करैत, कुहरैत, उकापतंग सन टूटि-टूटि कऽ खसऽ लगलै। कोनो एहन वज्र चोट कतौ पडलै जे ओकर गरसँ ठीक ओहने कुहरबाक अबाज निकललै, जेहन ओइ सुगरक गरसँ निकलैत छै, जकर टांगकेँ बान्हि कऽ ओकरा गरकेँ रेतल जाइत छै। ओ एहन जोरसँ कुहरल जे कोइला खदानक सभटा कामगार बाहर निकैल गेल आ घेरा बना कऽ ओइ तमाशाकेँ देखऽ लागल।

(ध्याद दियौ, ई घटना ओइ कालक छी जखन हिंदूक जगदगुरु अप्पन मठमे बैसि एकटा स्त्रीक संग वएह सभ किछु कऽ रहल छल जे हजार किलोमीटर दूर, कतेक समुद्र पार, व्हाइट हाउसक कुर्सीपर बैसल अमेरिकाक राष्ट्रपति कऽ रहल छल। जखन दजला आ फरात धारक लग कोनो खधाइमे अप्पन जान बचाबैक लेल नुकायल गिलगमेशकेँ एकटा पुरान समुद्री डाकूक वंशज बाहर खींच कऽ ओकर दाँत गानि रहल छल। एहन काल जाइमे जकरा लग जतेक मात्रामे सत्ता छल ओ विलोमानुपात नियमसँ ओतेक बेसी निरंकुश, हेहर, खुनीमा, अनैतिक आ शैतान भऽ गेल छल।...आ ई गप राष्ट्र, राजनीतिक दल, जाति, धार्मिक समुदाय आ लोक धरि एक्के सन लागू होइत छै।)

मोहनदास ओरियंटल कोल माइंसक मुख्य गेटक बाहर सड़कपर ठाढ छल। एकदम बीचोबीच। ओकर दिमाग किछुओ सोचब छोडि देने छलै। एकटा डरौन सन गुमकी छलै जे सौंसे वातावरणमे सांय-सांय करैत बाजि रहल छलै। ओकरा ईहो होश नै छलै जे ओ सडकक ठीक मांझमे ठाढ अछि आ ओकर दुनू कातसँ ट्रक, मेटाडोर, टेंपो आ दोसर गाडी हॉर्न बजाबैत ओकरा कोनो तरहेँ थकुचेबासँ बचाबैत तेज गतिसँ लगातार जा रहल छलै।

मोहनदासक जेबीमे ओ पर्स एखनो छल जे ओ नोकरी लागैक आसमे तीस टकामे किनने रहए। ओइमे अखनो एक सए सत्तरि टका छलै। ओकर मेहनति आ कमाइक टका। पैंसठि टका बसक किराया देलाक बादो ओकरा लग एत्ते टका बचल छलै। अप्पन जेबीक पर्स छुलासँ ओकर दिमाग शांत हुअए लागल।

एत्ते काल बाद ओकरा एकाएक रौदक तेज हेबाक अनुभूति भेलै। ओ झटकारि कऽ सडकक कात आबि गेल। ओकरा भूख लागल छलै।

"मोटू वैष्णव शुद्ध शाकाहारी होटल" ढाबामे खाइत काल ओकरा पता लगलै जे साँझमे एतएसँ राज्य परिवहनक दूटा आर एकटा प्राइवेट बस सेहो ओकर गाम पुरबनरा दिस जाइ छै। एखन तँ खाली एक्के बजल छै। ओ निर्णय लेलक जे ओ एक चक्कर ओरियंटल कोल माइंसक कालोनी "लेनिन नगर' दिस घुमि आबए। ओतए किंसाइत चिन्हन-जानल कियो देखा जाए। स्कूल-कालेजक कोनो पुरनका सहपाठी आकि कियो आन।

लेनिन नगरमे एतएसँ ओतए धरि ओ घुरिआइत रहल। दुपहरिया काल छलै। सभटा फ्लैट एक्के जेहन बनल छलै। लोक काज करबा लेल कोलयरी जाइ गेल छल। घरमे स्त्रीगण आ नेना सभ टा छल। स्कूलक एकटा बस ठामे-ठाम ठाढ होइत बच्चा सभकेँ उतारि कऽ आगू चलल जा रहल छल। लेनिन नगर बड पैघ कालोनी छल। जौँ हमरा संग धोखाधडी आ जालसाजी नै कएल गेल होइत तँ हमहूँ अप्पन परिवारक संग लेनिन नगरक एहने कोनो फ्लैटमे रहतौं, सभ मास दरमाहा भेटतिऐ, देवदास आ शारदा ऐ तरहेँ स्कूल ड्रेस आ जूता-पैताबा पहिरि कऽ ऐ बससँ उतरितिऐ। कूलर-पंखामे सुतितिऐ। मुदा केहन भाग्यक खेला छल जे मोहनदासकेँ बिसनाथक फ्लैटक पता पूछै लेल अप्पन नाम लिअ पडि रहल छलै।

"मोहनदासक फ्लैट कोन छै, भाइ साहेब?'

"कोन? ओ सुपरवाइजर साहब?'

"हँ...!''

"आगू चलि जाउ सोझे। तीन कट छोडि कऽ चारिममे बामा हाथ घुमि जाएब। तेसर मकान छै। ए बट्टा एगारह। डाक्टर जनार्दन सिंहक बगलबला फ्लैट।'

फ्लैटक दरबज्जा बंद छल। बाहरी देवालपर नेम प्लेट लटकि रहल छल, जाइपर लिखल छल- "मोहनदास विश्वकर्मा, कनिष्ठ आगार अधिकारी, ओरियंटल कोल माइंस''।

मोहनदास कनी काल धरि गुम्म भऽ नेम प्लेट पढैत रहल, फेर ओ कालबेलक स्विच दबौलक, जे ठामे नेम प्लेटक नीचाँ छल। मोहनदास एक बेर तँ डरि गेल किएक तँ जे आवाज भेल ओ ठीक वएह कटाह आवाज छल जे भर्ती दफ्तरक बाबूक टेबुलबला घंटीसँ भेल छलै आ तकर बाद ओकरा संग ई दुर्घटना भेल छलै।

दरवज्जा एकटा चौदह-पंद्रह बरखक बच्चा खोललक।

"साहब नै अछि! अखने निकलल अछि। आगूबला बजारमे लस्सी पिबैत हएत।' छौरा एक्के सूरमे बाजल।

"पिबै लेल पानि भेटत की?'', मोहनदासक ठोंठ सुखा रहल छल। रौद बड तीख भऽ गेल छलै आ हवामे लू बहै छलै, से ओ झरका रहल छलै। कोलयरीमे जखन ओकरा धक्का मारि कऽ पिटैत बाहर निकालल गेल छल। ओकर कोहनी, गाल आ पीठपर एक-दू ठाम नोछार लागि गेल छलै। ओ नोछार घामक नूनसँ लहरि रहल छलै।

"अहाँ एतए ठाढ रहू, दैत छी।' छौरा ओकरा माथसँ पएर धरि निङहारलाक बाद कहलक आ भीतर चलि गेल।

मोहनदास तीन गिलास पानि सुरकि गेल। छौरा फ्रिजसँ ठरल बोतल निकालि कऽ आनने रहै। पानि पिलासँ ओकर देहमे जान एलै, आँखिमे रोशनी घुरलै आ मोन किछु शांत भेलै तँ ओ देखलक जे गिलास घुरा कऽ लऽ जाएबला छौरा ओकरा सहानुभूतिक संग देखि रहल अछि।

"ओकर घरमे एखन के-के छै?', मोहनदास पुछलक।

"कियो नै। कस्तूरी मैडम टा छै।...एखन सुतल छै। अहाँ पांच बजेक बाद आउ।' छौरा खाली बोतल आ गिलास लऽ कऽ अंदर जाय लागल तँ मोहनदास कहलक, "अहाँक साहब आबथि तँ हुनकासँ कहब जे पुरबनरा गामसँ मोहनदास आएल छल। साँझकँ हम फेर आएब।'

लडका भीतर जाइत-जाइत ठाढ भऽ गेल। ओ मोहनदासकेँ निङहारि कऽ देखलक आ कहलक, "की कहलिऐ?...के आएल छल!"

"मोहनदास!", मोहनदास जोरसँ बाजल आ रकमे-रकमे मइ मासक आगिमे जरैत आ पसिझैत कोलतारक सडकपर घुरि कऽ आबि गेल।

लेनिन नगरक मार्केट बड पैघ नै छल। मुदा आधुनिक हेबा लेल ओ छटपटा रहल छल। तीन-चारि डिपार्टमेंटल स्टोर्स, किछु खुदरा सन किरानाक छोट सन दोकान। डोसा-इडली-बड़ा बला "कावेरी फास्ट फूड"। दू तंदूर, साल मखनी, कड़ाही पनीर, बटर चिकेन, आलू पराठा बला होटल। एकटा देशी आ अंग्रेजी शराबक दोकान, जइमे "एतए शीत बीयर सेहो भेटैत अछि' क बोर्ड लागल छल। पान-सिकरेटक दूटा गुमटी आ प्लास्टिक, इलेक्ट्रानिक्स आ इलेक्ट्रॉनिक्स सामानक, सीसा बला शो-विंडोजबला दूटा दोकान। एकटा कपड़ाक बड पैघ हालसन दोकान छल, जकर आगू गेटपर आ सीसाक भीतर सेहो, जालीदार ब्रोसरी आ जालीदार जंघिया पहिरने, अप्पन सभ किछु देखबैत, आदम-ईव सन उज्जर फाइबरक पुतुल ठाढ छल।

मोहनदास देखलक जे लक्ष्मी वैष्णव भोजनालयक आगू पुलिसक टाटा सुमो ठाढ छल, जइमे दू-तीन टा सिपाहीक संग ओकर गामक पंडित छत्रधारी तिवारीक लडका विजय तिवारी, जे अप्पन ससुरक घुरपेंचसँ दरोगा भऽ गेल छल, लस्सी पीबि रहल छल।...आ बिसनाथ सेहो ओतै छल।

बिसनाथ कोनो गपपर ठठा कऽ हँसि रहल छल आ अप्पन लस्सी सठा कऽ टाटा सुमो दिस बढि रहल छल, तखने ओकर नजरि मोहनदासपर पडलै। ओ सतर्क भऽ गेल। एक क्षण लेल ओकर चेहराक रंग उडि गेलै। एखन धरि जे हँसी ओकर चेहरापर नाचि रहल छलै से तुरत्ते बिला गेलै। बिसनाथक चेहरापर

आएल गडबडीकेँ अकानि कऽ विजय तिवारी घुरि कऽ देखलक। ओ गाडीमे ड्राइवर सीटपर बैसल छल, वर्दीमे सजल-धजल।

मोहनदास चेथडीमे, लू मे झरकैत, सडकक कात, बिजलीक खाम्ह लग, लगभग पंद्रह गजक दूरीपर ठाढ छल।

एकटा तनावसँ भरल गुमकी अनचोक्के ओइ दुपहरियाक रौदमे एतएसँ ओतए धरि पसरि गेल छलै।

बिसनाथ गाडीपर चढि गेल। विजय तिवारी चाभी घुमा कऽ इंजन स्टार्ट केलक आ एक्के धक्कामे ओकरा दौगबैत जोरसँ ओइ दिस आएल जेम्हर मोहनदास ठाढ छल। मोहनदास थकमका गेल आ डोलि कऽ बिजलीक खुट्टा दिस सहटल। विजय तिवारी जोरसँ ब्रेक मारलक आ गाड़ीकेँ मोहनदासक ठीक आगू ठाढ कऽ देलक। ब्रेक नै लगितियै तँ मोहनदास खुट्टा संग ओकर चपेटमे आबि जैतियै। मोहनदासकेँ अदंक लऽ लेलकै।

"एम्हर आ!', विजय तिवारी ओकरा बजेलकै। आइसँ मोटामोटी सात-आठ बरख पहिने, यएह विजय तिवारी ओकरा संग एम.जी. डिग्री कालेजमे पढैत छल। सभ दिन एक्के क्लासमे ओ बैसैत छल। पढै-लिखैमे ओ लद्धढ छल। ओकर बाप पंडित छत्रधारी ओकरा मोहनदासक उदाहरण दैत छलै जे सभ बरख फर्स्ट आबैत छल। अखन वएह विजय तिवारी पुलिसक वर्दीमे बत्ती आ लाउडस्पीकर

लागल टाटा सुमोमे बैसल ओकरा जइ तरहे निडहारि रहल छल, ओइमे अनचिन्हार बनबासँ बेसी हिंसा आ तामस साफ-साफ लखा दैत छल। एहन की भऽ रहल छल? की मोहनदास गरीब आ निचलका जातिक छल, ताइसँ? वा ताइसँ जे ओ बेरोजगार छल आ अप्पन मेहनतिसँ चुपचाप अप्पन परिवारक आजीविका चला रहल छल? वा ऐ लेल जे ई सभ लोक ओकरा ठकने छल। ओकर अहं मारि देने छल आ आब एतए ओकर सोझाँ ओकर आजादी आ मौज-मस्तीमे बाधा बनि रहल छल?

"खुट्टा बचा लेलकै बरगाही भाइ, नै तँ अखन लोथ बनि गेल रहतिऐ!" विजय तिवारी रकमसँ फुसफुसा कऽ कहलक।

"हौ छोडू! माछी मारि आर हाथ गंध करत!' बिसनाथ बाजल।

"ओहिने हुडकि दैत छिऐ! कखनो एम्हर दिस नै ताकत सार!'

मोहनदास अखन धरि अप्पन ठामसँ हिलल नै छल।

विजय तिवारी जोरसँ कतेक बेर हॉर्न बजेलक, आ तकर बाद एकाएक गाड़ीक ऊपर लागल स्पीकरमे ओकर आवाज चारू दिस गूंजै लागल, "हे हौ बिसनाथ! गाड़ीक आगू किए कुदलह हौ बिसनाथ? तोहर दिमाग सनकि गेल छह की बिसनाथ? बिसनाथ, बाजैत किए नै छह? बहीर भऽ गेल छह की हौ बिसनाथ! बिसनाथ, हे हौ बिसनाथ!"

गाड़ीक भीतर जोरसँ ठहक्का उठऽ लागल छल।

"भौजीकेँ एतए नै आनलौं बिसनाथ? असकरे मरै लेल आएल रहह...हे!''

बिसनाथ गाडीसँ उतरल आ मोहनदास लग आबि कऽ ठाढ भऽ गेल। ओ अप्पन जेबीसँ पाँच सएक एकटा नोट निकालि कऽ मोहनदासक शर्टक जेबीमे खोंसि देलक।

"सुनू, आब अहाँ अप्पन पुरनका नाम बिसरि जाउ आ आब आइक बाद कहियो लेनिन नगर दिस पएर नै बढ़ाएब! बुझलिऐ! आइ तँ हम दारू नै लस्सी पीबि राखने रही, ऊपरसँ बिजलीक खाम्ह आबि गेल, नै तँ आइ चापि दैतौं। दोबारा कतौ आसपास देखा देलौं तँ कालयरीक भट्टीमे छाउर बना देब।''

एकर बाद बिसनाथ घूमल आ मोटू वैष्णव ढाबा दिस देखैत जोरसँ गरजल, "हे हौ नंद किशोर, ऐ बिसनाथकेँ एक गिलास लस्सी पिया देबहीं ठंडा! बरफ दऽ कऽ! बरफ दऽ कऽ हौ! हम्मर पड़ोसी गामक अछि बिसनाथ...!'' टाटा सुमोक भीतरसँ अनवरत ठहक्काक आवाज आबि रहल छल।

बिसनाथ सेहो हँसऽ लागल छल। घुरि कऽ गाड़ीमे चढ़ैत-चढ़ैत ओ रकमसँ विजय तिवारीसँ कहलक, "ई नंद किशोर अछि तँ भखारक ढीमर मुदा एतए बाभन बनि कऽ वैष्णव शाकाहारी होटल चला रहल अछि। सजनपुरक चौबे घरेनक बहूकेँ बियाहि आनलक सार।

"पंडीजी कहियौ तँ फूलि कऽ कुप्पा भऽ जाइत छै।''

"नीके छै! समांग बढैत छै।'', विजय तिवारी बाजल आ ठहक्का लगा कऽ ढाबा दिस मुँह कऽ बाजल, "बिसनाथकेँ कनेटा सम्हरि कऽ लस्सी पिआयब पंडितजी, उपरका पेंच कनी लूज भऽ गेल छै...! हाँ रूपा हम्मर खातामे चढ़ा लेब।''

निफिकिर रहू! निफिकिर! घरक काज छिऐ! पेंच तँ हम सेट कऽ देबै!''

मोहनदासक मुँहमे टाटा सुमोक धुरा-गर्दा आ धुँआ छोडैत ओ सभ चलि गेल। मोहनदास ओइ ठाम ठाढ रहल, बिजलीक खुट्टाकेँ अप्पन हाथसँ थाम्हने। की ई कोनो फिल्म छल जकर सीन एखने-एखन पूरा भेल आ जाइमे ओ सेहो एकटा पात्र छल? वा ई कोनो अजीबे सपना छल?

मोटू वैष्णव शाकाहारी ढाबासँ गोर-नार, कारी-चमकैत आँखिक अधवयसू बडका पेटबला हलुवाइ नंद किशोर लस्सीक गिलास हाथमे थम्हने गरजि रहल छल- "आबू भाइ बिसनाथ! लस्सी तँ पीबैत जाउ!''

मोहनदास जखन लेनिन नगरक मार्केटसँ बस स्टैंड दिस जा रहल छल तँ ओकर रस्तामे एकटा परेशान-सन अबैत लोक देखाइ पडल। ओ लेनिन नगर दिस जा रहल छल। ओकर अंगाक रंग कहियो लाल छल हेतै जे आब मैल आ पुरान भऽ कऽ कत्थइ भऽ गेल छलै। मोहनदास लग आबि कऽ ओ रूकल आ पुछलक- "भाइ, लेनिन नगरमे सूर्यकांतक फ्लैट कोन छै?"

मोहनदासक मोनमे एलै, जखन ओ बिसनाथक पता ताकि रहल छल, तखने ओ ई नेम-प्लेट देखने छल। ओ मन पाडैक कोशिश केलक।

"आगूसँ दहिन हाथ घुमि जाएब आ सए गज आगू जा कऽ तिनमुहानी लग, मटियानी चौक लग ककरोसँ पूछि लेब। ओतै छै।"

जखन ओ सभ जाए लागल तँ मोहनदास रकमसँ ओकरासँ पुछलक- "अहां केकर फ्लैट ताकि रहल छी?"

"सूर्यकांतक! उन्नाव लगक गामक छै।"

"ओकर गामक की नाम छिऐ?"

"गढ़ाकोला...!"

"आ अहाँक की नाम छी?''

ओ लोक कनी काल चुप रहल। ओकर ठोढ थरथरेलै, गहींर धसल आँखिसँ पानि खसऽ लगलै। ओकर सुखाएल गरासँ एकटा क्षीण भरभराएल आवाज एलै- "सूर्यकांत! गढ़ाकोलाक सूर्यकांत।''

ओ आदमी घुमल आ रकम-रकम थरथराइत लेनिन नगर दिस बढि गेल।

(ई खिस्सा ओइ कालक अछि जखन संसारक सभ देशक सभ सरकारक अर्थनीति आ राजनीति एक्कहि रंगक छल, जखन धनीकक आ गरीबक बीचक खधाइ एत्ते गहींर आ चाकर भऽ गेल छलै जे ओकर कोनो प्रायोजित विज्ञापन नुका नै सकै छल...ओइ काल जखन बीसम सदीक शुरूमे उत्पीडित आ शोषित मनुष्यताकेँ लऽ कऽ क्रांति करैबला तागति, साझा सरकार बनाबै लेल, पेट्रोलक दाम कम करबाक आ गरीबपर राज करबाक शतरंज खेला रहल छल...आ एहन समए जाइमे ऐ देशमे जे कियो ईमानदार छल आ अप्पन श्रम आ प्रतिभापर जिबैत छल, ओकरा मारबा वा थकुचबा लेल एकैसम सदीक उत्तर औद्योगिक लोकतंत्रमे एकटा अभूतपूर्व सर्वदलीय ऐतिहासिक सहमति छल...। राजनीतिक सभटा रूप सत्ताक एहन उपकरणमे बदलल गेल छल, जकर इस्तेमाल प्रजाक उत्पीडन, दमन आ ओकरापर अन्याय लेल भऽ रहल छल।)

रातिमे एगारह बजे मोहनदास अप्पन घर पहुँचल। सभ कियो ओकर बाट जोहि रहल छल। कस्तूरी भात-दालि आ रामझुमनीक खुशीमा बनेने रहथि। कनीटा काँच आमक चटनी सेहो ओ सिल्ला-लोरहीपर पिसने छली। देवदास आ शारदा सुति गेल छल। काबा ओसारपर खाटपर पडल-पडल खोंखी कऽ रहल छल।

"आइ तीन बेर खोंखीक संग खून आ मौस खसल।" कस्तूरी बतेलकै।

पुतलीबाइ ओतए काबाक खाटक नीचाँ शतरंजी ओछा कऽ सुति गेल छलि। कस्तूरी एखनि धरि नै खेने छलि। ओ थारीमे अप्पन आ मोहनदासक खेनाइ लगा कऽ झाँपि देने छल।

हाथ-पएर धोलाक बाद जखन मोहनदास अप्पन कपड़ा उतारलक आ गमछा लपेटलक तँ ओकर उघार देहमे लागल चोट आ नोछारक चेन्ह कस्तूरीकेँ देखा पडलै। ओ चिंतित भऽ गेलि।

"की भऽ गेल? कत्तऽ खसि पडलिऐ?", कस्तूरी उठि कऽ ओकरा लग आयलि आ ध्यानसँ ओकर देहकेँ छूबि-छूबि कऽ देखऽ लागलि।

"हे दाइ! ई तँ मारि-पीटक घाव छिऐ!", मोहनदास चुपचाप हाथ-पएर धोइत रहल। ठार पानिक संग ओकर दिन भरिक थकान धुआ कऽ नालीमे बहैत जा रहल छलै। मंजनौटे लग बेलक एकटा पैघ सन गाछ लागल छलै जइमे कतेक रास फूल भेल छलै आ ओकर महक भरि आंगनमे भरल छलै। मोहनदास सांस घीचि कऽ अप्पन कलेजामे भरि लेलक आ कनी काल धरि आँखि मूनि कऽ सतगुरु कबीरक जाप करैत रहल।

कस्तूरी खेबाक थारीक ऊपरसँ परात हटेलक तँ भरि आंगनमे भातक गमक भरि गेलै। लोहंदी चाउर छलै, पुरनका। गोठल्लाक कोनो कोनमे पुतलीबाइ नुका कऽ राखने छल आ बिसरि गेल छल। आइ ओकरा ओ जोगाएल चाउर मोन पडलै जे छुबि-छुबि कऽ ओ पोटरी ताकि कऽ निकालने छल। मोहनदास हपसि कऽ खेलक। ओ आमक चटनी आंगुरमे लगा कऽ चाटि रहल छल तँ कस्तूरी कहलक- "बिसैंधी आमक गाछपर खूब फल आएल छल। बेचलापर कमसँ कम हजार-दू हजार तँ भेटबे करत। काल्हि बेचि दी की?'' मोहनदास तिरपित भऽ कऽ बडका ढेकार मारलक आ कहलक, "अहाँक हाथक पकाएल भोजनमे जादू अछि कस्तूरी। आमक चटनी, भात आ भूखक संग जौं अहाँक हाथसँ परसबाक संयोग भऽ जाए तँ स्वर्गे भेट जाइत अछि।'' कस्तूरीक आँखि नोरा गेलै। ओ बुझैत छल जे आइ मोहनदासक संग कोनो अनहोनी भेल छै, जकरा ओ सभ दिन जकाँ ओकरासँ नुका रहल छै।

ओइ राति कस्तूरीकेँ बड राति धरि जगरनाक बाद सुतल भेलै मुदा मोहनदासक आँखि एक्को क्षण लेल नै लगलै। ओ बेर-बेर उठैत छल आ गटागट पानि पिबैत छल। ओकर दिमागक भीतर कोनो धुरा-गर्दा आ कुहेससँ भरल तेज आन्ही चलि रहल छलै। आन्हिये नै, कोनो कतेक रास घुरमैत बिर्रो।

मोहनदास दू-एक बेर फेर ओरियंटल कोल माइंस गेल मुदा ओतए जाएब व्यर्थ भेलै किएकि ओतए आर लेनिन नगरमे ई उक्का पसारि देल गेल छलै जे एकटा बताह हफ्ता-पंद्रह दिनपर एतए अबैत अछि आ अपनाकेँ माइंसक असली डिपो सुपरवाइजर आ असली मोहनदास बी.ए. कहैत अछि। जौं ओकरा बिसनाथ कहि कऽ गरजियौ तँ अंट-शंट बाजऽ लागैत अछि आ ओकरा बतहपनीक दौड़ा पड़ै छै।

मोहनदास हारि गेल आ ओ कोलियरी जाएब छोडि देलक। ओ दिन-राति पजरैत रहल। कठिनाक रेतपर राति भरि जागि कऽ चुपचाप आकाशकँ घुरैत रहैत छल। गाममे ओहिनो कबीरपंथी बंसहर-पलिहा निचला जातिक मानल जाइत छल। ओ अनुसूचित जातिक अछि वा आदिवासी वा आदिम जनजातिक, एखन धरि सरकारी गजेटमे ई फरिछाएल नै छल। दस बरख पहिने भेल जनगणनामे ओकर जातिक आगू "बंसोर'' वा "पलिहा'' टा लिखल छल। दोसर कागजमे धर्म "हिन्दू' आ राष्ट्रीयता "भारतीय''। ओकर सभक संख्या कम छलै। ओकर समांगक कोनो लोक पार्टी वा सरकारमे नै छल। ओइसँ मोहनदास एतए मजाक आ ठट्ठाक विषय बनि गेल छल। ऊँच जातिक धनीक लोक ओकरा देखैत आ पुछैत छल, "तोहर नोकरी कहिया लागि रहल छौ रे मोहना?'' कियो ओकरा सलाह दैत छलै जे विजय तिवारीक महिसवारी सम्हारि ले। कमसँ कम खाइ-पिबैले तत्ता-सिहर तँ नै हेतौ। कस्तूरी सेहो मौज करतौ। साडी-सैंडिलक दिक्कत नै रहतौ।''

कियो-कियो तँ ओकरा लेनिन नगर जा कऽ बिसनाथक पएर पकडि कऽ ओकर घरक चाकरी करबाक सुझाव दैत छल। मोहनदास गामक पैघ लोककँ देखिये कऽ रस्ता बदलि लै छल। ओ ओकरा देखये कऽ दूरसँ घुमि जाइ छल।

एहनो नै छल जे ओकरा लऽ कऽ गामक लोककँ सहानुभूत नै छलै। सत तँ ई छै जे बेसी लोक ओकरा लऽ कऽ चिंतित छल। कोनो-नै-कोनो तरहे ओकर मदति करऽ चाहै छल। मुदा ई ओ लोक छल जे अपने कतेको तरहक संकट आ विपदामे बाझल छल। एकरामे सँ ककरो कत्तौसँ ऊपर धरि पहुँच नै छलै। ओ सभ अप्पन घाम आ अप्पन-अप्पन नोरक संग ऐ कालमे चुपचाप जीबैबला लोक छल।

घनश्याम एहने लोकमे एकटा रहए। जातिक कुर्मी रहै। मुदा ओ गरीब नै रहए। तीस बीघाक खेती छल। बैंकमे किस्तपर ओ ट्रैक्टर लेने छल। शाक-सब्जी आदि उगाबैक अलावा ओ अप्पन ट्रैक्टर किरायापर उठा रखने छल। तखनो सभ मास साढ़े सात हजारक किस्त कटायब ओकरा मुश्किल होइल छलै। खेतमे उपजैबला अनाज आ दोसर फसलक दाम बाजारमे नै रहि गेल छलै। लग-पासक गाम बलहराक बिसेसर जे ग्रामीण बैंकसँ कर्ज लऽ कऽ सोयाबीनक खेती केने छल, दू मास पहिने अप्पन खेतकँ नीलामीसँ बचाबै लेल बिजलीक खुट्टापर चढि नांगट तारसँ सटि कऽ मरि गेल छल। छोटका किसान आ जोन-मजदूर गाम छोडि-छोडि शहरक दिस भागि रहल छल। घनश्याम सेहो परेशान रहैत छल।

ओइ दिन मोहनदासकँ कनी जूडी चढल छलै। दिन भरि सूप-टोकरी बुनाय आओर बड राति धरि पलियामे पानि पटाबैक बाद ओ एत्ते थाकि गेल छल जे बिना खाएल-पीएल सुति गेल छल। भिनसरे उठल तँ देह गरम छलै। परछीमे पटाएल छल तखने घनश्याम आबि गेलै। ओ अपना संगमे मोहनदासक साढ़ू गोपालदासकँ सेहो पकडि कऽ आनने छल। दुनू मोहनदाससँ कहलक जे ओकर चिन्हार एकटा लोक भेट गेल जे ओरियंटल कोल माइंसक जी.एम. (जनरल मैनेजर) ए.के. सिंहकँ जानैत अछि। ओ मोहनदाससँ कहलक जे ओ एखन तुरत हाथ-मुंह धो कऽ तैयार भऽ जाए, अगला बससँ ओतए चलबाक छै। घनश्याम आ गोपालदास दुनू उत्साहमे छल। ओ सभ कहलकै जे आइए पहुँचब ऐ लेल जरूरी छै किएक तँ परसू सँ जी.एम. एक मासक छुट्टीमे बाहर जा रहल छै। गोपालदास अप्पन झोरासँ मोहनदासक पहिरबा लेल एकटा पैंट आ एकटा शर्ट सेहो कीन कऽ आनने छल। ओ हसैत कहलक, "लिअ, एकरा पहिर लिअ! बुढबा बडदक पोथा सन मैनेजर लग चेहरा लटका कऽ नै जाउ।" मोहनदास जूडीमे हँसए लागल।

ओरियंटल कोल माइंसक जनरल मैनेजर एस.के. सिंहसँ भेंट करबामे कोनो दिक्कत नै भेलै। गोपालदासक पैंट आ बुश्शर्ट मोहनदासक भीतर नव आत्मविश्वास भरि देने छलै। ओ जी.एम. कँ सभटा खिस्सा बतौलक जे कोना 18 अगस्त, 1997 कँभर्ती परीक्षामे ओ नोकरी लेल सलेक्ट भेल छल आ पाँच कैंडिडेटक

लिस्टमे ओकर नाम सभसँ ऊपर छलै। ओइ दिन ओ अप्पन सभटा सर्टिफिकेट आ कागच दफ्तरमे जमा कऽ देने छल मुदा ओकरा लग कहियो नियुक्ति पत्र नै एलै आ आब कोना बिछिया टोलाक बिसनाथ ओकर नामसँ पिछला पाँच बरखसँ एतए नोकरी कऽ रहल छै आ डिपो सुपरवाइजर बनि दस हजारसँ ऊपर दरमाहा लऽ रहल छै। मोहनदासकेँ घनश्याम कहि कऽ राखने छल जे ओ जी.एम. केँ ओइ दिनुका घटना नै बताबै, जहिया ओ कोलियरी अप्पन कागज मांगै लेल आएल छल आ भरती दफ्तरक बाबू सभ ओकरा मारने छलै आ फेर बादमे लेनिन नगरमे पुलिसक दरोगा विजय तिवारी आ बिसनाथ ओकरा धमकी देने छलै। ऐ लेल मोहनदास एतबेपर रुकि गेल। ओकर गपक समर्थन ओतए बैसल घनश्याम आ गोपालदास सेहो केलक।

जनरल मैनेजर एस.के. सिंह केँ लऽ कऽ ई प्रसिद्ध छल जे ओ बड़ सोझ अफसर अछि। धुरफंदीबला लोकक संग जौँ ओ रहितो अछि तँ ऐ लेल जे ओकरा महग दारूक हिस्सक छै। नै तँ ओ एत्ते सोझ छै जे ओ नै तँ केकरो अधलाह कऽ सकैत अछि, नहिये केकरो नीक।

मुदा जी.एम. मोहनदासक सभटा गप सुनि कऽ ओरियंटल कोल माइंसक वेलफेयर ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तवकेँ ऐ मामिलाकेँ जांचैक आदेश देलक आ कहलक जे अगला मास जखन ओ छुट्टीसँ घुरताह, तखन धरि हुनका जांच रिपोर्ट भेट जेबाक चाही। मोहनदास एस.के. सिंहक एहि रूखसँ एतेक भावुक भऽ गेल जे बेर-बेर ओकर आँखि नोरा जाइ छलै। ओ मोने मोन सतगुरू कबीर आ मलइहा माइक नाम जपि रहल छल।

अगिला हफ्ता जांच भेल। वेलफेयर ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तव लेनिन नगरक फ्लैट नंबर ए बटा एगारह पहुँचल। बिसनाथकेँ एक-एक गपक जानकारी पहिनेसँ छलै। ओकर तार सभ जगह फिट छलै। पछिला पाँच बरखसँ ओ लेनिन नगरमे

मोहनदास नामसँ रहि रहल छल ताइसँ ओ लेनिन नगरमे मोहनदासक नामसँ जानल जाइत छल। ए.के. श्रीवास्तव जकरासँ पुछैत छल जे फ्लैट नंबर ए बटा एगारहमे रहैबला लोकक की नाम छै तँ सभ कियो एक्के जवाब दैत छल, "मोहनदास।'' ओ सेहो पछिला चारि-पाँच बरखसँ जकरा मोहनदास नामसँ जानैत छल आ जकरा लेल ओ वर्कर्स वेलफेयर फंडसँ लोन सेहो सेंक्शन केने छल ओ "मोहनदास' माने बिसनाथ छल। फेर ओइ दिन जी.एम. क चैंबरमे जकरा ओ देखले छल जे अपनाकेँ मोहनदास कहि रहल छल, ओकरा देखि कऽ ओकर मोनमे कत्तौ-नै-कत्तौ संदेह भऽ रहल छलै जे एहन लखा दै बला लोक ग्रेजुएट कोना भऽ सकैत अछि? अप्पन साढू गोपालदासक कपड़ा पहिर लेलाक बादो एत्ते बरखक बेरोजगारी, मेहनत आ अभावसँ मोहनदासक चेहरा आ समुच्चा देहक हुलिया एहन बनि गेल छलै जे एक नजरिमे ओ बेमार, बताह आ अनपढ नजर आबैत छल। इंक्वायरी ऑफिसर श्रीवास्तवक मन बेर-बेर कहैत छल जे भऽ सकैत अछि जे मोहनदास बनल लोक डिपो सुपरवाइजर मोहनदास नै हुअए मुदा कियो आर हुअए मुदा ई जे अपनाकेँ मोहनदास हेबाक दाबी कऽ रहल अछि ओ सेहो कत्तौसँ मोहनदास नै लगैत अछि।

बिसनाथ जबरदस्त व्यवस्था कऽ के राखने छल। अप्पन फ्लैटमे ओ श्रीवास्तवजीक खूब सत्कार केलक। अप्पन कनियाँ अमिताकेँ ओ लो कट ब्लाउज आ नीचाँ सारीमे शर्बतक ट्रे लऽ कऽ ड्राइंग रूममे आबै लेल कहि देने छल। लेनिन नगर मार्केटमे एम्हर खुजल शिल्पा ब्यूटी पार्लरमे जा कऽ अमिता अप्पन फेशियल करौने छल। ओ शर्बतक ट्रे टेबुलपर राखैत मुस्कुराइत छ्ल जखन श्रीवास्तवजीकेँ ओ नमस्ते केलक आ कहलक, "सरिता दीदीकेँ संगमे नै आनलिऐ सर?'' तँ एकाएक ओतुक्का वातावरण आत्मीय, घरेलू आ ऐंद्रिक भऽ गेलै। इंक्वायरी ऑफिसरक नजरि बेर-बेर अमिताक खुजल ढोढीपर जाइत छल। टीवीपर तखन दिल्ली-मुंबइ मे चलैबला फैशन शो कार्यक्रमक समाचार चैनल नर-बड देखल जाइत छल। मुदा एतए तँ एकदम्मे जिंदा मॉडल जेहन स्त्री आगू ठाढ छलै। ई समाचार नै मुदा एकटा सत छलै।

"ई हमर कनिया अछि सर!'' बिसनाथ नमकीन बिगजी श्रीवास्तवजी दिस बढबैत कहलक-"कस्तूरी!'

"नाम कोनो पुरान स्टाइलक नै लगैत अछि?'' इंक्वायरी ऑफिसर ठाम टेबुल पर नमकीनक राखल प्लेटसँ एकटा बिसकुट उठबैत मुस्कियाइत कहलक।

अमिताकेँ हँसी लागि गेलै।

"ई की अछि सर जे ज्योतिषी पिताजीसँ कहने छल जे मीन राशिवाली लडकीकेँ अप्पन बाजैबला नाम सेहो राशि बला राखबाक चाही...! तखन फल होइत छै। तइसँ हमहूँ सेहो कहलिऐ...चलू कोनो गप नै! राखि लैत छी।''

"ओह! तँ कस्तूरी अहाँक राशिबला नाम छी?'' इंक्वायरी ऑफिसर आब अमितासँ गप्प कऽ रहल छल। "अच्छा तँ बाजैबला नाम की छी अहाँक?'' ओकर हँसीमे आत्मीयताक घनत्व लगातार बढि रहल छलै।

अमिताक चेहरापर असमंजसक डरीड बनऽ लागलै। एक पल लेल ओ चुप रहि गेल। बिसनाथ ऐ गपकेँ तत्काले बुझि गेल।

"खूब छी! आब नाम बताबैमे कथी लेल लजाइ छी कस्तूरी!" बिसनाथ ठहाका लगौलक-"चलू, हमहीं बता दैत छी!... सर हिनकर बाजैबला नाम छन्हि अमिता!... अमिता भारद्वाज। घरमे सभ यएह कहै छन्हि।''

इंक्वायरी ऑफिसर श्रीवास्तव हंसै लागल।

"लेडिज कँ लाज नै हुअए तँ नीक नै लागैत छै। कनीटा किछो तँ लेडिजपना बनल रहबाक चाही आकि नै!...चलू कस्तूरीजी हम अहाँकँ अमिताजीए कहब! कोनो ऑब्जेक्शन तँ नै अहाँकँ?''

"नै सर! एक्को रत्ती नै!" अमिता फुदकि उठल।

"मुदा सत गप तँ ई अछि जे जखन कियो हमरा अमिता कहैत अछि तँ लागैत अछि जे ओ हमरे घर दिसका अछि।''

अमिता एकटा बडका सांस भरलक, "ऐ इलाकामे अप्पन सन किछु लागिते नै छै! बैकवर्ड छी हम सभ! बोर भऽ जाइत छी हम सभ।''

"एखन डेवलप हैमे टाइम लागत। ओना प्रोग्रेस तँ बड छै एम्हर। दू बरख पहिने की छल एतए?' श्रीवास्तवजी सहज भऽ रहल छल। "अहाँकँ टाइम कोना पास होइत अछि एतए, लेनिन नगरमे?''

"बस भऽ जाइत अछि कोनो तरहे। किट्टी पार्टी भऽ जाइत छै। एक-दू कमेटे डालि देने छी, गरीब मजदूरक भलाइ लेल। सोशल सर्विसमे मन लागि जाइत अछि।''

"नीक अछि, नीक अछि। सरिताकँ सेहो बड शौक छै सोशल सर्विसक। अहाँ आएल करू हमरा दिस। सरिताकँ सेहो इनवाल्व करू अपना सँ।'' श्रीवास्तवजी बिसरि गेल छल जे ओ एतए कोन काज लेल आएल छल।

बिसनाथक बांहि फूलि गेलै। मौका सही छलै। ओ बाजल, "देखू सर, ई लेनिन नगर एहन कालोनी छै जतए पड़ोसिये पड़ोसीक दुश्मन अछि। कियो ककरो हंसी-खुशी आर बढैत देखिये नै सकैए। आब यएह बिन-बातक बात। आर किछो नै भेटलै तँ पकडि आनलक ककरो दू-चारि दाना फेंक कऽ आ कऽ देलक शिकाइत। हम जानैत छी ककर कारस्तानी छिऐ ई। जातिवाद बेसी पसरि रहल छै आइ-काल्हि। ई सभ आब माथपर बैसत। हम बुझै छी जे ककर कराएल छै ई सभटा खेल मुदा जाए दियौ। साँचकेँ आँच की? अहाँ अपन इंक्वायरी निष्पक्ष भऽ कऽ करू।''

इंक्वायरी ऑफिसर डायरी निकाललक आ पुछलक,

"फादरक की नाम छी अहाँक?''

"बाबूजी! ओ बाबूजी! कनी बैसकीमे आबि जाउ!'' बिसनाथ जोरसँ चिकरल आ फेर मुस्कुरा कऽ कहलक,

"देखू संजोगे छै जे माय-बाबूजी दुनू काल्हि एतए आएल छथि। अचार सभ बनल रहै। पहुँचाबैक बहन्ना चलि आएल, बेटा-बहुकेँ देखबा लेल! हमर बल्दियत अहाँ हमर फादर-मदरसँ पूछि लियौ।''

"हम तँ जाइत छी।'' अमिता कहलक, "ट्रेडिशनल फैमिली अछि हमर।'' ओ उठि कऽ भीतर चलि गेलि।

नगेंद्रनाथक पाछाँ ओकर कनियाँ रेणुका देवी सेहो ड्राइंग रूममे आबि गेलि। तिलक चंदन देखि कऽ इंक्वायरी ऑफिसर श्रीवास्तवजी अपन सोफासँ उठि कऽ हुनका नमस्कार करबासँ अपनाकेँ रोकि नै सकल। बड विनम्रताक संग ओ पुछलक, "अप्पन-अप्पन शुभ नाम बता दिअ अहाँ दुनू गोटे। असलमे कागजी कारवाइ छै। पूरा तँ करैए पड़ैत छै।''

नगेंद्रनाथ एक्को पलक देरी नै केलक, "हम्मर नाम छी काबादास।'' ओ कुरताकेँ गरमे सँ खींच कऽ माला निकालि बाजल- "ई तुलसीक माला जहियासँ धारण केने छी, तहियासँ तुलसीदासक चौपाइ हम्मर ओढना-बिछौना अछि। "दास'' नाम हम तहियेसँ जोडि राखने छी।...आ ई अछि हमर कनिया पुतलीबाइ। मोहनाक महतारी।" रेणुका देवी मूडी डोला कऽ हँ कहलक।

ऐ तरहे इंक्वायरी पूरा भऽ गेल। ओरियंटल कोल माइंसक वेलफेयर ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तव अप्पन जांचमे पेलक जे मोहनदास बल्द काबा दास, ग्राम

पुरबनरा, थाना आ जिला अनूपनगर, मध्यप्रदेश कँ लऽ कऽ उठाओल गेल सभटा आपत्ति निराधार अछि। ओ पुष्टि लेल पुरबनराक सरपंच छत्रधारी तिवारी आ जिला जनपद सदस्य श्यामला प्रसादक कएल गेल तस्दीकक कागज सेहो रपटक संग नत्थी कऽ देलक जे ओकरा बिसनाथ देने रहै।

बिसनाथ आ अमिता माने मोहनदास आ कस्तूरीक आग्रहपर श्रीवास्तवजी दुपहर धरि ओतए विश्राम केलन्हि, साँझमे बियर आ बादमे व्हिस्की सेहो ओतए पिलन्हि, सामिष आहारमे देशी मुर्गा आ जखन ओ राति एगारह बजे अप्पन नबका "मारुति जेन'' सं ओतएसँ बिदा भऽ रहल छल, तखन बेर-बेर अमिताकँ "कस्तूरीजी'' संबोधित करैत अप्पन घर आबैक लेल आ अप्पन वाइफ सरिताकँ समाज सेवामे इन्वाल्व करैक आग्रह कऽ रहल छल।

मुदा नशाक बादो ओकर आँखि अमिताक ढोढीपर टिकल छलै जे रातिक अन्हारमे पैघ भऽ कऽ ओकर समुच्चा चेतनापर आच्छादित भऽ गेल छलै।

(ई सभटा गप ओइ कालक अछि जखन पंजाबमे लोक सेवा आयोगक चयन समितिक अध्यक्ष करोड़ो टका घूस खा कऽ, पूरा राज्यमे हजारो सरकारी अधिकारीक नियुक्ति कऽ देने छल आ सी.बी.आइ.क छापा मारल गेलापर फरार भऽ गेल छल। ...जखन पैघ-पैघ मंत्रीक आवासमे जेड सिक्योरिटीक भीतर सूटकेस आ नोटक बंडल पहुँचि रहल छल आ ओतए भारतक कोनो साधारण लोकक प्रवेश वर्जित छल।...जखन हरियाणाक एकटा आइ.जी. आओर उत्तरप्रदेशक एकटा कबीना मंत्री स्त्रीगणक संग अवैध संबंध आ हत्याक आरोपमे गिरफ्तार छल आ मुंबइमे एनकाउंटरसँ अंडरवर्ल्डक अपराधीकँ मारैबला "सुपरकाप'' सेहो माफियाक "सुपारी किलर"छल।...एहन काल जखन ऐ उपमहाद्वीपक प्रजाक भाषा हिंदी आ उर्दू कँ "राजभाषा' बनेलाक बाद प्रेमचंद, नेरूदा, फैज आ नजरूल-निराला कँ "राज-लेखक'' बनेबा लेल सत्ताधारी

राजनीतिक दलक लोक लेखकक मुखौटा लगा कऽ कमेटी बना रहल छल। ...एहन काल जखन दिल्लीक एकटा बेमार आ कर्जदार दर्जी अप्पन दूटा संतान आ अप्पन कनियाकेँ माहुर खुआ कऽ मारि देलाक बाद अप्पन हत्याक प्रयास करैत पकडल गेल, किएक तँ ओकरा लग आजीविकाक कोनो विकल्प नै रहि गेल छल। आब ओकरा जेलमे दऽ कऽ इंडियन पीनल कोडक धारा 302 आओर 309 लगा कऽ हत्या आ आत्महत्याक कोशिशक मुकदमा चलाओल जा रहल छल। ...आ...)

ओरियंटल कोल माइंसक इंक्वायरी कमेटीक रिपोर्टक बाद मोहनदास टूटि गेल। घनश्याम आओर गोपालदास जनरल मैनेजर एस.के. सिंहसँ एक बेर आओर भेँट कऽ हुनकासँ दोबारा इंक्वायरी करबाक मांग केलक मुदा ओ कहि देलकन्हि जे बेर-बेर ई नै हएत। हमर सभसँ सक्षम आ ईमानदार अधिकारी एकर जाँच केलक, दोबारा इंक्वायरीक आदेश दऽ कऽ हम हुनकापर संदेह पैदा नै हेबऽ दै चाहै छी। बादमे पता चलल जे बिसनाथ आ अमिता जनरल मैनेजरकेँ सेहो लेनिन नगरक अप्पन घरपर बजा कऽ खुआयब-पिआयब शुरू कऽ देने छल आ ओकर कनियाकेँ सेहो "समाज सेवा' आ किटी पार्टीमे इनवाल्व कऽ देने छल।

कोल माइंसमे अफवाह ईहो छल जे अमिता जनरल मैनेजर एस. के. सिंहकेँ फाँसि लेने छै आ आब रहरहाँ ओकर कार लेनिन नगरक फ्लैट नंबर ए बटा एगारहक बाहर मोहनदास, कनिष्ठ आगार अधिकारीक फाटकपर ठाड रहैत छै। खबर ईहो छल जे बिसनाथ सेहो हुनका पटा लेने अछि। सिंह साहेब ओहिनो मौज-मस्ती, खाइ-पीबैक शौकीन लोक छल।

मोहनदास टूटि कऽ छिडिया गेल। नै तँ ओ ठीकसँ खा सकैत छल, नै तँ सुति सकैत छल। कोनो काजमे ओकरा मोन नै लागै छलै। केहन-केहन प्रश्न आओर संदेह ओकर दिमागमे आबैत छल आ ओ बेचैन भऽ जाइत छल। ओकरा लागैत छल जे जत्ते लोक नौकरीमे छै वा ऊँच जगहपर बैसल छै, कारमे घूमि रहल छै आ जे नाम आ चेन्हसँ ओ सभ जानल जा रहल छै ओ असलमे कियो आर छै आ ओ जालसाजी कऽ कोनो आन मुखौटा लगा रखने छै। की लेनिन नगरमे कोनो असली लोक, अप्पन नाम, वल्दियत, पता-ठेकानक बचलो छै वा सभ बिसनाथे सन बहुरूपिया आ डुप्लीकेट छै? मोहनदासकेँ सेहो अपनापर संदेह हुअए लागल जे आखिर ओ के छी? मोहनदास वा बिसनाथ? आकि ओ एम.जी. डिग्री कालेजसँ बी.ए. क परीक्षामे जे डिग्री पौने छल ओ बिसनाथक लेल छल? की सभक संग अहिने होइत छै?

ओ घरक भितरे कोनमे सरकारी रोजगार दफ्तरसँ पठाओल गेल पुरनका पोस्टकार्डकेँ तकैत रहतिऐ। नै भेटलापर कस्तूरीसँ लडितिऐ-झगड़ा करितिऐ। ओ किछु बरख पहिलुका एहन कतेक पोस्टकार्ड ताकि कऽ निकालने छल, जइमे ओकर नाम आ पता लिखल छलै। ओ गाममे अप्पन लोककेँ ओ सभ चीज देखाबै छल। लोक सभ या तँ चुप रहैत छल वा ओकरा कोनो अफसर आकि नेतासँ भेंट करबाक सलाह दैत छल। मोहनदास जेहन हालमे छल, ओइमे एहन भऽ सकब संभव नै रहि गेल छल। पुरबनराक सरपंच पंडित छत्रधारी सेहो ई लिखित प्रमाणपत्र दऽ देने छल जे बिसनाथ पुरबनराक मोहनदास छी। ओकर बेटा विजय तिवारी तँ ओहिनो बिसनाथसँ मिलल छल। कस्तूरीपर ओकर नजरि सेहो छलै आ गिदरमारा जकाँ ओ अही इंतजारमे छल जे एक नै एक दिन टूटि कऽ मोहनदास ओकर पएरपर आबि खसत आ ओकर महिसवारीक काज सम्हारि लेत।

मोहनदास देखैत छल जे सरकार दिससँ ग्राम पंचायतकेँ जे हैंडपंप स्वीकृत होइत रहै ओ पैघ लोकक घरक आगू लागि जाइ छलै। शिक्षाकर्मीक नियुक्ति होइत छल, स्त्रीगणक लेल आंगनबाडी आ शिक्षिकाक पद निकलैत छल, इंदिरा आवास योजनामे घर बनाबै लेल अनुदान भेटै छल, इनार आ खेतकेँ ठीक करबा लेल ग्रामीण विकास विभागसँ टका अबैत छल, नेहरू रोजगार योजनामे शिक्षित बेरोजगारक लेल कोनो परियोजना आबैत छल तँ ई सभ ओइ लोकक बीच बँटि जाइ छलै। शारदा आ देवदास कहैत छै जे स्कूलमे दुपहरियामे जे खेनाइ बँटै छै ओइमे भेदभाव होइत छै।

ओइ दिन मोहनदास कतेक बरखक अप्पन नेनाक संगी बीरन बैगाक घर जा कऽ महुक दारू उतरबौलक आ सुगरक माउस बनबौलक। संगमे ओकर सादू गोपालदास सेहो छल। ओ चारि-पाँच लोक छल आ साँझ सात बजेसँ ओ सभ पिनाइ शुरू कऽ देलक। ढोल-मंजीरक इंतजाम करने रहय। ओइ दिन मोहनदासकेँ "विंध्यांचल हैंडीक्राफ्ट' बला सेठ बाँसक मालक भुगतान केने छल। बारह सए टका ओकरा भेटल छलै। गोपालदासक जेबी सेहो ओइ दिन भरल छल। घर तँ बीरन बैगाक छल मुदा दारू-माउसक सभटा खर्चा मोहनदास उठेने छल। बीरनक घरबाली आ ओकर बहिन महुक दारू एतेक नीक उतारै छल जे भीतपर जोरसँ रगडि दियौ तँ भक्कसँ आगि लागि जाइत छल।

मोहनदास ओइ राति अप्पन दोस्तक संग रास-रंगमे किछु क्षण लेल अप्पन सभटा दुख बिसरि गेल छल। बिहारी ढोल बजा रहल छल, परमोदी मंजीरा। मोहनदास मस्ती आ नशामे गाबि रहल छल:

"पता दइ जा रे, पता लइ जा रे...गाडीबला....

तोहर नामक, तोहरा गामक

पता दइ जा...

माया रे, मायाक ठाम बताबै मायाक आनथि खबरिया

काया माया दुनू नाच नचाबै, मायाक सगर नगरिया

पता दइ जा रे, पता लइ जा रे...गाड़ीबला...।'

बीरनक घरवाली जखन खाना परसलक तँ रातिक दू बाजि गेल छलै। भूख सभकेँ लागल छलै। तोरीक तेलमे मसल्ला-लहसून-पियाजु दऽ कऽ सुअरक मौस बीरनक बहिन रान्हने छल। रसक गंध पूरा आंगनमे पसरल छल। सभ लोक हाथमे रोटी लऽ कऽ खाइपर टूटि पडल। टोकना भरि भात सेहो बनल छल। मुदा मोहनदास चुप छल। गीत गबैत-गबैत ओकरा भीतर कतौ कोनो एकटा फाँस, जना एकबैग गरि गेल छल। ओकर टीस बेर-बेर ओकर छातीक भीतर जागैत छल, जकरा दबाबै लेल आ बिसरैले ओ आर लोकसँ बेसी पी लेने छल।

खाइत-खाइत एकाएक कौर हाथमे रोकि कऽ मोहनदास बेर-बेर सभकेँ देखलक फेर ओकर गरसँ हिचकी निकलऽ लगलै। ओ कूही भऽ कानऽ लागल। गोपालदास, बीरन, बिहारी, परमोदी सभ कियो एत्ते भूखाएल छल आ एत्ते दिनक

बाद एत्ते नीक खेनाइ भेटि रहल छलै जे ओकरा सभकेँ मोहनदासक ऐ काल कानब नीक नै लागै छलै। सभ कियो अप्पन मुँहसँ भरि-भरि कौर चबा रहल छल आ पुछैत सेहो जा रहल छल जे की भेल! पहिने खेनाइ किए नै खा रहल छिऐ?

"अहाँ के छी? अहाँक नाम की?'

"हमर नाम छी बीरन। बीरन बइगा।'' बीरनकेँ हंसी आबि गेलै।

"आ अहाँक बल्दियत? अहाँक बाप के छथि?'' मोहनदास फेर पुछलक।

"हमर बापक नाम डिंडवा बैगा अछि।'' बीरन हँसैत जवाब देलक। अहाँकेँ महुक दारू चढि गेल अछि।

सब हँसऽ लागल। मोहनदासक आँखि लाल भऽ गेल। ओ हाथक कौर छिपलीमे दऽ देलक आ गरजि कऽ बाजल:

"हौ बीरन, हौ परमोदी...हम के छी? सत सत बाजू? हमरा बुरबक नै बनाउ। अहाँ सभकेँ मलइहा माइक किरिया!''

"अहाँ छी मोहनदास! अहाँक बाप काबा दास आ माइ पुतलीबाइ!''

बीरन अप्पन अइंठ हाथ मोहनदासक छातीपर गड़ाबैत जोरसँ जवाब देलक। सभ कियो हँसऽ लागल। मोहनदास कनी काल चुपचाप बीरनकेँ निङहारैत रहल, फेर बेरा-बेरी सभकेँ ताकऽ लागल। ओ अप्पन शंका मेटाबऽ चाहै छल जे ओ सभ असली लोक अछि वा कियो आर अछि? कनी-कनी ओकरा लागै छल जे ई सभ ओकरे सन ठकाएल गेल असली लोक अछि। एकरा सभकेँ धोखा देल गेल छै। अन्तर मात्र एतबे जे ओ ऐ रहस्यकेँ बुझि गेल अछि आ एकरा सभकेँ एखन धरि नै पता चलल छै।

मोहनदास अप्पन नेनाक संगी-साथीकेँ बताबऽ चाहै छल जे अहाँ सभ कियो सरकारी दफ्तरमे, शहरक ऊँच-ऊँच बिल्डिंगमे आ पैघ-पैघ बंगला-कोठीमे, कोइला खदान-कारखानामे आ लेनि नगर, गांधीनगर, अंबेडकर नगर, शास्त्रीनगर जेहेन कालोनीमे जा कऽ पता करू जे कतौ ओतए अहाँक नाम, बल्दियत आ पता-ठेकानाक कियो दोसर फर्जी जालसाजी तँ नै बैसल अछि, जे अहाँक हक छीन लेने अइ। मुदा निशाँक बादो ओकरा लागि रहल छल जे एहन गप कहलापर ई सभ कियो ओकरासँ कहत जे अहाँपर ठर्रा निशाँ बेसी चढि गेल अछि।

बीरन, परमोदी, गोपालदास, बिहारी सभ कियो खाइमे लागल छल। बीरनक घरवाली सितिया आ ओकर बहिन रमोली सेहो आबि गेल छल। ओ दुनू सेहो महु पीबि रहल छल आ चुहुलक जवाब चुहुलसँ दऽ रहल छल। सभ कियो हँसि-बाजि, खा-पी रहल छल। मुदा मोहनदास सभसँ फराक, भीतक कोनमे बोतल लऽ कऽ बैसि गेल छल आ हिचकीक बीच कबीरदासक पद गेबाक संग पीब सेहो रहल छल।

भोरक चारि बाजि गेल छल जखन ओकर संगी ओकरा लादि-टांगि कऽ घर धरि पहुंचौलक। कस्तूरी पहिल बेर अप्पन साँयक ई हालत देखले छल। ओ गोपालदास आ बीरनपर कबदय लागल। मुदा जखन गोपालदास ओकर तरहत्थीपर एक हजारसँ ऊपर टका राखलक आ दुखी भऽ कऽ कहलक, "हम कतेक रोकलहुँ जे मोहना नै पी...नै पी मुदा ई नै मानलक। ई टका राखि लिअ। एकर जेबीसँ बाहर खसि पडल छल।" तँ कस्तूरी चुप भऽ गेल।

भोर सात बाजल छल जखन काबा दासकेँ खोंखीक दौरा पडल। कोनो आन्ही जना खोंखी भेल छल। थमैक नामे नै लऽ रहल छल। आन्हर पुतलीबाइ डोरी टूटल गाए सन चारू दिस खसैत-पडैत भसियाएल दौगि रहल छल। ओकर कानब पूरा बस्तीमे गूंजि रहल छलै। कस्तूरी सेहो जागि गेल आ मोहनदासकेँ हिला-हिला कऽ जगेबाक कोशिश कऽ रहल छल।

मुदा ओ महुक नशामे धुत्त पडल छल आ उठबाक नाम नै लऽ रहल छल। कस्तूरी डोलमे पानि लऽ कऽ आएल आ ओकरा मोहनदासक ऊपर ढारि देलक। मोहनदासक आँखि खुजल। ओ एतेक लाल छल जे ओकरामे खून हेल रहल छल। ओकर नशा नै उतरल छलै। कस्तूरी चिकरि कऽ बाजल, "उठियौ...यौ! डाक्टरकेँ लऽ कऽ अबियौ! बाबूकेँ खोंखी भऽ रहल छै!''

गामसँ लोक-वेद आ स्त्रीगण-नेना सभ आबऽ लागल छल। देवदास आ शारदा डरायल अप्पन बाबा काबाक खाट लग ठाढ छल। काबाक गर जना फाटि गेल छलै आ ओइमे सँ खून आ मौसक थक्का सभ बेर खोंखीक संग बाहर निकलि रहल छल। धरतीपर चिट्टा-मट्टाक धारी लागल छल। गिद्धा मांछीक झुंड ओकर चारू कात भिनभिनाइत घूमि रहल छल।

लोक मोहनदासकेँ उलटा-पुलटा रहल छल आ ओकरा जगाबैमे लागल छल। बड मुश्किलसँ मोहनदास हाथ टेक कऽ कनी टा उटंगा भेल आ खून जेहन लाल आँखिसँ चारू दिस भकुआएल चोन्हराएल देखऽ लागल। ओ केकरो चिन्ह नै सकै छल। ओकर नजरि कतौ स्थिर नै भऽ रहल छल। एकाएक ओकर ठोढपर हँसी एलै। ओ अप्पन आँखिपर जोर लगा कऽ रमइ कक्काकेँ चिन्ह गेल। ओ गरसँ टूटल अवाज निकाललक, "कक्का, हम के छी? हमर नाम की अछि कक्का! हमरा कहू कक्का, हमरा बतबियौ?'' आ ओ बेदम भऽ कऽ ओइ ठाम ओंघरा गेल।

गामसँ आएल स्त्रीगणक कानब आ चिकरबाक हल्ला उठल। पुतलीबाइक चिकरब सभसँ ऊँच छल। कनी काल सभ स्त्रीगण जना कोनो लयमे कानै लागल।

काबा दास मरि गेल। ओकर खाटक नीचाँ राखल बाँस आ कचियापर माँछी भिन-भिन करै लागल।

काल्हि अदहा राति धरि ओ टोकरीक लेल कमची छीलैमे लागल छल। काल्हि दुपहरमे बजारक विन्ध्याचल हैंडीक्राफ्ट्ससँ तीस टोकरी आ पच्चीस सूप बनाबैक आर्डर भेटल छलै।

ओइ भोर करीब साढ़े सात बजे कस्तूरीक कोठरीमे बिलैया झपट्टा मारलक आ अलोपी मैनाक जोड़ाकेँ खा गेल। मादा मैनाक पेटमे नब अंडा आएल छल। ओकर नोचल पाँखि आ खूनक दाग कोठरीक माटिक जमीनपर बचल रहि गेल छल। कस्तूरी एक्के दिन पहिने गोबरसँ ओकरा निपने छल।

ओइ दिन मोहनदासकेँ किछु नै बुझल भेलै जे ओकर बाप काबा दासक दाह-क्रिया कोना भेलै, ओकरा ओसारपर नशामे बेहोश छोडि कऽ गाम-बिरादरीक लोक काबाक लाशकेँ श्मशान धरि लऽ गेल, ओकर माए पुतलीबाइ कोनो तरहेँ काबाक खाटपर माथ पटकैत रहल आ बाँस, पथिया, कमची, पटिया, लोटा आ कचियासँ ओकर खून धाबैत-धुआबैत कानि-कानि कऽ गाबैत रहए, छोट-सन देवदास कोना

अप्पन बाप मोहनदासक बदला अपनेसँ अप्पन बबाक चितामे आगि देलक आ ओकर नेनाक संगी बीरन बैगा ओकर किरिया-करम केलक!

मोहनदासकेँ किच्छो पता नै। गोसाईं कस्तूरीसँ पाँच सए टका सुतारलक, पाँच सए जंगलक फारेस्टगार्ड लऽ लेलक। ओ पतेरासँ काबाक चिता लेल सुख्खल लकडी बिछै लेल नै दऽ रहल छल। कस्तूरी लग ओ सभटा टका खत्म भऽ गेल जे गोपालदास ओकरा देने छल।

मोहनदासक गरसँ फोंफ कटबाक ध्वनि लगातार निकलि रहल छल। एकाध बेर ओ अप्पन आंखिकेँ खोलि, चारू कात एहन तरहेँ देखतियै, जना ओ कोनो नब आ अनचिन्हार ठामपर आबि गेल छै आ फेर ओ सुति जाइत छल। ओ नीन छल वा फेर महुक दारूमे यूरिया वा लैंटिनाक पात मिला कऽ उतारल शराब छल वा सुगरक मौसमे कोनो छूति लागल छल। मुदा एहन हैतियै तँ ओइ राति ओकरा संग खाइ-पीबैबला बीरन, परमोदी, बिहारी, सितिया, रमोलीक संगो एहने हेतियै। ओ सभ कियो तँ ठीक छल आ काबाक मरलापर लकडीक जोगाडसँ लऽ कऽ खांड़ा गाम जा कऽ गोसाईंकेँ बजाबै आ सभटा कर्म निपटाबैमे तँ वएह सभ कियो लागल छल। मोहनदासक नशा साधारण नै छलै।

"दारू दिमाग धरि चढि गेल छै। दहीमे जीरा-जमैन धरिकेँ कंठक भीतर दियौ।'' बीरन बैगा सलाह देलक।

कस्तूरी बाटीमे जीरा-जमैनक घोर लऽ कऽ मोहनदास लग आएल आ गोपालदास ओकर माथकेँ अप्पन कोरामे राखि कऽ जखन ओकर मुँह खोलय लागल तँ मोहनदासक आँखि खुजलै। ओ कस्तूरी आ गोपालदासकेँ एना देखलक जना ओ ओकरा चिन्हैत नै छलै। ओ बड कमजोर आ खरखरायल अवाजसँ कस्तूरीसँ पुछलक-

"अहाँ के छी बाइ? आ हम के छी? हमरा बताबियौ?' एकर बाद ओ कस्तूरी दिस ताकि-ताकि कऽ मुस्कियाइत नीक अवाजमे गाबऽ लागल-

"अहाँ बिलसपुरहिन छी,

हम छी रैगडिया,

हमर-अहाँक जोडी, सजल अछि बड बढिया....।"

कस्तूरीसँ रहल नै गेलै। ओ कूही भऽ कानऽ लागल। शारदा सेहो अप्पन पिताक हाल देखि कऽ कानऽ लागल। गोपालदास अपनाकेँ संयमित करैत कस्तूरीक हाथसँ बाटी लऽ लेलक आ मोहनदाससँ कहलक, "लिअ, ई काढ़ा पीब लिअ।''

मोहनदास कतेक रास गहीर आँखिसँ गोपालदासकेँ किछु काल धरि देखलक आ फेर कोनो बच्चा सन बाटी मुँह लगा कऽ सभटा काढ़ा गटागट पीब गेल। शाइत ओकर दिमागक कोनो कोनमे अपनाकेँ ठीक करबाक सेहन्ता एखनो दम मारि रहल छल। कस्तूरी आ गोपालदासकेँ आफियत भेलै। जौं दवाइ असर कऽ जाए तँ ठीक नै तँ डाक्टरकेँ बजाबऽ पडत।

मोहनदास फेर सुति गेल।

मोहनदास अप्पन घरक ओसारपर ओनाहिते पाँच दिन आ चारि राति लगातार सुतल रहल। गाममे ई गप पसरि गेल जे ओकर दिमाग सनकि गेल छै आ ओ केकरो चिन्हैत नै अछि, एतए धरि जे अप्पन कनियाँ कस्तूरी आ बच्चा धरिकेँ

नहि। कियो कहतिऐ जे महुक दारूमे यूरियाक फँटक कारण एहन भेल , कियो कहतिऐ जे ओ ओरियंटल कोल माइंसक कालोनी लेनिन नगरमे लू लागि गेलासँ खसि गेल छल, तखनेसँ ओकर स्मृति चलि गेल। विजय तिवारी ई गप पसारि देलक जे ओकर कबरा कुत्ता मोहनदासकेँ धोखासँ काटि लेलकै, आब देखैत रहब, जहिना पानि बरसत ओ कुकुर जना भूकत। जतेक मुँह छल ओतेक गप छल। मुश्किल देवदास आ शारदाक संग सेहो छल। ओ स्कूल जाइत छल तँ ओतए मास्टर आ बच्चा ओकरा सँ पुछैत छल, की अहाँक बाप बताह भऽ गेल अछि? अहाँक बाप अहाँकेँ चिन्हैत नै अछि की? की ओ सुतल रहैत अछि? तखन फेर ओकर दातमनि-सफाइ आ हगब-मूतब कोना होइत छै?

एकटा अफवाह इहो पसरल जे एक राति मोहनदास एकाएक उठल आ अप्पन बाप काबा दासक कचिया लऽ कऽ घरक सभ लोककेँ काटै-मारै लेल दौगल। ओ तँ कस्तूरी ओकरासँ ओझरा गेल आ आन्हर पुतलीबाइ ओकरा रस्सीसँ बान्हि देलक, नै तँ पता नै की भऽ जैतिऐ।

(ई सभ घटना ओइ कालक छी जखन "इंडिया शाइन' कऽ रहल छल आ वित्तमंत्री आ विश्वबैंकक दावा छल जे सन 199० सँ शुरू भेल 5.8 प्रतिशतक आर्थिक विकासक अखुनका विकास दर जौं एतेक साल भरि आओर बनल रहल तँ इंडिया अमेरिका बनि जाएत किएकि ऐ सँ अदहा विकास दरपर पचास बरखक भीतर अमेरिका अमेरिका बनि गेल।

...वएह काल जखन हमरा अस्थि-यक्ष्मा भेल छल आ हमर रीढक हड्डी एल.आर-4 आ 5 गलि गेल छल। हम नौ मास ओछाओनपर रहि आ कांधारमे बमियानक पहाडमे बुद्धक मुस्काइत मूडीकेँ फिरकापरस्त मोटर लांचर-मिसाइलसँ तोडि रहल छलौं...

...वएह काल जखन दिल्लीमे गरीब मजदूरक चारि सालक घामसँ, 19 हजार टन लोहा आ 4 लाख 57 हजार घन मीटर धरतीकेँ खोदि कऽ एशियाक सभसँ पैघ, दुनियाक सभसँ महग आ आधुनिक मेट्रो रेल बनाओल जा रहल छल...।...जखन साढ़े तीन हजार बान्हक लेल पाँच करोड़सँ बेसी आदिवासी आ दलितक घर-खेत-बाडी पानिमे डुमा देल गेल छल...। जखन देशक 2० करोड लोक लग पिबाक लेल पानि धरि नै छलै...आ साठि करोड लोक लग हगै, नहाबैक आ मूतैक लेल जगह नै छलै..

...जखन सरकारमे साझीदार वामपंथी पार्टी पेट्रोलक दाम नै बढबै लेल दिल्लीमे हल्ला मचा रहल छल, जखन हिन्दुस्तानक पूरा आबादीक 9० प्रतिशत माने लगभग 92 करोड लोककेँ पेट्रोलसँ किछु लेनाइ-देनाइ नै छल...

...जखन राजस्थानक गंगानगर आ टोंकक एक दर्जन गरीब किसानकेँ पुलिस ऐ लेल गोली चला कऽ मारि देने छल किएकि ओ अप्पन सुखाइत फसिलकेँ पानि पटाबैक लेल पानि मांगैत पत्थरबाजीपर उतरि गेल छल...

...वएह काल जखन अब्दुल करीम तेलगी कतेक हजार करोड टकाक जाली टिकट बेचले छल आ ऐ घोटालामे देशक कतेक पैघ अफसर आ नेता मिलल छल!...वएह काल जखन हिन्दीक एकटा बूढ आलोचक एक अफसरकेँ मुक्तिबोध आ दोसर खुर्राट दोसर अफसर केँ प्रेमचंद आ फणीश्वरनाथ रेणु घोषित कऽ रहल छल...जखन पोखरणमे बम फूटि गेल छल आ कारगिलक बाद सद्भावना बस चलाओल जा रहल छल...

...वएह काल जखन पुरबनराक कठिना धारक पानि एकटा कागजक कारखानाक लेल लकडी सड़ाबैक बान्हमे बदलल जा रहल छल आ ओ सभटा हिस्सा पानिमे डूमि गेल छल, जतए मोहनदास पलिया बना कऽ तरबूज, ककडी, खरबूज, सजमनि उगाबै छल...

...आ जतए एक राति "हु तु तू...तू तू..' करैत ओ कस्तूरीक छपाकसँ कठिनाक धारमे खसि कऽ प्रेम केने छल आ नक्षत्रक सलेटी आभामे कएल गेल ओइ उद्दाम सहवासक स्मृतिक रूपमे ठीक नौ मासक बाद शारदाक जन्म भेल छल...)

मुदा असलमे मोहनदास नै तँ पागल भेल छल, नै ओकर स्मृतिमे कोनो खोट छल। ओकर चेतनामे जे घाव लागल छल ओ लगभग एक हफ्ताक अखंड नीन, मूर्छा वा नशा काल चुपचाप भरि गेल। जखैन ओ जागल तँ ओ फेर पहिलुके जेहन मोहनदास छल, जे नीक तरहेँ बुझैत छल जे असली मोहनदास वल्द काबा दास, साकिन पुरबनरा, थाना आ जिला अनूपपुर, मध्यप्रदेश वएह रहै, जे आठ-दस बरख पहिने शासकीय एम.जी. कालेजसँ बी.ए. कएने छल आ मेरिटमे दोसर ठाम हासिल कएने छल। असली मोहनदास वएह छल जकरा नौकरी ऐ द्वारे नै भेटल छल किएकि ओकरा लग कोनो पैरवी, चिन्हल-जानल तिकडम आ घूसक लेल टका नै छलै। ओ कोनो गिरोह वा माफियाक सदस्य नै छल, किएकि ओ ओइ जातिक आ वर्गक नै छल, जै जाति-वर्गक लग तागति छल। ओकरा नीक जकाँ बूझल छलै जे ओकरा संग आ ओकरा जेहन असंख्य लोकक संग लगातार पिछला कतेक सालसँ धोखाधडी आ छल कएल जा रहल छल मुदा ओ किछु कऽ सकैमे असहाय छल।

मोहनदासकेँ ई सेहो नीकसँ बुझल छलै जे बिछिया टोलाक बिसनाथ बल्द नगेंद्रनाथ, जे लेनिन नगरमे मोहनदास विश्वकर्मा बल्द काबा दास बनि कऽ ओरियंटल कोल माइंसमे कनिष्ठ आगार अधिकारीक नौकरी करैत दस हजारसँ बेसी दरमाहा लऽ रहल छल, ओ कत्तौसँ मोहनदास नै छल। ओ एकटा बदमाश, कट्टर जातिवादी जालसाज अछि, जकर तागति एतेक बेसी छलै जे मोहनदास ओकर आगू कोनो लाचार-बीमार मूस सन छल।

मोहनदास बुझै छल जे ओकर बाप माने असली काबा दास, जे टी.बी.क रोगी छल आ जे खौंक संग खूनक कै करैत बाँसक टोकरी, सूप आ पटिया बनाबै छल, ओ मरि गेल छल मुदा एकरा साबित कऽ सकब ओकर वशमे नै छलै, किएकि बिसनाथक बाप नागेंद्रनाथ काबा दासक रूपमे बिछिया टोल आ लेनिन नगरमे अखनो रहै छल आ ओकरा सभ लग एकर दस्तावेजी सबूत छलै।

मोहनदास चुप रहब शुरू कऽ देने छल। ओ कम्मे बजैत छल। कठिनामे बान्ह बनि गेलासँ ओकर रोजी-रोटीक एकटा आसरा छिना गेल छलै तइसँ ओ बजारमे इमरानक "स्टार कंप्यूटर सेंटर' पर टाइपिंग, प्रिंट आउट आ जीरॉक्सक काज सीखब शुरू कऽ देलक। ओकर बेटा देवदास, सडकक कात "दुर्गा ऑटो रिपेयरिंग वर्क्स'' मे पंचर लगाबए आ पाना-पेचकसक लमरा-पहुँची करएबला हेल्परक काज करए लागल छल। मासमे सए-दू सए धरि ओ कमा लैत छल आ अप्पन पढबाक खर्चा अपनासँ उठाबऽ लागल छल। शारदा तँ दू बरखसँ बिछिया टोलमे बिसनाथक बच्चाकेँ सम्हारैक काज धेने छल आ घरक काज छोडि देने छल किएकि रेनुका देवी लेनिन नगर जाए अप्पन वर बिसनाथ लग रहए लागल छल। शारदाकेँ पछिला एक बरखसँ बजारमे "ऐश्वर्या ब्यूटी पार्लर'' मे नोकरी भेट

गेल छल। ओतुक्का शिखा मैडम ओकरासँ बड प्रेम करै छल आ ओकरा पढबामे मदति करैत छल। ओ कहैत छल-

"शारदा हम अहाँकेँ एक दिन एहन मॉडल बनाएब जे अहाँ मिस वर्ल्ड बनि जाएब आ टी.वी. पर आच्छादित भऽ जाएब!'' आठ बरखक शारदा सत्तेमे रातिमे एहन सपना देखऽ लागल छलि।

कस्तूरी गाम-मोहल्ला मे खेत-मजूरी कऽ फसलक ओगरबाहीक काज कऽ लैत छल। हँ, मोहनदासक माँ पुतलीबाइक दुनू ठेहुन काबा दासक मरलाक बाद पाथर भऽ गेल छल आ ओ चलि-फिरि नै सकै छल। दिशा-फराकत लेल सेहो घिसियाइत-घिसियाइत पछवडिया कातक बारी धरि जाइत छल आ फेर घुरि कऽ परछीक कोनमे ओछाओल पटियापर बैसि जाइत छल। ओकर आँखिमे अन्हार गहींर भऽ गेल छल।

"स्टार कंप्यूटर सेंटर' मे हर्षवर्धन सोनीसँ मोहनदासक भेंट भेल। हर्षर्धन ओतए किछु अदालती कागजातक फोटोकापी आ किछु टाइपिंगक काज करबा लेल गेल छल। ताधरि मोहनदासक टाइपिंग स्पीड ठीक-ठाक भऽ गेल छलै आ ओ कम्मे गलती करैत छल। ओतए मोहनदास अपनेसँ हर्षवर्धनकेँ अप्पन सभटा खिस्सा बतौलक।

बीसम सदीक उत्तरार्धमे जेहन विचारधारा बला पार्टीमे हम लगभग बीस बरख धरि काज कएने रही, हर्षवर्धन सोनी ओही पार्टीमे छल। ओकर जीवन कतेक तरहक दुख-संघर्षसँ आ उत्थान-पतनसँ भरल छल। माध्यमिक स्कूलक एकटा

मास्टरक बेटा हर्षवर्धन शुरूहेसँ संवेदनशील आ स्वतंत्र विचारक छल। ओकर पैघ भाए श्रीवर्धन सोनी बी.इ.क परीक्षामे टॉप केने छल आ इंजीनियरिंगक डिग्रीक बादो, छह बरख धरि खींचल बेरोजगारीसँ हताश भऽ, पाँच बरख पहिने एक राति अप्पन कोठलीक सीलिंग फैनमे रस्सीक फंदा लगा कऽ आत्महत्या कऽ लेने छल। बजारमे छोट-सन दुकान चलाबैबला बूढ बाप आ मिडिल स्कूलक मास्टरी करएवाली माँक बेटा हर्षवर्धन सोनीक मोनमे अप्पन भाइक आत्महत्याक घटना एकटा एहन गहींर घा छल जे पढै कालेसँ ओ छात्र आंदोलनमे भाग लिअए लागल छल। ओ दोसर जातिमे बियाह केने छल आ ओकर दंडमे ओकरा जातिसँ पैरछा देल गेल छल।

हर्षवर्धन सोनी एल.एल.बी. कऽ लेने छल आ अप्पन पार्टीक संग स्थानीय अदालतमे ओकालतक काज करैत अप्पन आजीविका चला रहल छल। ओ ओइ दिन जखन "स्टार कंप्यूटर सेंटर'' मे मोहनदाससँ ओकर खिस्सा सुनलक जे असलमे खिस्सा नै, एकटा असल जिनगीक सत्यक खेरहा छल, तँ ओ ऐ केसकेँ लऽ कऽ अदालतक शरणमे जएबाक फैसला केलक।

"अहाँ लग ऐ लेल कतेक पाइ यए?', मोहनदासक बेरंग, फाटल-चीटल, पैबंद लागल, कोनो जमानामे नील रंग रहल डेनिम पेंटकेँ तकैत हर्षवर्धन बाजल, "हम अहाँक केस लडब आ अहाँकेँ न्याय दिआएब।''

मोहनदासक आँखिमे चमक आबि गेल। ओकर दुब्बर-पातर देह एक-दू बेर थरथरायल। एक बेर तँ ओकरा विश्वास नै भेल जे कियो ऐ तरहेँ ओकर संग

दऽ सकैत अछि, फेर ओ बाजल, "हमरा संग ऐ काल अस्सीटा टका अछि। दू-चारि दिनमे चालीसक जुगाड़ कऽ देब। इमरानसँ सए-दू सए पेशगी भेट जाएत।''

हर्षवर्धन बुझि गेल जे मोहनदास बेसीसँ बेसी चारि-पांच सए टका जोगाड़ मास भरिमे कऽ सकैत अछि जखन कि अदालतमे केस दाखिल करबामे कुल खर्च करीब पाँच हजार टका छल। एकक बाद दोसर सरकारक ओ आर्थिक नीति, जे देसक महानगरकेँ अमेरिका बना रहल छल, ओही देशक गाम आ पिछड़ल इलाकाकेँ कंगाल बना कऽ ओतए असंख्य इथियोपिया, रवांडा आ घानाकेँ जन्मा रहल छल।

दिल्ली-लखनऊ, मुंबई-भोपाल, कोलकाता-पटनामे जखन सभ राजनीतिक पार्टी आ विचारधाराक प्रोफेसर चालीस-पचास हजार वेतन लऽ रहल छल आ छोटसँ छोट फ्री-लांसर धरि दू पन्नाक रपटपर पाँच सएसँ हजार टका कमा रहल छल, तखन गाम आ छोट कस्बामे, मेहनति कऽ काज करएबला मोहनदास जेहन लोककेँ चारि सए टका जोगाड करबामे मास लागि जाइ छै।

हर्षवर्धन बुझि गेल जे मोहनदासकेँ अदालतसँ न्याय दियाबैक लेल ओकरा अपनेसँ टका जमा करए पडतै। ओ एक हजार टका अपना लगसँ लगेलक, दू हजार किछु दोस्तसँ मांगलक आ बाकी टका लायंस क्लबक चैरिटी फंडसँ डोनेशनमे लेलक, माने संक्षेपमे जे जोगाड भऽ गेल। तँ ऐ तरहेँ आखिरीमे मोहनदासक मामला गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी), जे सिगरेट नै पीबै छल आ बड दुब्बर छल, जकर गालक हड्डी छुरी सन छल आ उभरल छल आ जकर माथपर असंख्य टेढ-टूढ डडीर छलै, क अदालतमे दाखिल भऽ गेल।

मोहनदास बल्द काबा दास जाति विश्वकर्मा, साकिन पुरबनरा, थाना आ जिला अनूपपुर, म.प्र. बनाम विश्वनाथ बल्द नगेंद्रनाथ, जाति ब्राह्मण साकिन बिछिया टोला, हाल-वाशिन्दा ए/11, लेनिन नगर, ओरियंटल कोल माइंस, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ।

मामिलाक दाखिल हेबाक संगे अदालत ओरियंटल कोल माइंसक महा-प्रबंधक एस.के. सिंह आ वेलफेयर ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तव संग कतेक आओर प्रबंधक श्रेणीक अधिकारीकेँ तलब केलक आ ओकरासँ अदालतक आगू ई साक्ष्य पेश करै लेल कहलक जे ओ प्रमाणित करए जे ओकर कंपनी ओरियंटल कोल माइंसमे जूनियर डिपा. ऑफिसरक पदपर पछिला कतेक बरखसँ काज करैबला मोहनदास विश्वकर्मा असल मे बिछिया टोलाक विश्वनाथ बल्द नगेंद्रनाथ कियो आन नै अछि?

न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध अनूपनगर आ दुर्गक जिलाधीशकेँ आदेश देलक जे ओ ऐ मामिलाक शासकीय जाँच करए आ दू सप्ताहक भीतर अदालतक सोझाँ अप्पन जांचक रिपोर्ट पेश करए।

बीड़ी पियैबला न्यायिक दंडाधिकारी जी.एम. मुक्तिबोधक ऐ आदेश आ अदालतक सम्मनसँ ओरियंटल कोल माइंसमे हडकंप मचि गेल। स्थानीय अखबारमे एकर खबरि छपल-

"असल'" मोहनदास के?''

"एन.डी.टी.वी.'' आ "आज तक'' चैनलक स्थानीय संवाददाता क्रमश: अनिल यादव आ खालिद रशीद ऐ मामलाक बाइट दिल्ली आ भोपाल पठेलक मुदा समाचार "राष्ट्रीय स्तर'' आ "अखिल भारतीय परिव्याप्ति'' क नै भऽ सकल, कारण जे ऐ मे दिल्ली-भोपाल-लखनऊ क कोनो पैघ नेता वा अफसरक नाम शामिल नै छल, तइसँ ई प्रांतीय वा राष्ट्रीय "खबर'' वा "सूचना'क रूपमे प्रसारित नै कएल गेल।

(...ई ओइ कालक ब्यौरा अछि, जखन विधु विनोद चोपड़ाक फिल्म "मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस.'', बॉक्स ऑफिसपर सुपर हिट भऽ गेल छल। जॉर्ज बुश आ टोनी ब्लेयर, दुनू अप्पन-अप्पन देशमे दोबारा चुनाव जीति कऽ सत्तामे आबि गेल छल, अमेरिकाक जहलमे भिखमंगा फकीर जेहन दाढी आ नाक, झाइसँ भरल चेहराबला सद्दाम हुसैन अरबीमे कविता लिखऽ लागल छल आ मंडल आयोगक सिफारिश लागू करैबला भारतक पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंहकेँ कैंसर भऽ गेल छल, किडनी खराब छल। ओ जे.पी. जकाँ डायलिसिसपर छल आ दिल्लीक एक कोनमे कैनवासपर चुपचाप चित्र बना रहल छल...

...वएह काल जखन पटनाक कलेक्टर बाढ राहतक करोड़ों टका मारि कऽ नपत्ता भऽ गेल छल आ नव सरकार फिल्म सेंसर बोर्डक पुरान अध्यक्षकेँ हटा कऽ जकरा नव अध्यक्ष बनौने छल, ओ बालीवुड फिल्मसँ बाहर लखाह दैत रहल ओइ दृश्यपर सेंसरक कैंची चलेबापर विचार कऽ रहल छल, जइमे एकटा खानदानी नवाबक जिप्सीसँ शिकारमे मारल गेल कालिया मृग, दूटा खरगोशक लाश, सर्च लाइट आ बंदूकक बरामदगीक शॉट छल।

...ई वएह काल छल जखैन लगातार पंद्रह बरखसँ हिंदी भाषाक संबंधित पदक चयन समितिक सभ सदस्य, खाली पदपर अप्पन जमाय, बेटा, बेटी, समैध, चापलूस, सेवककेँ निर्लज्जतासँ नियुक्ति कऽ दैत छल आ ओइपर नै कोनो सी.बी.आइ. इंक्वायरी होइल छल, नै राज्यसभा वा लोकसभामे कोनो सवाल उठैत छल...

...जखैन सभ सत्ताधारी पार्टी, मानव संसाधन मंत्रालय, पब्लिक सेक्टर भ्रष्ट कारखाना बनि गेल छल आ ई सभ विद्वान, शिक्षामित्र, समाजशास्त्री, साहित्यकार, बुद्धिजीवी, इतिहासकार, कलाकार, अध्यापकक उत्पादन कऽ रहल छल...

आ बच्चाक दिमागपर कब्जा करै लेल शिक्षा-संस्थानमे इतिहास आ पाठ्य¬पुस्तककेँ दोबारा-तिबारा लिखबाक राजनीतिक जंग चलि रहल छल...

...तखन भारत भ्रष्ट देशक सूचीमे...संसारमे 83म, परमाणु बम बनाबै बला देश मे 6अम, जनसंख्यामे दोसर आ भयावह गरीबीमे खाली बांग्लादेश टासँ ऊपर छल।)

हर्षवर्धन सोनी आ मोहनदास दुनूकेँ मुदा उम्मीद छल जे न्यायिक दंडाधिकारी जी.एम. मुक्तिबोधक अदालतमे दूधक दूध आ पानिक पानि भऽ जाएत। ऐ विश्वासक पाछाँ दूटा मुख्य कारण छल। पहिल तँ ई जे दंडाधिकारी बीड़ी पिबैत

छल आ ठेलाक कडक चाय सेहो। आ हुनका कोनो तरहक घूस वा लालचसँ भ्रष्ट नै कएल जा सकैत छल...

...आओर दोसर ई जे सत मोहनदास दिस छल किए तँ असल मोहनदास बी.ए. वएह छल।

"झूठक पएर-मूडी किच्छो नै होइत अछि! भिनसरेक इजोत सन सभ किछु साफ लखाह भऽ जाएत! जै हो मलइहा माइ! कृपा बनल रहए सतगुरू कबीर!''
 कस्तूरीक मौलाइल जिनगीमे आशाक एकटा खूब नव हरियर कोमल दूबि उगि रहल छल। पुतलीबाइक आँखिमे अन्हार तँ काबाक जेबाक बादेसँ बढि गेल छल मुदा परछीक कोनमे चटाइपर कोनो बूढ, पंखझरी चील सन बैसल ओ अप्पन कान लगातार कोनो भीतर कोठली दिस लगओने राखै छल।

आ एक दिन भिनसरे जखन मोहनदास अदालतक पेशीमे जएबा लेल बासि भात आ अल्लूक तरकारी खा रहल छल, तखने एकाएक पुतलीक खुशीसँ भरल बोल आंगनमे गूंजि गेल। ओकरा गरसँ जेना कोनो प्रसन्न चिडै बाजि रहल छल:

"हे...ऐ...कनियाँ! हे देवदास! कोठरीक भीतर ताकि कऽ देखियौ! लागैत अछि जे अलोपी मैना नबका घोंसला बनेने छै की? दौगू-दौगू...!''

मोहनदास जल्दी-जल्दी खाइमे लागल छल, जइसँ बेरसँ पहिने अदालत पहुँचि जाए किए तँ लोक कहैत छल जे बीडीक सुट्टा मारैबला जज टाइमक बड पाबंद

अछि। जौं पांच मिनटक बेर भेल तँ पिछला पेशीमे अगला तारीख दऽ कऽ अगला पेशी शुरू कऽ दैत छै।

जखन मोहनदास दिन भरि लेल, भरि पेट भात-तरकारीक कलेवा खा कऽ घरसँ बाहर निकलि रहल छल तँ पाछाँ ओकर आन्हर-बूढ़ चिडै सन माँ पुतली जोर-जोरसँ पुलकित भेल गाबि रहल छल:

"चोला तर जइ रामा...तन तर जइ रामा,

सत गुरु साखी ला...चोला तर जइ...

...चोला तर जइ'

अदालत मे ओरियंटल कोल माइंसक महाप्रबंधक एस.के. सिंह हाजिर नै भेल छल। हुनकर अर्जी वकील पेश कऽ देलक। कालयरीक वेलफेयर ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तव अप्पन इनक्वायरीक सभटा फाइल आ संगमे लागल सभटा दस्तावेज न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणीक अवलोकनार्थ हुनकर टेबुलपर राखि देलक। हर्षवर्धन सोनीक चेहरा उडल छलै किए तँ बिछिया टोलासँ जै तीनटा गवाहकेँ अदालतमे आबि कऽ साक्ष्य देबाक छल, जे मोहनदास नामक जे क्यो ओरियंटल कोल माइंसमे पछिला कतेक बरखसँ कनिष्ठ आगार अधिकारीक नौकरी कऽ रहल छल, ओकरा ओ सभ नेनासँ नीकसँ चिन्हैत छल जे ओ मोहनदास नै बिश्वनाथ अछि।

ओइ तीन गवाहमे सँ दूटा गवाह अदालतमे हाजिर नै भेल आ तेसर गवाह दिनेश कुमार साहू पलटी मारैत भरि अदालतमे तस्दीक कऽ देलक जे विश्वनाथ मोहनदास छी। ओ आंगुरसँ हर्षवर्धन सोनी आ मोहनदास दिस इशारा करैत ईहो कहलक जे ई दुनू गोटे मास भरि पहिने ओकर घर आएल छल आ ओकरासँ

कहलक जे जौं अहाँ हमर सिखायल बयान कोर्टमे दऽ देब तँ हम अहाँकेँ पाँच हजार टका देब।

न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध अगला सुनवाईक लेल एक मास बादक तारीख धऽ देलक। हर्षवर्धन आ मोहनदास दुनू स्तब्ध छलाह।

आब सभटा आस जिलाधीशक जाँच रिपोर्टपर लागल छल। मोहनदासकेँ न्याय जौं भेंट सकैत छल, तँ तखन जखन सत आगू आबतिऐ।
अगला पेशीमे दुर्ग आ अनूपपुर, दुनू जिलाक कलेक्टरक जाँच रिपोर्ट जखन अदालतमे पेश कएल गेल तँ हर्षवर्धन आ मोहनदास अवाक रहि गेल। ओइ जाँच रिपोर्टमे छल जे मोहनदास वल्द काबा दास, जूनियर डिपो ऑफिसर, ओरियंटल कोल माइंसक नाम आ शिनाख्तीकेँ लऽ कऽ उठाएल गेल सभटा आरोप निराधार अछि। दस्तावेज, आवश्यक साक्ष्य, परिस्थितिगत प्रमाण, कएकटा ग्रामीण आ पंचायत सदस्यसँ गपसपक बाद निर्विवाद रूपसँ ई सिद्ध होइत छल जे मोहनदास, मोहनदासे अछि, विश्वनाथ नै।

बादमे पता चलल जे विश्वनाथ ऐ बेर दुर्ग आ अनूपपुर दूनू जिलाक संबंधित पटवारीकेँ दस-दस हजार टका घूस आ दारू-मुर्गा देने छल। विजय तिवारी सेहो पुलिस गाडीमे बिसनाथकेँ बैसा कऽ पटवारीकेँ घूस पहुँचाबऽ लेल गेल छल। असलमे जेहन प्रशासनिक परिपाटी छल, ओइमे कलेक्टर माने जिलाधीश माने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेटक इंक्वायरीक असल मतलबे होइत छल संबंधित तहसील वा परगनाक पटवारीसँ जाँच।
जौं कोनो अदालत कलेक्टरकेँ कोनो जाँचक आदेश दैत छल तँ कलेक्टर नोट लगा कऽ ओइ आदेशकेँ अप्पन मातहत, संबंधित इलाकाक एस.डी.एम. केँ पठा दैत छल। एस.डी.एम. ओकरा तहसीलदार आ तहसीलदार ओकरा नायब तहसीलदारकेँ दऽ दैत छल। ऐ तरहेँ रेवेन्यू इंस्पेक्टर माने आर.आर. माने कानूनगोसँ भेल आखिरमे ओ आदेश पटवारी लग पहुँचि जाइ छल। माने आखिरमे पटवारी कलेक्टरक आँखि-कान आ नाक बनि जाइ छल।

ओइ राति जखन गाम बिछिया टोला आ पुरबनराक पटवारी कमल किशोरकेँ बिसनाथ आ विजय तिवारी दस हजार टकाक गड्डी देलक आ मैकडावल नंबर वन व्हिस्कीक संग बटर चिकेन आ मटन जींसक कबाब खुएलक तँ कमल किशोर पटवारी जमीनपर दुनूक पएरपर लोटपोट करए लागल।

"यौ, अहाँ सभक हुकुम हम कहियो टारब यौ?...एत्ते एमाउंटमे तँ हम सार मूसकेँ हाथी, खेतकेँ सडक आ बलगोविनाकेँ छह बच्चाक माए बना देब।" कमल किशोर पटवारी मगन भऽ कऽ नोटकेँ अप्पन झोरामे धऽ कऽ उडि रहल छल। ओ मैकडावल नंबर वनक पटियाला पैग एक घोंटमे गराक नीचाँ उतारलक आ ओतए ओकर सभका सोझेँ, बिना कत्तौ गेने, मामलाक सभटा तफ्तीश कऽ देलक आ पंद्रह मिनटमे मोहनदास बनाम विश्वनाथ मामिलामे जिलाधीश द्वारा पूर कएल गेल इंक्वायरीक पुख्ता रिपोर्ट सफेद कागजक एकटा पन्नापर तैयार भऽ गेल।

अर्थात अंग्रेजक गुलाम भारतपर शासनक लेल तैयार कएल गेल नौकरशाहीक ऐ बीझ खाएल लौह ढाँचामे, जे आजादीक साठि बरखक बादक आधिकारिक सरकारी दस्तावेज धरि विश्वनाथ वल्द नगेंद्रनाथ छल, केँ मोहनदास वल्द काबा दास बना देलक।

मोहनदास फेर टूटए लागल। ओ लगातार कबीरक जाप करैत छल। मलइहा माइक मढियाक ड्योढीपर ओ घंटो बैसल रहैत छल। मलइहा माइ मलाइ टाक भोग लगाबैत छल। सेहो बकरीटा दूधक मलाइक। ऊँच जातिक लोक ओकर मढियामे नै जाइत छल। ठाकुर, बनिया, बाभन, लालाक देवी-देवता दोसर छल। मलइहा माइक पूजाक काज ब्राहमण नै गोसाईं करैत छल। कहैत छै जे दलित-आदिवासीक संग भात-रोटी, बेटा-बेटीक संबंध बनाबैक कारण, जाति-पातिसँ निकालल गेल ब्राह्मण गोसाईं कहबैत छल।
मोहनदास खाड़ा गाम जा कऽ सिउनारायण गोसाईंकेँ बजौलक, ओकरा बीस टका आओर दालि-चाउर, नून, हरैद, चुदक, सीधा देलक। ओकरासँ ओ मलइहा माइक

पूजा करौलक आ शुद्ध बकरीक दूधसँ निकालल गेल पाव भरि मलाइक भोज चढ़ेलक।

ऐहि बीच एकटा घटना आर भऽ गेल। एक दिन भिनसर काल, जखैन कस्तूरी गामक दू-तीन टा मौगी संगे दिशा-फरकत करए लेल गेल, ओकरा सभकेँ जंगल-झाड़क पाछाँ कोनो हलचलक आभास भेलै। जेना कियो ओतए नुकाएल छै। कस्तूरी आइ-काल्हि अप्पन हिफाजत लेल हरदम कछनीमे कचिया खोँसि कऽ राखैत छल। ओकरा ऐ गपक नीकसँ आभास छलै जे दू बच्चाक माए बनि गेलाक बादो ओ एखन धरि गाममे सभसँ सुन्नर काठी आ चेहरा-मोहराक मौगी अछि। आओर कतेक दिनसँ गामक ठकुरान-बभान शोहादक नजरि गिद्ध जेहन ओकरापर गडल छै।

कस्तूरी उठि कऽ ठाढ भऽ गेल। ओ डाँरमे खोँसल कचिया निकालि कऽ हाथमे थाम्हि लेलक आ समधानल डेगसँ जंगल-झाड़ दिस बढ़ल। ओकर पाछाँ रमोली, सितिया, चंदना आ सावित्री छल।

"की छी...केकर भीतर हबस पैसल छै! निकल तोहर गर्मी निकालि दैत छी टटीबे! मुँहझडको।" कस्तूरी चिकरलक। बाँकी मौगी सभ सेहो बोन-झाँकुरकेँ घेरब शुरू कऽ देलक। सभक हाथमे एक-एक दिसा-फारकतबला लोटा छलै।

झाँकुरसँ फटाकसँ निकलि कऽ छत्रधारीक लड़का विजय तिवारी भागल। गंजी-जंघियामे ओकर चर्बी चढ़ल थुलथुल देह भागैत काल गोलमटोल तरबूज जेहन लखाह दऽ रहल छल। कस्तूरी किछु दूर धरि हाँसू तानि कऽ ओकरा दिस दौगल। रमोली, सितिया आ सावित्री गरियाबैत पोखरि दिसक लोटा खेंचि-खेंचि कऽ मारलक। दरोगा विजय तिवारी खसैत-पडैत लंक लऽ भागि रहल छल। मौगी सभ पाछाँसँ चिकरि रहल छल:

'यौ, टी.वी. बलाकेँ बजाउ, सीन खीचू।'

'दौड़ऽ हे दौगऽ! दरोगा कछियामे हगि रहल छै...'
ओइ दिन सच्चेमे विजय तिवारी डरि गेल छल जे कत्तौ मोहनदास अप्पन वकील हर्षवर्धन सोनी संग मिल कऽ टी.वी. आ अख़बारमे किछु अंट-शंट नै देखा-छपा दिऐ।

(ई सभ किछु ओइ दिनक घटना छी जखन समुच्चा एशियाक राजनीतिक इतिहासमे पहिल बेर एकटा भारतीय स्त्री कम्युनिस्ट पार्टीक पोलित ब्यूरोक सदस्य बनल छलि, एकटा दोसर स्त्री प्रधानमंत्रीक कुर्सी ठुकरा देने छलि......आ स्त्री, संसारक ओइ सभसँ प्रतिष्ठित जूरीक सदस्य बनि गेल छलि, जइमे ऋत्विक घटकक सुवर्ण रेखा वा कोमल गांधार वा शैलेंद्रक तीसरी कसमक स्क्रीनिंग धरि नै भऽ सकल छल......आ ओही काल जखन बगदादक अबू गरीब जेलमे एकटा अमेरिकी स्त्री ईराकी पुरुषकेँ नांगर कऽ ओकरा एक-दोसराक ऊपर लादि कऽ एकटा पिरामिड जेहन बना देल छल आ अमेरिकी झंडा लऽ कऽ ओकर ऊपर चढि गेल छलि......ओही काल जखन पावर सत्यमे जेंडरकेँ परिभाषित कऽ रहल छल!...ओइ काल जखन दिल्लीक धौलाकुआँ लग उत्तर-पूर्वक एकटा लडकीकेँ कारक भीतर खींच कऽ राजधानीक सभ वी.आइ.पी. सडकपर अढाइ घंटा धरि लगातार दिल्लीक पाँच पुरुष बलात्कार करैत रहल छल...आ इम्फालमे मनोरमाक बलात्कार आ हत्याक विरोधमे कृष्णक उपासना करएवाली कएक सए मैतेइ स्त्रीगण तामसमे आ हतास भऽ नांगट भऽ गेल छलि......ओइ काल जखन दूटा स्त्री सरदार सरोवरमे ४०.००० दलित आ आदिवासीक घर-जमीन-जायदादकेँ पानिमे डुमा दै बला योजनाक विरुद्ध लड़ाइ हारि गेल छल आ जलप्लावनमे वन्य प्राणी, वनस्पति, गाछ सभ किछु डूमि गेल छल......टी.वी.पर ओइ टटाएल स्त्रीगणक कानैत, हरल चेहरा लगातार लखाह भऽ रहल छल......वएह काल जखन हम दिल्ली छोडि कऽ वैशाली आबि गेल रही आ हमर छतसँ गाजियाबाद ओ झंडापुर साफ लखाह दैत छल, जतए ठीक पंद्रह बरख पहिने ओइ क्रांतिकारी कलाकार आ रंगकर्मीक हत्या भेल छल, जाकर नाम सफ़दर हाशमी छल...)

गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंधाधिकारी (प्रथम श्रेणी) क अदालतमे सभ गवाह, सबूत, जाँच रिपोर्ट एतए धरि जे दू-दूटा जिलाधीशक इनक्वायरी ई सिद्ध कऽ देलक जे बिसनाथे मोहनदास अछि। तखन जे गरीब सन आदमी मोहनदास हेबाक दावा कऽ रहल छल ओ के अछि?- एकर अदालतमे चलि रहल मामलासँ कोनो सोझ कानूनी संबंध तँ नै छलै। ओ एकटा अलग केस भऽ सकैत छल, मुदा से तखन जखन ओकर दरख्वास्त अदालतमे कोनो वकील वादी दिससँ दाखिल करए।

हर्षवर्धन सोनी तीन दिन, तीन राति धरि सुति नै सकल। ओ नीकसँ बुझै छल जे मोहनदास मोहनदास छी, मुदा एकरा प्रमाणित कऽ सकब लगातार कठिनेटा नै असंभव भऽ रहल छलै। ओ हमरा ई-मेल पठेलक:

"ई तँ हद छै! नै हमरा किछु खाएल-पीएल भऽ रहल अछि, नै रातिमे नीन आबैत अछि। ओम्हर मोहनदासक सेहो यएह हालत छै। सभ कियो बुझैत अछि जे असली मोहनदास यएह छी मुदा एकरा साबित कऽ सकब मुमकिन नै रहि गेल छै। की करी किछु सुझैत नै अछि। मोहनदास आ हमरा दुनू गोटेकेँ धमकी देल जा रहल अछि जे चुप भऽ कऽ बैसि जाउ....ऐ बीच पता चलल जे बिसनाथ रासबिहारी रायकेँ अप्पन वकील बनौने अछि। हुनका तँ अहाँ जनैत छियन्हि, सत्ताधारी पार्टीक बड पैघ नेता छथिन। वहु नगर निगमक अध्यक्ष छनि आ कतेक सरकारी-गैर-सरकारी संगठनक प्रमुख छथिन। मोहनदासक पक्षमे आब चारि-पाँच लोक गवाही दै लेल तैयार भेल अछि- बीरन बैगा, गोपालदास, बिहारीदास, रमोली, सितिया...मुदा ओकर सभ बगे-बानी एहन छै जे लागैत छै जे एहन गवाह तँ पचीस-पचासमे कत्तौ भेट जाएत। भिखमंगा लागैत अछि सभ गोटे। ...सोचैत छी हम न्यायिक दंडाधिकारीसँ सोझे भेंट कऽ कए देखिऐ। ओ बीड़ी पीबैत छथि आ किछु अजीबे सन लागितो छथि। जी.एम. मुक्तिबोध हुनकर नाम छन्हि। मराठी छथि मुदा हुनकर हिन्दी अद्भुत अछि। कोर्टक बाद सडकक कात रामदीनक ठेलापर कडक चाह पिबैत छथि। ...हम नोट केने रही जे ओ जखन अदालतमे मोहनदास दिस देखैत छथि तँ ओकर आँखिमे एकटा बेचैनी आबि जाइ छनि। हुनकर माथक एकटा नस उभरल छनि आ जखन ओ किछु

सोचैत छथि तँ ओ फुलि जाइ छनि।....हमरा डर लागले रहैत अछि जे कत्तौ कोनो दिन ओ नस फाटि ने जाए। हुनकर आँखिमे किछु एहन तँ अछि जना ओ कोनो जासूस वा खुफियाक आँखि हुअए जे कानि कऽ चुपचाप केकरो आत्माक भीतर धँसि कऽ ओकर सभ किछु पखारि सकैत अछि। ...सभ कहैत अछि जे हुनकर घरमे कतेक रास किताब छन्हि आ ओ तीन बजे राति धरि पढ़ैत रहैत छथि। एकटा विचित्र सन गप हमरा ईहो पता लागल जे जी.एम. मुक्तिबोध छथि तँ प्रथम श्रेणी दंडाधिकारी मुदा सरकार हुनकर पाछाँ सी.आइ.डी. लगा कऽ राखने छल...।'

कोनो दोसर बात नै देखि हर्षवर्धन एक तरहेँ जुआ खेलेलक। कोनो विचाराधीन मामिलाक संबंधमे भेंट करब, सेहो एहन जजसँ जे किछु रहस्यपूर्ण देखबामे लगैत अछि, एकटा खतरासँ भरल निर्णय छल। जौं जी.एम. मुक्तिबोध तमसा जेतथि तँ ओकर कैरियर बर्बाद भऽ सकैत छल। हर्षवर्धन सोनीक अतीत ओहिनो बड कठिनाइ, संघर्ष आ दु:खसँ भरल छलै, बेरोजगारीमे भाइक हताश आत्महत्या ओकर मनसँ कखनो एक्को पल लेल नै जाइ छलै। वकालत तँ खाली नाम मात्र लेल छलै। ओकरा लग बेसी वएह सभ अबैत छल जकर जेबीमे महग वकील करबा लेल टका नै होइ छलै। मोहनदासक मोकदमामे ओकरा किछु नै भेट रहल छलै, ऊपरसँ ओकरा पाँच हजार टका अपनेसँ जोगाड करए पडल छल। तकर बादो ओ न्यायिक दंडाधिकारीसँ भेंट करबाक खतरा लेलक।

हर्षवर्धनकेँ आश्वस्ति भेलै जखन अप्पन फ्लैटपर ओकरा देख कऽ गजानन माधव मुक्तिबोधक चेहरापर एहन भाव एलै जना ओकरा पहिनेसँ ओकर एबाक गप बुझल हुअए। जना हुनका पहिनेसँ पता छल जे हर्षवर्धन ओकरा लग अएबे करत। ओ एकरा लेल लकडीक एकटा पुरनका कुर्सी राखि देलक आ "बैसू! हम चाह बनाबैत छी!, कहि कऽ भीतर चलि गेल'।

हर्षवर्धन कोठलीमे नजरि दौगेलक। ओतए सभटा चीज बेतरतीब छल। कतेक किताब एतए-ओतए पसरल छल आ ओकरामे सँ कतेक पन्ना खुजल छल, जकर बीचमे पेंसिल, कार्ड आ गाछक पात खोँसल गेल छल। भऽ सकैत अछि जे किताबक ओ पृष्ठ ओकरा बड्ड पसीन हेतै आ ओ बेर-बेर ओकरा पढैत छल होएत। कोठलीक हालत देखि कऽ लागैत छल जे ओ एतए असगरे रहैत छथि। हर्षवर्धनकेँ पता लागल जे ओकर बदली अधिक काल ओइ आदिवासी आ पिछडल इलाकामे कऽ देल जाइत अछि, जतए एहन मुकदमा नै आबैत छै, जकरासँ कोनो पैघ लोक आ व्यापारीकेँ कोनो नुकसान भऽ जाए। हर्षवर्धनक आँखि ऊपर उठलै। भीतपर गाँधीजी आ मार्क्सक चित्र टांगल छल। एकटा कोनमे गणेशक प्रतिमा सेहो राखल छल। वाम भागक भीतसँ लागल बुकसेल्फ छल, जइमे कानूनक कतेक किताब राखल छल, जना ओकरा कतेक बरखसँ खोलले नै गेल हुअए।

जी.एम. मुक्तिबोध चाह लऽ कऽ आबि गेल छल। संगेमे एकटा छिपलीमे कनीटा बेसनक सेब छल। चाहकेँ मचियापर राखि कऽ मुक्तिबोध तख्तापर बैस गेलथि। चाह बड कडगर आ महोर छल। खूब औँटल आ भफाएल।

कतेक काल धरि कोठलीमे सुन-सन्नाटा रहल। हर्षवर्धनकेँ हिम्मत नै भऽ रहल छलै जे ओ ओकरासँ गप शुरू करितिऐ। सोझाँक भीतपर एकटा पुरान घडी छल जे चाभी भरलासँ चलैत होएत। मुदा लागैत छल जे कतेक कालसँ कियो ओकरामे चाभी भरनहिये नै अछि। ओ ठाढ छल। घरमे एकटा कलेंडर टांगल छल, जइमे माथपर मुरेठा बान्हल बाल गंगाधर तिलकक चित्र छपल छल। हर्षवर्धन देखलक जे ओ कलेंडर सन 1964 क अछि।

-हम जानैत छी जे (एकटा बड पैघ कतेक दूरसँ जा कऽ घुरैत साँस).... मोहनदासे असली मोहनदास अछि। न्यायिक दंडाधिकारीक अवाज जना कोनो गहींर इनार वा तरहरिमे सँ आबि रहल छल। बड रकम, मद्धिम अवाज। ओ चाहक एकटा बडका चुस्की भरलक। ओ घोंट आ स्वाद जेना ओकर माथक तनावकेँ कनी कम कऽ देलक।

"...आ ओ दोसर लोक फ्रॉड अछि। ओ सरासर इमपर्सोनेट कऽ रहल अछि। हमरा बुझल यऽ ओ विसनाथ वल्द नगेंद्रनाथ, जूनियर डिपो ऑफिसर छी जे ए बटा एगारह, लेनिन नगरमे अवैध ढंगसँ मोहनदासक आइडेंटिटी, चोरा कऽ रहि रहल अछि। ही इज अ चीट, अ क्रिमिनल। अ स्काउंड्रल!'

हुनकर बाजब बड पातर मुदा कोनो धातु जेहन धग्गड आ दृढ छल। ओ अप्पन जेबीसँ बीडीक बंडल निकालन्हि आ ओइमेसँ एकटा बीडी निकालि कऽ पहिने ओइमे उल्टा फूक मारलक, फेर सलाइक काठीसँ ओकरा पजारि कऽ एकटा गहींर सन सुट्टा मारलक।

हर्षवर्धनकँ लागल जेना ओ अप्पन कालसँ बाहर, कोनो टाइम मशीनपर बैसल, कोनो दोसर कालमे पहुँचि गेल अछि। ओ बाजल, "हम यएह तँ बताबैक लेल अहाँ लग आएल रही। मुदा अहाँ कोना जानि लेलिऐ जे असली मोहनदास के छिऐ।'

"एकरा जानब तऽ बड हल्लुक अछि। जौं अहाँ लग कनियो संवेदना आ विवेक हुअए'', मुक्तिबोध बाजल आ ओ चिंतित भऽ कऽ किछु सोचऽ लागल। ओ बीडीक एकटा खूब गहींर सोंट लेलक। "हम तीन रातिसँ लगातार जागि रहल छी। आइ कांट स्लीप फॉर अ मोमेंट! ...इट इज अबसर्ड एंड अ वेरी टेंस एक्सपीरिएंस।' हुनक आंगुरक बीचमे फँसल बीडी मिझाइबला छल। हुनकर आँखि जेना कत्तौ आर नै, अपनाकँ देखऽ लागल छल।

"दि होल सिस्टम हैज टोटली कोलैप्सड...! जस्ट लाइक ट्विन टॉवर्स इन न्यूयार्क...नाइन इलेवन!...नाउ व्हाट इज लेफ्ट फॉर दि सबजेक्ट्स एंड पुअर इज अनार्की एंड कैटॅस्ट्राफ!! (सभटा व्यवस्था ढहि गेल अछि, न्यूयार्कक जोड़ा मीनार सन...सितम्बर एगारह!...आब प्रजा आ गरीबक आगू अराजकता आ विनाश टा बचल छै।) हमरा लगैत अछि, पूँजी आ सत्ता...कैपिटल एंड पावरकँ एकटा

एकदम्मे नव रूपमे आगू अछि। मोहनदास इज बिइंग डिनाइड ऑफ अ सिंपल इसेंशियल लीगल जस्टिस, किए तँ ओ न्यायकेँ कीनि नै सकत! ओह!'' गजानन माधव मुक्तिबोधक माथक नस फूलि रहल छल। ओकर आंगुर थरथरा रहल छल। ओ बेचैन भऽ कऽ ठाढ भऽ गेल छल। ओ मिझाएल बीडीकेँ देखलक आ जेबीसँ सलाइ निकालि कऽ ओकरा फेर सुनगाबै लागल।

"सभटा सिद्धांत खत्म भऽ सकैत छै।...कहियो बड परिवर्तनकारी लागैबला बौद्धिक आ दार्शनिक संरचना बदलैत कालमे खाली वाग्जाल, अनर्गल बकवास आ ठकक प्रवचनमे बदलि सकैत छै। इतिहासमे एहन बेर-बेर भेल छै। मुदा...'

ओ बीडीक एकटा गहीर सोंट भीतर खींच कऽ साँस कनी काल लेल रोकि लेलक। लगैत छल जे ओ अप्पन चढैत बेचैन साँसकेँ निकोटीनक धुआँसँ शांत करबाक कोशिश करैत छल। ओकरा खोंखी भऽ गेलै। बामा हाथसँ ओ अप्पन छातीकेँ किछु काल धरि दबा कऽ राखलक, फेर खरखर अवाजमे बाजल, "मुदा मनुखक भीतर एकटा चीज एहन अछि जे कहियो कोनो जुगमे कोनो तरहेँ सत्तासँ मेटाएल नै जा सकैत अछि!...आ ओ अछि न्यायक आकांक्षा! डिजायर फॉर जस्टिस इज इनडिस्ट्रक्टबल...! इट इज आल्वेज इम्मोर्टल...! न्यायिक आकांक्षा कालातीत अछि!'
ओ अप्पन मध्यमा आ तर्जनीक बीच फसल बीडीकेँ खिडकीसँ बाहर फेकि देलक। ओ मिझा गेल छल।

हर्षवर्धन सोनी मंत्रविद्ध छल। ई केहन लोक अछि। एहन लोककेँ न्यायिक दंडाधिकारीक तरहेँ आइक कालमे देखब कोनो असंभव स्वप्न छल। एकटा दुर्लभ फैंटेसी।

ओ बेचैनीक संग कोठलीमे टहलि रहल छल। एकाएक ओ ठाढ भऽ गेल आ ओकर आँखिमे एकटा गहींर आत्मीय हँसी कोनो तरल द्रव्य सन झिलमिल करै लागल।

"अहां जाउ, हर्षवर्धन!...डोंट वरी मच! हमरा पता अछि जे अहूँ पछिला कतेक रातिसँ सुतल नै छी। हमरे सन'! ओ बड जोरसँ एकटा ठहक्का लगेलक आ बाजल, "पार्टनर, बेफिकिर भऽ कऽ सुतू। स्लीप लाइक अ डेड हॉर्स। नाउ, आइ हैव गॉट विद समथिंग'।

एकर बाद ओ हर्षवर्धन लग आएल। ओकर कान्हपर ओ हाथ राखलक। हर्षवर्धनकेँ लागल ओकर हाथमे कोनो भार नै छै। कागज, फूल, स्वप्न आ भाषासँ बनल हाथ।

गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी रकमसँ हर्षवर्धनक कान लग फुसफुस कऽ बाजल, "हमरा लग एकटा पावर अछि। बस एकटा पावर। दैट इज... सीक्रेट जूडीशियल इंक्वायरी। हम अपना सँ ई जाँच करब। गोपनीय न्यायिक जांच। जस्ट लीव इट टु मी'।

हर्षवर्धन सोनी जखन मुक्तिबोधक फ्लैटसँ बाहर आएल तँ ओकरा लगलै जे ओ कोनो बड पैघ स्वप्नक बीहडिसँ बाहर निकलि कऽ अप्पन काल आ यथार्थमे घुरि रहल रहए। ओतए जतए मोहनदास अछि, बिसनाथ अछि, ओ सेहो अछि आ आइक यथार्थ अछि।

चारि दिन बादे विश्वनाथ आ ओकर बाप नागेंद्रनाथकेँ जी.एम. मुक्तिबोध न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी) क आदेशपर जालसाजी, धोखाधडी, फरेब, चोरी आ गबनक जुर्ममे इंडियन पीनल कोडक धारा 419/420/464/467/ आ 403 क तहत गिरफ्तार कऽ जेल पठा देल गेलै। अदालत ओरियंटल कोल माइंसक जनरल मैनेजर एस.के. सिंह केँ आदेश देलक जे ओ मोहनदास विश्वकर्मा उर्फ विश्वनाथ, जूनियर डिपो ऑफिसरक विरुद्ध तुरंते कार्रवाइ कऽ कार्रवाइक सूचना दू हफ्ताक भीतर अदालतमे पेश करए। एकर अलाबे ऐ पूरा प्रकरणमे प्रत्यक्ष आ परोक्ष रूपसँ सम्मिलित आ लिप्त अधिकारी आ कर्मचारीक विरूद्ध उपयुक्त विभागीय जाँच आ कार्रवाई शुरू कएल जाए। जौं ओरियंटल कोल माइंस ऐ

सभक विरूद्ध न्यायिक आपराधिक प्रक्रियाक अंतर्गत अपराध काएम करए चाहैत अछि तँ ई न्यायालय एकर अनुशंसा करैत अछि।

हरबिर्रो मचि गेल। अखबारमे नकली मोहनदासक गिरफ्तारीक खबर प्रमुखतासँ छपल। ओरियंटल कोल माइंसे टा नै मुदा कतेक खदान आ सार्वजिनक उपक्रम अधिकारी, यूनियन नेता आ कर्मचारीक होश उडि गेलै। चारू दिस भागा-दौरी छल। लेनिन नगर, गाँधीनगर, अंबेडकर नगर, जवाहर नगर, शास्त्री, नेहरू आ तिलक नगर जेहेन सुव्यवस्थित कालोनीमे हजारो बिसनाथ जेहन लोक छल जे कोनो दोसर पहचान, अधिकार, योग्यता आ क्षमताकेँ चोरा कऽ कतेक बरखसँ बैसल छल आ कएक हजारमे दरमाहा लऽ रहल छल।

बादमे मालूम भेल जे गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी), अनूपपुर, (म.प्र.) अप्पन आपातकालीन सुरक्षित न्यायिक अधिकारक इस्तेमाल कऽ अपनेसँ ऐ मामिलाक गोपनीय जाँच कएले छल।

ओइ राति बडी काल धरि ओ पढैत रहल। भोरमे ओ नौ बजे ड्राइवरकेँ फोन कऽ अप्पन सरकारी गाडी मंगौलक, जकर इस्तेमाल ओ अदालतेटा जएबा आ ओतएसँ घुरबा लेल करैत छल। दोसर फोन ओ एच.एस. परसाई (हरिशंकर परसाई) केँ कएलक, जे पब्लिक प्रॉसिक्यूटर छल। तेसर फोन ओ एस.बी. सिंह (शमशेर बहादुर सिंह) केँ कएलक, जे अनूपपुरक एस.एस.पी छल। ई सभटा अधिकारी अप्पन-अप्पन कर्तव्यनिष्ठा आ ईमानदारीक लेल जानल जाइत छल। चारिम फोन ओ हर्षवर्धन सोनीकेँ कएलक आ ओकरासँ एतबेटा बाजल- "पार्टनर, स्टैंप पेपर लऽ कऽ तुरत आबि जाउ'!

शमशेर बहादुर सिंह बतौलक जे न्यायिक दंडाधिकारीक गाडी सीधा लेनिन नगरमे मटियानी चौक लग, ए/11 नंबरक फ्लैटपर रूकल। बिसनाथ ओइ काल विजय तिवारीक संग कोनो नेताक सरोकारमे बाहर गेल छल। फ्लैटमे ओकर कनियाँ कस्तूरी माने रेनुका देवी टा छल, जे चिटफंड, सोशल सर्विस, किटी पार्टी आ फाइनेंसक धंधा करैत छल। न्यायिक दंडाधिकारी ओकरासँ सोझे ओकर

बल्दियत आ ओकर नैहरक पता पुछलक। कस्तूरी मैडम माने रेनुका देवी सरकारी बत्तीनला गाडी आ एत्ते लोककेँ देखि कऽ घबड़ा गेल छल।
एकर बाद न्यायिक दंडाधिकारीक गाडी लेनिन नगरसँ निकलि कऽ मिर्जापुर-बनारस जाए बला सडकपर दौगय लागल। ठीक पैंसठि किलोमीटर बाद ई गाडी आवाजपुर गाम दिस जाएबला कच्ची सडकपर उतरि गेल आ आध घंटा बाद लंकापुर नामक गाममे एकटा भव्य पक्काक मकानक आगू ठाढ भऽ गेल। न्यायिक दंडाधिकारी ओतए ओइ मकानमे रहैबला लालू प्रसाद पांडे आ ओकर कनियाँ जय ललिता पांडेसँ दूटा सवाल केलक। पहिल ओकर आ ओकर बेटा-बेटीक की नाम छै। आ दोसर ओकर जमाय सबहक नाम आ पता। एकर बाद ओ पब्लिक प्रासिक्यूटर एच.एस.परसाईकेँ निर्देश देलक जे ओ हर्षवर्धन सोनीसँ स्टैंप पेपर लऽ कऽ ओकर हलफनामा तैयार कऽ लिअए।
न्यायिक दंडाधिकारीक गाडी एकर बाद ग्राम पंचायतक सरपंचक घरपर रूकल, जतए सरपंच आ किछु गवाहक बयान दर्ज कएल गेल।
एस.एस.पी. शमशेर बहादुर सिंह जोरसँ ठहक्का लगा कऽ बाजल, "जालसाज तँ एत्ते धरि सोचलो नै छल आ सभक सभ फँसि गेल। हम तँ लंकापुरसँ अनूपपुर थानाक एस.एच.ओ. केँ फोन कऽ देने रही जे बिछिया टोला आ लेनिन नगर जा कऽ नगेन्द्रनाथ आ बिसनाथकेँ थाना लेने आबू, नै तँ फरार भऽ गेल तँ मोसीबत भऽ जाएत।

एकर बादक विवरण बड संक्षिप्त अछि।

हर्षवर्धन सोनी आ मोहनदास दुनू ऐ जीतसँ बड खुश भेल। कस्तूरी सौंसे पुरबनरामे नचैत रहल। आन्हर पुतलीबाइ गठुल्लामे लजबिज्जीक बीच नुका कऽ राखल एकटा पोटरी फेर खोजि कऽ निकाललक, जइमे बिसुनभोग चाउर छल। मोहनदासक घरक सभटा कोन बिसुनभोग, खेसारी आ बकरीक दूधसँ बनैबला खीरक गमकसँ गमकि गेल। अलोपी मैनाक खोतामे अंडाक खोलकेँ अप्पन छोट-छोट लोलसँ भीतरसँ फोडि कऽ दूटा सुन्नर बच्चा बाहर निकलि आएल छल आ ओकर अबोध चिचियेनाइ कोठरी आ ओसारमे एकटा नव संगीत भरि देलक।

पुतलीबाइक गठियाक दर्द कम भऽ गेल आ पहिलुक बेर ओ आंगन आ परछीमे अपनेसँ बाढनि लगेलक। ओ मगन भऽ कऽ चलल जा रहल छल मुदा ओइ गीतमे कोनो प्रसन्न चिडैक कंठक संग एकटा कोनो उदास-सन स्वर सेहो छल:

"अहाँ बिन जग लागे सुन्न...
जग लागे सुन्न...
नै भावै हमरा
सोना-चानी महल अटारी...'

हर्षवर्धन सोनी मोहनदाससँ कहलक जे आब अगला केस ओरियंटल कोल माइंसमे तोरा तोहर नोकरी घुरा कऽ दियाबैक लेल दाखिल होएत। अदालत बिसनाथक सर्विस बुकसँ अहाँक सभटा सर्टिफिकेट, मार्कशीट आ टेस्टिमोनियल जब्त कऽ लेने अछि। ओ अहाँकेँ दऽ देल जाएत। मोहनदास हर्षवर्धनसँ लिपटि गेल। ओकर कमजोर-गरीब शरीर थरथरा रहल छलै। ओकर गर भारी छल आ आँखिसँ कृतज्ञता आ आह्लादक नोर लगातार बहि रहल छलै। जना अषाढ-साओनक तोर लागल हुअए।

बीरन बैगाक घरमे फेर रास रंग भेल। सितिया तोरीक तेल, रसून-प्याज आ गरम मस्सलामे रसदार सुअरक मौस रान्हलक। तीन मटकी महुक शराब उतारलक। ढोलक, मंजीराक संग ऐ बेर राम करन हारमोनिया सेहो लऽ कऽ आएल छल। गोपालदास, बीरन, बिहारी, परमोदी, मोहनदास सभ कियो पीलक। सितिया, रमोली, कस्तूरी, सावित्री सेहो ठर्रा पीब कऽ भेर भऽ गेल। ओ नाचि रहल छल आ गाबि रहल छल। मोहनदासकेँ पता नै कतए-कतएसँ एकक बाद एक गीत मोना पडि रहल छलै। सभ मस्त भऽ गेल छल।

कस्तूरीकेँ आइ दारू किछु बेसी चढि गेल छलै। ओ बेर-बेर मोहनदासक हाथ पकडि कऽ खींचऽ लागल। "हु तू तू ...तु...तु! हमरा संग कबड्डी खेलब? हु तू तू तू तु तु...!' ओ मोहनदासक देहमे गुदगुदी लगाबऽ लागल।

" जो भाग ऐ ठामसँ! जो दरोगा तिवारीक महिसवारीकेँ सम्हार...!' मोहनदास ओकरासँ चुहुल कऽ रहल छल। सभ हँसैत-हँसैत लोटपोट भऽ रहल छल।

जखन सावित्री एकाएक गरजि कऽ बाजल, "दौगऽ हौ...दौगऽ! तिवारी दरोगा धरियामे हगि रहल अछि!!' तँ हँसी आ ठहक्का एक्के बैग बम जना फूटल, जकर धमक्कासँ आध रातिमे पूरा पुरबनरा डोलि उठल।

मोहनदास आ बीरन बैगा उठि कऽ आंगनक बीचोबीच ठाढ भऽ गेल छल। जना ओतए कोनो अदालत चलि रहल हुअए। दुनू डायलॉग मारि रहल छल।

मोहनदास: ए...हे! अहाँ के छी? अहाँक नाम की? चलु कोरटक नाम बताउ!

बीरन बैगा: हमर नाम छी बीरन बैगा। आ हमर बापक नाम अछि डिंडवा बइगा! डिंडवा बइगा!!

मोहनदास: ए हे! आ हम के छी? हमर की नाम?

बीरन बैगा: (आगू बढि कऽ ओकर छातीपर आंगुर गड़ाबैत) हे साँढ भुक्खड! तोहर नाम छियौ मोहनदास! मोहनदास!! (गरजि कऽ) मोहनदास कबीरपंथी बंसोर!!!

मोहनदास: आ हमर बापक नाम की छी?

बीरन बैगा: तोहर बाप तँ मरि गेलौ! तोहर बापक नाम रहौ काबा दास!

मोहनदास: ए हे! हम मोहनदास एम्हर आ हमर बाप काबा दास ओम्हर ऊपर, सरगमे...तँ सार ओ ओम्हर अनूपपुरक जेलखानामे के बैसल अछि?

बीरन दास: (कूदि कऽ हाथ नजाबैत गरजैत अछि)...ओ देहजरा बिसनाथ! चारि सौ बीस...! ओकर बाप डबल चारि सौ बीस! ओकर मौगी चारि सौ बीस...! कोइला खदानबला लेनिन नगरक अफसर नेता सभ कियो चारि सौ बीस!

(परमोदी, सितिया, बिहारी, रामकरन, रमोली, सवित्री, गोपाल दास सभक मिलल ठहाकाक संग ढोलक, मंजीरा, हारमोनियमक संगीत)

ऐ पूरा कथाक उदास, हताश धूसर रंगक बीचमे चटख प्रसन्न रंगक ई छिट्टा अहाँकेँ कोनो क्षेपक सन लागि रहल होएत। कि नै? अहाँक सोच एकदम्मे सत अछि। गरीब आ अन्यायक शिकार लोकक जिनगीक खरखर यथार्थमे एहन सुन्नर रंग कहियो-काल खाली एहने किछु पल लेल अबैत अछि। सत्ता आ पूंजीसँ जुडल तागति एकाएक कोनो बाज सन झपट्टा मारि कऽ अलोपी मैनाक खोताकेँ उजाडि दैत अछि आ बाहर लखाह दैत छै चिडैक छोट-छोट गेल्हक पंख आ खूनक किछु दाग। ई दाग कोनो पार्टीक सरकारक मानव संसाधन मंत्रालयसँ लिखाएल इतिहासक पाठ–पुस्तकमे कहियो नै लखाह दैत अछि। किएकि इतिहासकारक पेशे अछि जे अपना कालक सत्ताक आँचरक दागकेँ नुकाएब।

ओ मास कतेक रास अजगुत घटनासँ भरल छल। भारतक राजधानी दिल्लीसँ एक हजार पचास किलोमीटर दूर जे किछु भऽ रहल छल, ओकर सूचना आ खबरि ऐ खिस्साक अलाबे अहाँकेँ आर कत्तौसँ नै भेटत। अनूपपुरमे मोहनदासक जीवन जइ हलातसँ गुजरि रहल छलै, ओकर संक्षिप्त विवरण ई अछि:

गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणीक बदली एकाएक राजनांदगांव भऽ गेल आ ओ अनूपपुर छोडि कऽ चलि गेल।

बिसनाथक वकील रास बिहारी राय, जे सत्ताधारी पार्टीक पैघ नामवर- मातबर नेता छल आ जकर पुतोहू नगर निगमक अध्यक्ष छल ओ एक्के पेशीमे बिसनाथ

आ ओकर बाप नगेंद्रनाथक जमानत करा देलक। रास बिहारी राय एखुनका राजनीतिक माँजल खिलाडी छल। विश्वनाथ माने मोहनदासकेँ जेलसँ रिहा करैत, पुलिससँ गठजोड कऽ ओ ई चलाकी केलक जे पुलिस रिकार्डमे मोहनदासे नाम दर्ज रहए देलक। किएकि जाधरि अदालत अंतिम फैसला नै सुनैबितिऐ ताधरि मोहनदास माने विश्वनाथ अपराधी नै कानूनी रूपमे खाली संदिग्ध भरि छल। माने पुलिसक दस्तावेज आ आधिकारिक कागजमे अनूपपुर जेलसँ जे दूटा कैदी जमानतपर रिहा कएल गेल छल ओ अप्पन पुरान नाम मोहनदास माने विश्वनाथ आ काबादास माने नगेंद्रनाथक नामसँ जेलसँ बाहर छल। ओइ दुनू टाक रिहाइबला दस्तावेजपर बादबला नाम एहन तरहे लेभरा कऽ लिखल गेल छल जे पढबामे नै अबै छल।

ओम्हर एकाएक एक दिन खबर भेटल जे राजनांदगांवमे न्यायिक दंडाधिकारी जी.एम. मुक्तिबोधकेँ ब्रेन हेमरेज भेल अछि आ हुनका अचेतावस्थामे बिलासपुरक अपोलो अस्पतालमे भरती कएल गेल अछि। अपोलोमे कांग्रेस पार्टीक महामंत्री श्रीकांत वर्मा आ मुक्तिबोधक अभिन्न मित्र नेमिचंद जैन हुनका लग छल। मुदा 72 घंटा धरि जीवन-मृत्युक बीच चलल कठिन संग्रामक बाद गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी अप्पन अंतिम साँस लेलक। ...ऐ अंतिम साँसमे ओ "हे राम!' कहलक।

ओकर मृत्युक सूचना भेटलापर हर्षवर्धन सोनीक संग कूही भऽ कानैबला पुरबनरा गामक मोहनदास कबीरपंथी बंसोर सेहो छल। ओकर जिनगीक आशाक असगर इजोत मिझा गेल।

अखुनका हाल ई अछि जे बिसनाथ अप्पन कनिया रेनुका संग मिलि कऽ कोलियरीक दलालीमे बड पाइ कमा लेने अछि। विजय तिवारीक संग ओकर बैसकी अखनो चलैत अछि। ओ अखन सोझाँ भऽ राजनीतिमे आबि गेल अछि आ जिला जनपदक अध्यक्ष पदक चुनाव लडि रहल अछि। ओकर जाति-बिरादरीक लोक तँ ओहिनो ऊँच जगहपर अछि। ओ सभ तरहेँ ओकर मदति

करैत अछि। ओ कहैत अछि, "असली मोहनदास के अछि आ नकली के, एकर फैसला तँ हम करब। ओ सार दू कौड़ीक कल्लर बंसोर हमर इज्जतिपर बट्टा लगौलक, लागल-लगाएल नोकरी छिनलक, आब हम अपन तागति ओकरा देखा देबै।

अखन पछिला हफ्ता जखन हम अप्पन गाम गेल रही तँ हर्षवर्धनक चेहरा उडल छलै। ओकर आँखि लाल छलै। ओ बाजल, "पछिला तीन रातिसँ हम सुतल नै छी। बुझबामे नै अबैत अछि जे की करी। बिसनाथकँ लऽ कऽ पुरबनराक लोग सत कहैत अछि। गज भरिक बिसधारी। असल करैत'।

ओ बडका साँस भरलक आ बाजल, "लेनिन नगरक इलाकामे बिसनाथ सभ दोसर-तेसर दिन कोनो-नै-कोनो क्रिमिनल अपराध करैत अछि। कखनो केकरो चेन खींच लैत अछि, कखनो ककरो संग मारिपीट करैत अछि। ओकर कनियाँ फाइनेंस आ चिटफंडक जइ धंधामे अछि, ओकर वसूलीमे ओ कर्जदारसँ मारिपीट करैत अछि आ घरमे पैसि कऽ समान उठा लैत अछि।...आब थानामे जे एफ.आइ.आर. दर्ज होइत अछि ओ तँ मोहनदासक नामसँ दर्ज होइत अछि किएकि ओतए बेसी लोक बिसनाथकँ अखन धरि मोहनदासक नामसँ जनैत छल। आ ओम्हर पुलिस पुरबनरा जा कऽ ऐ बेचारा असली मोहनदासकँ पकडि लैत अछि।

हर्षवर्धनक आँखिमे असहायताक नोर छल। बिसनाथ पुलिस इंस्पेक्टर विजय तिवारीसँ भेंट कऽ थानाक सिपाहीकँ खुआ-पिआ कऽ राखने अछि। ओ मोहनदासकँ पीट-पीट कऽ ओकर हाथ-पएर तोडि देने छल। ओ चलि-फिरि नै सकै छल। ओकर माइ पुतलीबाइ सेहो चारि दिन पहिने इनारमे खसि कऽ मरि गेल छल। कस्तूरी हाड-तोर मजूरी कऽ कोनो तरहेँ चूल्हाक आगि जरौने रखने छल।
हमर आँखि ऊपर उठल। आगुएसँ मोहनदास नंगड़ाइत बुलल आबि रहल छल। ओकर देहपर पुरनका बेरंग, चिप्पी लागल पेंट आ चेथडी भेल चौखुट्टा अंगा नै, एकटा धरियाटा बचल छल। ओकर माथक केस खसि गेल छल आ आँखिमे

गोल फ्रेमक सस्ता सन चश्मा लागल छल। ओ रकम-रकम डगमग करैत लाठीक संग कोनो बेमार बूढ जना बुलि रहल छल।

"कका, राम राम'! ओ हमरा देखि कऽ हाथ जोड़लक। ओकर चेहरापर पीड़ा आ हारबाक गहींर डडीर आबि गेलै। हम देखलहुँ ओ बड बूढ लागि रहल छल। अस्सी-पचासी सालक आसपास। लाठी टेक कऽ ओ ओतए धरतीपर बैस गेल। ओकर गरसँ कुहरैक संग भारी अवाज निकलल, मुदा ओ अवाज जेहन भाषामे छल ओ छल राजभाषा हिन्दी। ओ बाजल:

"हम अहाँ सभक हाथ जोड़ैत छी। हमरा कोनो तरहें बचा लिअ। हम कोनो अदालतमे चलि कऽ हलफनामा दै लेल तैयार छी जे हम मोहनदास नै छी। हमर बाप काबा दास नै अछि आ ओ मरल नै अछि, अखनो जिबैत अछि। बड मारने अछि हमरा पुलिस, बिसनाथक कहलापर। सभटा हड्डी तोडि देने अछि। सांसो टा लेबामे छाती दुखाइत अछि।'

हम देख रहल रही, मोहनदासक ठोढ कटल छल आ मुँह पोपटा गेल रहै। शाइद थानामे ओकर दाँत तोडि देल गेल छल। ओकर अवाज टूटि कऽ छितरा रहल रहै:

"जकरा बनबाक छै बनि जाए मोहनदास। हम नै छी मोहनदास। हम कहियो कत्तौसँ बी.ए. नै केलहुँ। कहियो टॉप नै केलहुँ। हम कहियो कोनो नोकरीक काबिल नै रही। खाली हमरा चैनसँ जिबैत रहल देल जाए। आब हिंसा नै करू। जे लुटबाक अछि लुटि लिअ। अप्पन-अप्पन घर भरू। मुदा हमरा तँ अप्पन मेहनतिपर जियए दिअ। काका, अहाँ सभ हमर संग दिअ'।

पता चलल मोहनदासक बारह बरखक बेटा देवदास दस दिनसँ घर नै घुरल अछि। कियो कहैत अछि जे बिसनाथ ओकरा गाएब करा देलक, कियो कहैत अछि जे ओ डरे मुंबई भागि गेल छै...

...आ कियो-कियो ईहो कहैत अछि जे ओकरा परसू बस्तरक जंगलमे देखल गेल अछि।

(ई ओइ कालक गप अछि, जखन भरूच लगक एकटा ऊँच डिम्हापर राघव नामक एकटा तीस बरखक धनुहार ठाढ भेल छल। ओ राति भरि जागि कऽ बाँस चीर-चीर कऽ कतेक रास तीर बनेने छल। ओ धनुषक प्रत्यंचा चढ़ा कऽ आकाश दिस तीर चलबैत छल, फेर दौगि कऽ डिम्हाक नीचाँ खसल तीरकेँ बिछि कऽ आनैत छल।

दोबारा, तिबारा...पता नै कते बेर ओ ऐ तरहे तीर अकाश दिस चलबैत रहल आ धरतीपर ओकरा बिछैत छल। मुदा कतेक रास तीर आब पानिमे डूमए लागल छल। ओकरा ताकब आ बीछब मुश्किल भेल जा रहल छल। किएकि पहाडक बीच, दूर-दूर धरि पसरल मैदानमे पानि भरल जा रहल छल, गाछ डूमि रहल छल। दिशा आ स्मृति सभ किछु डूमि रहल छल।

...तीस बरखक राघव मुदा ओइ डिम्हाक ऊपरसँ अकाश दिस ताधरि तीर चलबैत रहल आ दौग-दौग कऽ ओकरा बिछैत रहल, जाधरि ओ सेहो डूमि नै गेल...

राघव आब कत्तऽ अछि? जतए ओ छल, ओतए आब पानिये-पानि रहए। अजग अथाह जल।...ओतए बिजली पैदा होएत।...भरूचमे हिलसा माछ होइल छल। भारतक धारक सभसँ महान आ संसारक विलक्षण माँछ। हिलसा बहैत पानि टामे, धारक तेज धारे टामे जिबैत रहि सकैत अछि।
...हिलसा आब ठाढ बान्हक बेमार आ प्रदूषित पानिमे मरि गेल होएत।

...ई ओइ कालक गप अछि, जखन हम ई खिस्सा अहाँक लेल जइ भाषामे लिख रहल छी, ओइ भाषाक भीतर हम बगदादक अबु गरीब जेलमे इराकीक तरहे छी! वा 1943 क जर्मनीक कोनो गैस चेंबरमे यहूदी सन! वा कोनो बीमार प्रदूषित ठाढ पानिमे डूमल हिलसा माँछ जेहन!...वा अखनो संग्रामरत राघव धनुहार जेहेन!

...ई वएह काल अछि, जइमे मोहनदास अछि, अहाँ छिऐ, हम छी आ बिसनाथ अछि। आ आइक यथार्थ अछि।

...ओइ काल, जकरा एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक रूपमे सभ कियो जनैत अछि आ जखन हम सभ हिन्दीक कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंदक सवा सएम जयंती सत्ताधारीकेँ मनाबैत देखि रहल छी...
मुदा सत बताउ, मोहनदासक गाम पुरबनराक नाम की अहाँकेँ पोरबंदरक मोन नै पाडैत अछि?...)